मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)

अनुसन्धान - ८९

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य विषयक संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

संपादक : विजयशीलचन्द्रसूरि

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य
नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि - अमदावाद

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंगसुत्त, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'

अनुसन्धान

प्राकृतभाषा अने जैनसाहित्य-विषयक
सम्पादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

८९

सम्पादक :
विजयशीलचन्द्रसूरि

श्रीहेमचन्द्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अहमदाबाद
ऑगस्ट - २०२२

अनुसन्धान ८९

आद्य सम्पादक : **डॉ. हरिवल्लभ भायाणी**

सम्पादक : **विजयशीलचन्द्रसूरि**

सम्पर्क : C/o. **अतुल एच. कापडिया**
A-9, जागृति फ्लेट्स, पालडी
महावीर टावर पाछळ, अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135
E-mail : s.samrat2005@gmail.com

प्रकाशक : **कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अहमदाबाद**

प्राप्तिस्थान : (१) **आ. श्रीविजयनेमिसूरि जैन स्वाध्याय मन्दिर**
१२, भगतबाग, जैननगर, नवा शारदामन्दिर रोड,
आणंदजी कल्याणजी पेढीनी बाजुमां,
अमदावाद-३८०००७
M. 99798 52135 (अतुल एच. कापडिया)

(२) **सरस्वती पुस्तक भण्डार**
११२, हाथीखाना, रतनपोल,
अमदावाद-३८०००१
फोन : ०७९-२५३५६६९२

प्रति : २५०

मूल्य : ₹ 200-00

मुद्रक : **क्रिश्ना ग्राफिक्स, किरीट हरजीभाई पटेल**
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद-३८००१३
(मो. ९८९८६५९९०२)

निवेदन

संशोधननुं लक्ष्य अज्ञाननुं निवारण अने ज्ञाननुं संवर्धन छे.

कोई विषय परत्वे आपणे, योग्य-असन्दिग्ध अने यथार्थ जाणकारीना अभावे भ्रमणा, गेरसमज, संशय के अयोग्य निश्चयनो भोग बन्या/बनता होईए, त्यारे, ते विषय विषेना संशोधनथी आपणे यथार्थ जाणकारी तेमज निश्चय सुधी पहोंची शकीए छीए; ए रीते आपणा ते विषयना अज्ञाननुं निराकरण थाय छे अने आपणुं ज्ञान वधे छे - सुस्पष्ट थाय छे.

कोई ग्रन्थमां अयोग्य पाठ वंचातो होय, तेने स्वीकारीने-साचो मानीने अयोग्य अर्थघटन पण थतुं होय, मान्य बनतुं होय; अने ते रीते साव अजाणपणे ज आपणुं अज्ञान पोषातुं होय; त्यारे जो कोई संशोधक, ते ग्रन्थनी हस्तप्रतना आधारे, वधु सार्थक अने साचो पाठ शोधी दे, त्यारे तेना अर्थघटनथी जे प्रकाश प्राप्त थाय ते केटलोबधो समाधानकारी बने !

कोई दन्तकथा के किंवदन्ती, सत्यना के इतिहासना नामे सर्वमान्य बनी होय, अने तेना लीधे ते कथानां पात्रो तथा प्रसंगोने न्याय न मळतो होय के पछी अयोग्य अने चमत्कारी वातोने बळ मळतुं होय, त्यारे कोई धूळधोया समान इतिहासज्ञ, ते किंवदन्तीना गर्भमां संतायेल वास्तविक इतिहास-कथाने शोधी काढे, अने तेने सप्रमाण प्रस्तुत करे, तो पेली खोटी दन्तकथा तेमज तेना आधारे फेलातुं असत्य/अज्ञान, बधुं आपोआप गलत ठरी जाय अने सत्य अने ज्ञान अनावृत थाय. आम, संशोधननुं लक्ष्य सिद्ध थाय.

अेक मान्यता आपणे त्यां प्रचलित होय, अने एने ज साची समजीने बधी प्रवृत्ति, प्रणालिका, व्यवस्था चाली रही होय; एवामां अणधार्यो कोई शिलालेखी पुरावो के ताम्रपत्र के कोई पुरावशेष जडी आवे, अने तेना आधारे सिद्ध थती वस्तुस्थिति थकी पेली मान्यतानो छेद ऊडी जाय, ते जूठी ठरे, एवुं अनेकवार बने छे. आ छे संशोधननी सिद्धि. परम्परागत भ्रमणा दूर थाय, भूल सुधरे, अज्ञाननी स्थिति टळे अने यथार्थ ज्ञान विकसे; आ कार्य संशोधनना बळे थाय छे.

बधी वातोनो सार एटलो के संशोधनथी अज्ञान टळे छे, अने ज्ञान प्रगटे छे; असत्यनुं निवारण थाय, अने सत्य जळहळे छे. आम, संशोधननुं लक्ष्य सहेजे सिद्ध थई जाय छे.

प्रश्न ए थाय के ज्ञाननी वृद्धि शा माटे करवानी ? थोडुंक ज्ञान न वधे के अज्ञान न टळे तो शुं नुकसान ? ज्ञाननी वृद्धि करवाथी के थवाथी कोई विशिष्ट उपलब्धि थती होय तो बराबर; पण एवुं तो कशुं जणातुं नथी, जोवा मळतुं नथी ! एटले ज्ञाननुं संवर्धन अने ते लक्ष्यथी संशोधन - आवी धारणानो झाझो अर्थ नथी.

आनो उत्तर विचारतां पण्डित सुखलालजीनी एक वात याद आवे छे. तेमणे क्यांक एक निरीक्षण नोंध्युं छे : "बिनभारतीय अथवा पश्चिमात्य संस्कृतिनुं अथवा दर्शननुं आखरी लक्ष्य भौतिक सिद्धिओ अने शरीरनी सुखाकारी छे. ज्यारे भारतीय दर्शन तथा संस्कृतिनुं चरम लक्ष्य आत्मतत्त्वनी प्राप्ति द्वारा निर्वाणसुख मेळववुं ते छे."

स्मृतिना आधारे आ लखुं छुं; शब्दो तेना ते नथी. पण आ ऊपरथी समजाय के पश्चिममां विज्ञान के वैज्ञानिक शोधखोळनो गमे तेटलो विकास थाय, पण तेनुं छेवटनुं लक्ष्य तो भौतिक सिद्धि तथा उपलब्धिओ ज होवानुं. एथी तद्दन ऊलटुं, भारतीय दर्शनविद्या के ज्ञानधाराओनो आखरी मुकाम भौतिक सिद्धिओ तथा साधनोथी पण आगळ आत्मानी उपलब्धि, आत्मामां तेमज आत्माना यथार्थ ज्ञाननी प्राप्ति अने तेना द्वारा आत्माना शुद्ध-अविनश्वर-सुखमय स्वरूपनो साक्षात्कार हशे.

आ स्थिति पामवा माटेनुं मूळ, मुख्य तथा प्रबळ साधन ते ज्ञान छे. ज्ञान पण अज्ञानमिश्रित होय, गरबडियुं के अयथार्थ होय, तो तेना शुद्धीकरणनुं काम संशोधनविद्या द्वारा थाय.

अर्थात्, संशोधन वडे ग्रन्थशुद्धि-पाठशुद्धि थशे. तेथी यथार्थ अर्थो प्राप्त थशे. तेनी मददथी शुद्ध तत्त्वनी गवेषणा संभवशे. ते गवेषणा आपणने तत्त्वज्ञान द्वारा तत्त्व सुधी लई जशे. ते रीते आपणुं परम लक्ष्य सिद्ध थतां संशोधननी तथा संशोधित ज्ञाननी आवश्यकता आपोआप सिद्ध थई जशे.

— शी.

अनुक्रमणिका

विजयदानसूरि सज्झायादि संग्रह कृति-१थी १५ सं. पं. सुयशचन्द्रविजयगणि
गणि सुजसचन्द्रविजय १

श्री सोमप्रभाचार्यकृत यमकबद्ध
श्री चतुर्विंशति जिनस्तुति सावचूरि ॥ — मुनिशीलचन्द्रविजय
मुनिनिर्ग्रन्थचन्द्रविजय (डहेलावाला) १६

एक विज्ञप्तिपत्र — सं. विजयशीलचन्द्रसूरि २५

श्री सहजकीर्तिगणिकृत एकादिशतपर्यन्तशब्द साधनिका
अने श्री फलर्धि पार्श्वनाथ स्तवन — शीलचन्द्रविजय
निर्ग्रन्थचन्द्रविजय (डहेलावाला) ३४

साधुगुणस्वाध्याय — मुनि श्रुताङ्गचन्द्रविजय ४१

पं. दोलतरुचि-कृत १२० कल्याणक पूजा — पं. सुजसचन्द्रविजयगणि
गणि सुयशचन्द्रविजय ४९

श्री वहिरमान जिन स्तवन — सं. सा. जैनंधराश्री
सा. पुण्यधराश्री ८७

श्रीऋषभसागरकृत
श्रीविनयचट शेठनो रास — सं. सा. दीप्तिप्रज्ञाश्री ९२

राजस्थानी गूढा — सं. उपा. भुवनचन्द्र १३३

एक धातुप्रतिमा-लेख — मुनि शीलचन्द्रविजयगणि १४१
(डहेलावाळा)

विहंगावलोकन — उपा. भुवनचन्द्र १४३

SHRI PARVAT (SHRISHAIL) JAIN TIRTH
– C.A. Rushabh R. Bhandari १४६

विजयदानसूरि सज्झायादि संग्रह

कृति – १ थी १५

– सं. पं. सुयशचन्द्रविजयगणि
गणि सुजसचन्द्रविजय

पोताना चारित्रबळथी मोगल बादशाह अकबरने प्रतिबोधित करनार आ. श्रीविजयहीरसूरीश्वरना गुरु एटले विजयदानसूरिजी । तेओ पण हीरविजयसूरिजीनी जेम ज चारित्रसम्पन्न, पुण्यशाळी पुरुष हता । तेमना हाथे घणा अंजनशलाका-प्रतिष्ठा महोत्सवो, दीक्षा-पदप्रदानादि प्रसंगो थया हता । प्रस्तुत लेखमां आपणे तेओश्रीना गुणवैभवने उजागर करती प्राकृत, संस्कृत तथा मारुगुर्जर भाषानी अप्रगट १५ कृतिओनो क्रमशः परिचय जोईशुं । आम जोवा जईए तो आ सज्झायो नानी-नानी छे, परन्तु साहित्यनी दृष्टिए, काव्यत्वनी दृष्टिए तथा ऐतिहासिक तथ्योनी दृष्टिए ते विशेष महत्त्व धरावे छे ।

सज्झायादि संग्रहगत प्रथम आठ रचना कवि सकलचन्द्रजीना शिष्यनी रचना छे । काव्यना अन्तमां के प्रतलेखन पुष्पिकामां कविना नामनी नोंध न होवाथी कृतिकार कोण छे ते समजी शकातुं नथी । जो के कृतिना शब्दो परथी कविनो सूरिजी प्रत्येनो बहुमानभाव जोतां तेओ सूरिजीना शिष्य के सूरिजीना परिवारना मुनि होवानुं अनुमान करी शकाय छे ।

काव्यनी दृष्टिए जोईए तो आ सर्व रचनाओ प्राकृतभाषा-निबद्ध छे । कृतिकारे अहीं सरस मजानी पदावली द्वारा सूरिजीना गुणालेखननी साथे साथे यमक, अन्त्यानुप्रास, वर्णानुप्रास, उपमा वगेरे अलङ्कारोनो प्रयोग करी कृतिमां विशेष चमत्कृतिनो उमेरो कर्यो छे । तेमांय कृति-१ / पद्य-३, कृति-२ / पद्य-६, कृति-३ / पद्य-३ जेवां पद्यो कृतिकारनी उत्तम कवि तरीकेनी छाप ऊभी करे छे ।

त्यारपछीनी २ सज्झायो कवि उदयधर्मनी रचना छे । जेमांनी प्रथम प्राकृत भाषामां, तो बीजी संस्कृतभाषामां छे । तेमां अहीं प्राकृतभाषानिबद्ध कृतिमां कृतिकारे 'तवगण..., निद्दिट्ठ..., पउम... जेवी श्रेष्ठ उपमाओ द्वारा सूरिजीनी गुणस्तवना करी छे, तो संस्कृतभाषा निबद्ध कृतिमां तेमणे संवरवर..., रहकर... जेवा अद्भुत वर्णानुप्रास अलङ्कारनी पदश्रेणि द्वारा सूरिगुणगान कर्युं छे । विशेषमां संस्कृत सज्झायनुं समापन प्राकृत भाषाबद्ध पद्यद्वारा करी कविए पोतानी बुद्धिप्रतिभानुं पण दर्शन कराव्युं छे ।

उपरोक्त बन्ने कृतिना अन्तमां कृतिकारे पोताने लक्ष्मीरुचिना शिष्य गणाव्या छे । जो के लक्ष्मीरुचि कोना शिष्य छे ते अंगे काव्यमां कोई खुलासो नथी । कोबा-श्रीकैलाससागरसूरिजी ज्ञानभण्डारमांथी प्राप्त माहिती मुजब तेओ प्रायः हीरविजयसूरिनी परम्पराना साधु छे ।

सज्झायादि संग्रहनी ११मी कृति पण संस्कृतभाषामां गुंथाएली लघु रचना छे । तेना रचयिता कवि सकलचन्द्र होवानुं जणाय छे । जो के आ सकलचन्द्रजी पूर्वोक्त अज्ञात कविना गुरु हशे के केम ते कहेवुं मुश्केल छे । वैशिष्ट्यनी दृष्टिए विचारीए तो आ कृति एक चित्रालङ्कारगर्भित रचना छे । कृतिकारे अहीं गुप्त रीते कृतिना प्रथम पद्यना अक्षरोने पछीना १२ पद्योमां गुंथी चमत्कृति तो दर्शावी ज छे, साथे साथे कदाच जयविजय, मतिविजय जेवा मुनिभगवन्तोनां नामो गर्भित रीते सांकळी लीधां होवानुं पण अनुमान थाय छे । काव्यनी दृष्टिए कृति सहेज नबळी होवानुं तथा लेखन पण अशुद्ध होवानुं जणाय छे । कृति-चित्रालङ्कारमां न लखाई होत तो तेने चित्रकाव्य तरीके न ओळखी शकात ।

त्यारपछीनी ४ रचनाओ मारुगुर्जर भाषानी पद्य रचनाओ छे । जेमांनी प्रथम कृति विजयदानसूरिजीना समाधिस्तूपनी विगतो आलेखे छे । अहीं कृतिकारे प्रथम ७ पद्यो द्वारा गुरुविरहनी वेदनाने तथा ८मा पद्यमां सूरिजीना काळधर्म-दिवसनी वर्णनाने रजू करी ९मां पद्यमां गुरुस्तूपनी ऐतिहासिक विगतो दर्शावी छे । आ विगतोमां श्रीसंघे दानसूरिजीनो वडालीमां स्तूप बनाव्यानी तथा पाटणना संघोए आवी महोत्सव कर्यानी महत्त्वपूर्ण नोंध आलेखी छे । खास अहीं **''पाटण प्रमुख संघ तिहां आवी'' ए पद द्वारा कवि आडकतरी रीते वडली गाम पाटण नजीक होवानी विगत तरफ आपणुं ध्यान दोरता होय तेवुं जणाय छे ।** अहीं काव्यान्तमां कविए पोते उपाध्याय हर्षसागरजीना शिष्य होवानुं आलेखी कृतिनुं समापन कर्युं छे.

उपरोक्त कृति सिवायनी त्रण रचनाओमांनी प्रथम कृति कवि सत्यसागरजीनी तथा बीजी अने त्रीजी कृति कोई अज्ञात कविनी रचना छे । सत्यसागरजीनी विशेष परम्परा काव्यमां जोवा मळती नथी । अन्यत्र प्राप्त नोंध मुजब तेओ दानसूरिजीनी परम्परामां विद्यासागरजीना शिष्य हर्षसागरजीना शिष्य छे । ते के ते अंगे वधु तपासनी जरूर छे । काव्यनी दृष्टिए विचारीए तो आ त्रणेय काव्यो एकंदरे रसाळ शैलीमां लखायां छे । विशेषमां बीजी कृति विजयदानसूरिजी तथा आनन्दविमलसूरिजीना गुणस्तवनी संयुक्त रचना छे ।

प्रान्ते- प्रस्तुत सम्पादन माटे हस्तप्रतनी नकल आपवा बदल श्रीहेमचन्द्राचार्य

ज्ञानमन्दिर (पाटण)ना तथा श्रीकैलाससागरसूरिज्ञानमन्दिर (कोबा)ना व्यवस्थापकोनो खूब खूब आभार । साथे प्राकृत भाषानी सज्झायो जोई आपवा बदल पू. कल्याणकीर्तिसूरि म.सा.नी पण खरा हृदयथी अनुमोदना ।

* * *

(१) विजयदानसूरिसज्झाय

नमिऊण **नेमिनाहं**, अंगीकय-विमल-शीलसन्नाहं ।
सिरिविजयदाणसूरिं, थुणामि निज्जिअ-मयणसूरं ॥१॥
जस्स य(प)साएण सया, पावंति विमुक्क-सव्व-भवविसया ।
जा(जी)वा निव्वुइ-निलयं, विगयभयं रागदोससय(यं)(?)[१] ॥२॥
मुणिवर-नय-पयकमलो, विगयमलो कोमलो विमलकमलो ।
जो जयइ नायसन्नो, परमगुरू सूरिपयपन्नो ॥३॥
आगमगमवर-मुत्ता, सरस्सई जस्स सरस-गुणजुत्ता ।
विबुहाण हरिसजणणी, गंगुव्व जिआण मलहरणी ॥४॥
सिरि(र)कमलंमि मणुन्नो, हत्थो हंसायए सया धन्नो ।
सो जस्स कुसलपुट्ठी, किं पुण जत्थेइ सुहदिट्ठी ॥५॥
जस्स पयंड-पयावा भीआ रविचंदमंडला भावा ।
गयणंगणं विसालं, भमंति इव केसघणकालं ॥६॥
सुरअसुर-विसर-वंदिअ, भविअजणाणंद-नरवई-महिअ ।
तुह न नमंति तिकाले, ते पाविस्संति दुहजालं ॥७॥
ते धन्ना पुर-गामा, परमगुरू(रु)-पायं(य)वंदणुक्कासा(मा) ।
जत्थ सिरिपुज्जपाया, विहरंति सया गयकसाया ॥८॥
विबुह-**सकलचंदगुरू-सीसेण** थुओ मुणिंदगण-पवरू ।
सिरिविजयदाणसूरी, जयओ(उ) ससी जाव सुहसूरी ॥९॥

(२) विजयदानसूरि सज्झाय

पणमिअ **पास**जिणंदं, तिलोअ-वत्थुप्पयासण-दिणिंदं ।
थुणिमो मुणिगण-पवरं, सूरिवरं **विजयदाणगुरू**(रुं) ॥१॥

---

१ 'रागदोसलयं' इति संभाव्यते ।

वर-सुक्कज्झा(झा)ण-लीणो, उवसमरस-अंबुहीवसणमीणो ।
सुय-अमय-माणयाणो, परमगुरू पावपरिहीणो ॥२॥
सारंगो सारंगो, सारंगो सारसारसारंगो ।
गुणकाणण-सारंगो, भवजलही-पार-सारंगो ॥३॥
वर-कामधेणु एसो, एसो पुण कामकुंभ-विणिवेसो ।
गुरू(रु)चिंतामणि-पवरू, वंदि(छि)अदाणेण कप्पतरू ॥४॥
धन्नो सो मुणिराओ, म(ग)यमाओ मोहरायसंघाओ ।
तस्स पभावा सययं, लहंति, जीवा सुह(हं) अभयं ॥५॥
मुक्क-समग्गारंभो, निद्दंभो मयण-दाव-जलथंभो ।
उरु-उरु-जिअ-वररंभो, जयओ(उ) गुरू नाण-वीसंभो ॥६॥
सुविमाणं सुविमाणं, सुविमाणं माणमाणसुविमाणं ।
गुणनिज्जर-सुविमाणं, सूरिंदं वंद सुविमाणं ॥७॥
धन्ना ते जिअलोए, गुरुपायं जे नमंति गय-रोए ।
ते पुण धन्ना लोआ, निच्चं सेवंति गय-सोआ ॥८॥
सिरि**सकलचंद**विबुहाण, **सीसेण** य संथुओ पवर-झाण ।
सिरिविजयदाणसूरी, सुहंकरो होउ गुणसूरी ॥९॥

(३) विजयदानसूरि सज्झाय

सिरिसंतं वरसंतं, विलसं[तं] नमिअ-भविअ-कयसंतिं(तं?) ।
अभिनंदामि वसंतं, गुणगेहे मुणिवरं संतं ॥१॥
जिय-रागदोस-मल्ले(ल्लो), दूरीकय-पावसल्ल-निस्सल्लो ।
गोअमगणहरतुल्लो, नाणाइय-रयण-गयतुल्लो ॥२॥
लद्धिहि(दि)यनिव्वेओ, पराजिआसेसबुद्धमइवेओ ।
जाणिय-धम्मविवेओ, परमगुरू जिणसमय-वेउ(ओ) ॥३॥
विहवं विहवं विहवं, निज्झाणं जाणणाण-निज्झाणं ।
परमं परमं परमं, सक्कामं काम-सक्कामं ॥४॥
संवामं संवामं संवामं, वामवाम-संवामं ।
सद्दाणं सद्दाणं, सद्दाणं दाण-सद्दाणं ॥५॥
गुण-वण-चरणकुरंगं, समदमगम-सिंधुरामणमयंगं ।
दुज्जय-जय-जिअणंगं, संगय-संसार-समसंगं ॥६॥

जस्स समीवं भविया, सम्मत्त(त्तं) देसविरइअं भविआ(या) ।
चारित्तं कयपुन्ना, पुणोवि पावंति गुणधन्ना ॥७॥
जह सुरसहंमि इंदो, जह पुण तारयगणे सयलचंदो ।
जह नहयले दिणिंदो, तह **तवगच्छंमि** सुमुणिंदो ॥८॥
इअ **सकलचंद-बुहवर-विणेअ-परमाणुणा** थुउ(ओ) पवर ।
सूरिविजयदाणवरो, सया चिरं जयउ खेमकरो ॥९॥

(४) विजयदानसूरि सज्झाय

नमिअ जिणं जिअमोहं, सिरि**वीरं** दलिअ-दोससंदोहं ।
वण्णामि **विजयदाणं, सूरिंदं** लद्धविन्नाणं ॥१॥
गयरोगसोगभोगो, विमुक्क-संसार-सव्वसंभोगो ।
अंगीकय-वयजोगो, सूरिवरो जय-जिआणंगो(?) ॥२॥
नय-सुरअसुरं वीरं, अंतररिउ-नासणे महावीरं ।
कंदप्प-निहण-वीरं, पण(र)मगुरुं नमह नयवीरं ॥३॥
संसारो गुणसारो, संसारो दलिअ-दोसरिउ-सारो ।
संसारो अ असारो, संसारो हरउ मह सारो ॥४॥
जिणकहिआ-ऽऽगमबुद्धो, गंगनई-नीर-चित्त-सुविसुद्धो ।
बोहिअ-यंरि(पंडि)अ-मुद्धो, इंदिअवग्गो(ग्गे)सु अविलुद्धो ॥५॥
जो अ सया निस्संगी, य(अ)सेस-सिद्धंतसार-बहुरंगी ।
रक्खिय-समत्थ-अंगी, जस्स य वाणी सया चंगी ॥६॥
वारिअ-सयलकसायं, निद्धारिअ-असुह-दायग-विसायं ।
जो पणमेइ तिसायं, सो धन्नो दत्त-सुपसायं ॥७॥
ते धन्ना कयपुन्ना, पवित्तवन्ना य निम्मल-पइन्ना ।
जे सुगुरु-पायजुयलं, नमंति भावेण विगयमलं ॥८॥
कवि **सकलचंद-सुगुरू-विणेअअणु**संथुओ अ परमगुरू ।
सिरिविजयदाणसूरी, विहेउ सुक्खं महासूरी ॥९॥

(५) विजयदानसूरि सज्झाय

वंदित्ता नयदेवं, **जुगाइदेवं** तु भविअ-कयसेवं ।
सिरि**विजयदाण**सुगुरुं, थुणामि जण-काम-कप्पतरुं ॥१॥

सिवलच्छि-कंठहारं, जिणवर-गइआगमाण-आहारं ।
भत्तु-अदोसाहारं, पणमह सुगुरुं सयायारं ॥२॥
जस्स य हत्थपभावं, दट्ठूणं भयजुउ(ओ) बहुपयावं ।
कलिकाले कप्पदुमो, जोउ(ओ) मंदप्पहावरमो ॥३॥
कलिलभरा मा निवडिहि, तिभुवणभवणं ति चिंतिऊण विहि(ही?) ।
काउं ठिउ सुक्कंति, पायजुयं तुंभ(तुब्भ) जु[य]लं ति ॥४॥
वाणी समं विवायं, कुव्वंती सक्करा जिआ सायं ।
महुरतया किं भीया, गहिउमिण[मउण]मि(मे)व ठिआ ॥५॥
जस्स य मुहकमलसमं, राकातिहि-चंदमंडल(लं) परमं ।
नियकंतिभराभूअं, कलंकिअं कि(किं) कयासूअं ॥६॥
सम्मारं गयमार(रं), सम्मारं निहया दुवि जयसारं ।
सम्मारं व गमारं, समारं हरउ गय-अमारं ॥७॥
एसो पिआ य माया, एसो सु[गु]रू अ सु**तवगण**पाया ।
पाए पणमंतु जणा, [सिग्घं] परिवज्जिअ-अन्नगणा ॥८॥
सिरि**सकलचंदपंडिअ-सीसेण** तु(थु)ओ अ सूरि-पय(चं)डिअ ।
सिरिविजयदाणमुणिवर !, देहि सुहं मे गुरुप्पवर ॥९॥

(६) विजयदानसूरि सज्झाय

सिरि**गोअम**गणिंदं, पणमिअ मिच्छंधयारहर-चंदं ।
सूरिवरं विन्नाणं, कवयामि अहं सुहनिहाणं ॥१॥
जो सोहइ निम्मोहो, निद्धाडिअ-सव्व-सत्तुसंदोहो ।
पावट्ठाण-निरोहो, संसारिअ-वत्थु-निल्लोहो ॥२॥
भव-भव-भयभर-हारी, पाप-महापाप-ताप-संहारी ।
जो गुणिगण-गणधारी, ज[य] ज[य] विजया जउ(ओ)-हारी ॥३॥
सब्भालवालमालं, परिवज्जिअ-काल-माल-बलजालं ।
निद्दंभ-बंभ-लंतं(भं?), पणमह सुगुरुं गयारंभं ॥४॥
सम्माणं गयमाणं, सम्माणं विमल-देहपरिमाणं ।
सम्माणं वरमाणं, सम्माणं नमह बहुमाणं ॥५॥
जस्स गई वरहंसं, माण-सर-सुरं(र)संसार-अवयंसं ।
नहकंतीहि हसंती, जयउ गुरू सोह-बहुकंती ॥६॥

जो साहुमंडलपरि-अरिउद(द्द)लिअ-मोहतमपडलं ।
पणमिअ-सव्वाखंडल, मुणिनायग-नंद-समपडल ॥७॥
दिट्ठे तुह मुहकमले, सूरीसर-विगय-पाव-यं(पं)कमले ।
जे केइ पुव्ववरिआ, सूरिंदा मज्झ संभरिया ॥८॥
इअ **सकलचंदकोविअ-सीसेण** पभूअ-भत्तिणा तविअ ।
सूरि**विजयदाण**गुरू, परमाणंदं तु दिसउ गुरुं ॥९॥

(७) विजयदानसूरि सज्झाय

सिरि**सोहम्म**भिहाणं, गणाहिवं नमिअ-लद्धनिव्वाणं ।
भत्तिभर-जुत्त-चित्तो, थुणे गुरुं सोअ-संपत्तो ॥१॥
जो अ सया नीरागो, दुक्खतरूम्मूलणे तद(दा)मागो ।
निद्धूअर-वजा(ज्जं)गो, उवसमरस-हंस-सुतडागो ॥२॥
जेण परीसह-ऽनीअं, निज-भुअजुअ-वीरिएण निज्जणिअं ।
सो अ पयंड-पयरवो, जयउ गुरू मुक्कसरचावो ॥३॥
जेणट्ठ-कम्मकट्ठा, निद्दड्ढा(ड्ढा) झाण-पाव-[पव]णड्ढा ।
मुत्ति सुहस्स(सा)यसूरी, सा(स) द(दे)उ सुक्खं दुरिअ-चूरी ॥४॥
अइदुक्कर-तव-विहवो, मं(पं)चमहव्वय-भरुव्वहण-वसहो ।
जो पंचबाणमहणो, स लसइदुव्वाइ-मय-निहणो ॥५॥
कंतिभर-जिअ-दिणेसर, परमगुरू नंद नय-असुरविसर ।
दूरीकय-दुहवग्गो, इंदिअ-लोहेसु अविम(भ)ग्गो ॥६॥
संकंतं संकंतं, संकंतं कंतकंत संकंतं ।
निक्कामं निक्कामं, निक्कामं कामनिक्कामं ॥७॥
दंसिअ-सिवपुरदंडो, संसारसमुद्द-तारण-तरंडो ।
सिरिविजयदान(ण)सूरी, भविअ-जणाणंद-कयसूरी ॥८॥
इअ **सकलचंद-मेहावि-विणेअणुणा** थुओ विमलभावी ।
सिरिविजयदाणसुगुरू, सुक्खकरो होउ मुणिपवरू ॥९॥

(८) विजयदानसूरि सज्झाय

वंदिअ-कमलाकलियं, उज्जल-दल-कुंदकंति-गुणकलिअं ।
सूरि-भास-मुणिंदं, थुणामि सिरि **विजयदाण**पदं ॥१॥

जो जयइ सुरामो विहु, रामा संविज्जउ(ओ) वसेइ बहु ।
कंतो वि अकंततणू, बुहाण चित्तं करेइ तणु(णुं) ॥२॥
जो संग-भंग-मुक्को, जस्स य कोहंबुही सया सुक्को ।
पुन्ना जस्स पइन्ना, जेण य मायावली छिन्ना ॥३॥
वेरग्गवग्गजुत्तो, तिगुत्तिगुत्तो अ संजमाउत्तो ।
तं वंदह मुणिपवरं, नासिअ-मिच्छत्त-तमनिअरं ॥४॥
उवसमरस-संपत्तो, करुणारसपूर-पूरिअ-सचित्तो ।
परमगुरू गुणचंगो, सिवलच्छीसंग-बहुरंगो ॥५॥
जे धण-सुवण्ण-रयणा, मिच्छत्ततमावरिअमाणसायजणा ।
गुरु-चिंतामणि-रहिआ, ते दारिद्दावसंकहिया ॥६॥
संसारदुक्खभरिआ, जेहिं रागाइवेरिणो भरिआ ।
ते अ सिरिपुज्ज-पाया, जयंति लोए [गय]-कसाया ॥७॥
जस्स सइ मुहचंदो, भविअण-कुस(मु)आण-पूरिआणंदो ।
समयामय-निस्संदो, जयओ(उ) गुरू धम्मतरुकंदो ॥८॥
बुह-**सकलचंदसीसेण**, संथुओ भत्तिभार-मीसेण ।
सिरिविजयदान(ण)सूरी, देउ जिआणं सुहं सूरि(री) ॥९॥

(९) परमगुरूणां [विजयदानसूरीणां] स्वाध्यायः

पणमिअ गुरुपयजुयलं, लोआलोयप्पयास-नाणकरं ।
सिरि**विजयदाणसूरी** - सराण साहेमि सज्झायं ॥१॥
तवगणगयण-पयासे, विसुद्धसूरोदओ मयविमुक्को ।
चत्त-गिहिसंगरंगो, संजमसिरिभूसणे हारो ॥२॥
नाणाइगुणनिहाणो, समग्गनिग्गंथमंडलिपहाणो ।
किरिआसु सावहाणो, नंदउ निद्दिट्ठ-उवहाणो ॥३॥
पउममिव जस्स वयणं, विरायए वयवराण मज्झंमि ।
जयई जणमणमोहण-कंदो नंदउ चिरं सूरी ॥४॥
पत्तो दूसमदिट्ठे, इट्ठो पुन्नेण सुरदुमुव्व गए ।
पत्थिअ-अत्थ-विहाया, सूरी **सिरिविजयदाणगुरू** ॥५॥
आणंदविमलसूरी-सराण सू(सु)रुव्व सोहए पट्टे ।
भविअजण-कुमुअबोहं, कुणमाणो पयडिअपयत्थो ॥६॥

पंचसमिईहिं समिअं, गुत्तीहिं तीहिं गुत्तिअं सययं ।
निज्जिअ-सयल-कसायं, सेवेहं **विजयदाणगुरुं** ॥७॥
विणय-विवेय-गुणंबर-अंबर-रयणप्पहो पहणमयणो ।
पंचविहं आचारं, आयरमाणो मुणिवरिंदो ॥८॥
जे मुणि नर-नारिगणा, तुह पयसेवं कुणंति भावेणं ।
ते सिवलच्छीसज्जं, रज्जं अज्जंति अज्जावि ॥९॥
उग्गं तवं तवंतो, विहरंतो महिअले समग्गेवि ।
सच्चं जिणंदधम्मं, पयासमाणो चिरं जयउ ॥१०॥
लच्छीरुई-सीसेणं, मुणिवर-**सिरिउदयधम्म**-पयसेवं ।
सिरिविजयदाणसूरी, थुओ सया दिसउ नाणकरं ॥११॥

(१०) विजयदानसूरीश्वराणां स्वाध्यायः

परममहानन्दपददानं, नत्वा देवतकृतगुणगानम् ।
गुरुमुरुगुरुगुणमणिकूपारं, जयकरमीले यतिगणधारम् ॥१॥
संवरवरकरभरजितसूरं, संहनकृपाणदिताङ्गजसूरम् ।
परमतपादपकाननानागं, जयकरमीले परपरभागम् ॥२॥
मतिमकराकरवेलाचन्द्रं, विशदयशोभरभर्त्सितचन्द्रम् ।
रदकर(?)-हिमकरकरसंकाशं, जयकरमीले लोकविकाशम् ॥३॥
यतिततिसंहतिनमसितपादं, भविजनशिखिघनधृतआल्हादम् ।
भवदवतापनिवापाम्भोदं, जयकरमीले जनितामोदम् ॥४॥
चार्वाचाररसाशशबिन्दुं, सङ्गरशमदमजनशयविन्दुम् ।
वाचंयमकुलवनपारि(री)न्द्रं, जयकरमीले धीरगिरीन्द्रम् ॥५॥
योगक्षेमकरं गणधारं, ब्राह्मीबोधितजगतीवारम् ।
आनन्दविमलसूरि{पर}पदधारं, जयकरमीले तान्त्रिकतारम् ॥६॥
सदुदयधर्मविनिर्मितसेवं, मनसाऽऽराधितश्रीजिनदेवम् ।
पण्डित**लक्ष्मीरुचि**कृतगानं, जयकरमीले समयारामम् ॥७॥
इय जइजणताणं नाणनिहाणं संपयपयकरगुणठाणं,
जयविजयविहाणं मइबहुमाणं सुहयरसाहिअजिणझाणं ।
सेवह सूरिंदं **तवगण**चंदं भविअणजणमण-णंदकरं,
पण्णा-जिअसूरिं सेविअसूरिं **विजयदाणसूरि**-जुगपवरं ॥८॥

(११) विजयदानसूरि सज्झाय (चित्रालङ्कारमय)

आ	दिजिनादिककेवलिनेऽलं,	श्री	दानन्दविमलगुरुवे(रमे)ऽरम् ।
आ	राधितसम(शमा)म्बुधिमीनं,	श्री	जिनशासनतिलकमुनीनम् ।
दि	नकरवदसु(शु)भतमोहरन्तं,	दा	रुणदरहरतपसि चरन्तम् ।
जि	तगाम्भीर्यगुणादि-नदीनं,	नं	दिकरं शिवललनालीनम् ।
ना	रदवरसी(शी)लाम्बरहंसं,	द	यायुधिष्ठिरसमनदहंसम् ।
दि	श(शि) विश्रि(सृ)त झ(य)शोध -नसारं,	वि	धिकाननपञ्चाननचारम् ।
क	रहरिबलमर्दित-भवकंसं,	म	तिवरमुनिमौलेरवतंसम् ।
के	सरिसौ(शौ)र्यविदारितमारं,	ल	क्षणशास्त्रविचक्षणसारम् ।
व	सुधा पूजि(ज्य)पद सु(शु)भदं ते (?),	गु	णकाननभूधरं लभन्ते ।
लि	पिमुखविज्ञानि(ने) द्रुमकक्षं(?),	र	तिपतिविभवविदारणदक्षम् ।
ने	त्रानन्दकराननचन्द्रं,	मे	धाम्बुदपारगमवितन्द्रम् ।
ल	*म्पटकपटाचारकुठारं,*	रं	*जितविबुधविजयकासारम् ।*

इति बहुमानं सुमतिनिदानं सुगतिमहोदयपथयानं,
कृतसुरगुणगानं सुगुणनिधानं **सकलचन्द्र**कृतप्रणिधानम् ।
गगन(ने) रविचन्द्रं विचरति भद्रं यावदहो ! वसुधापीठे,
तावदमलसी(शी)लं सुविहितलीलं भजत **विजयदानं** सुगुरुम् ॥१३॥

सं	बोधितभुवनाय सदा वा,	वि	जयदानसूरेय(रये) नमो मि(मे) ॥१॥
सं	यमशोभित-सुजगप्रधानं,	वि	जय विजयदानं बहुमानम् ॥२॥
बो	धिकमल-नवतरु(र)णिसमानं,	ज	पति विजयदानं बहुमानम् ॥३॥
धि	धीःकृतमदमपि चर शी(शि)वयानं,	य	यतपि विजयदानं बहुमानम् (?) ॥४॥
त	नि(अतनु)भवार्णववहनसमानं,	दा	न विजयदानं बहुमानम् ॥५॥
भु	जबलनिर्जित-मदरिपुमानं,	न	मति विजयदानं बहुमानम् ॥६॥
व	दति सुधर्मगुणौघनिदानं,	सू	रिविजयदानं बहुमानम् ॥७॥
ना	मपवित्रितभवनवितानं,	र	क्ष(?) विजयदानं बहुमानम्(?) ॥८॥
जि (य?)	तजारन्तिवयन्तिसमानं(?),	जे	(ये) हि विजयदानं बहुमानम् ॥९॥
स	र्वसु(शु)भं गजजगदविधानं(?),	न	मति विजयदानं बहुमानम् ॥१०॥
दा	रितमोहभटार्यभिमानं,	मो	द(?) विजयदानं बहुमानम् ॥११॥
वा	विं(चं)यमजननमसन्तानं,	मे	रु(?) विजयदानं बहुमानम् ॥१२॥

(१२) विजयदानसूरिथूभगीतं

॥६०॥ राग-असाउरी ॥
चरणकमल पेखंतां गुरुजी, तुम्ह गुण हईडउं भराइं रे,
माहारुं हईडउं आवइ भराइं रे ।
केणी परि मन राखुं गुरुजी, तुम्ह विण खिणुं न शु(सु)हाइं रे ॥१॥
गुरुचरणे मेरु मन मातु, अब काहा करइ गुतापा(?) रे ।
गुरु समान गुरु थापना साची, म करुं कुमतितु(नुं?) व्याप रे (आंकणी) ॥२॥
युगप्रधान तुं जंगमतीरथ, तुझ समान नही कोइ रे ।
तुम्ह दरिसन सवि पातग जातां, इम कांइ गयु तुं विछोहि रे ॥३॥ गुरु...
कांइ विधाता तुंहि विरासी, एहि किस्युं तइं कीध रे ।
चउविह संघ आधार गुरु हुंतु, देइ रतन कां लीध रे ॥४॥ गुरु...
साबहि साधुरु आलंबन देतुं, गुरुनइ गमतु सुद्ध आचार रे ।
दुष्ट काल दुसमतइं पापी, इम कीधुं कांइ अविचार रे ॥५॥ गुरु...
वासुदेव बलदेव तणी परि, अम मनि हुंतु नेह रे ।
गौतम वीर तणी परि गुरुजी, कांइं दाखिउ तेइ छेह रे ॥६॥ गुरु...
विजयदानगुरु कहिनइं कहीइं, जे जाणइ पर-पीड रे ।
लेतां ना[म] अम **आणंद विमल,** ल(भ?)वदुख भाजइ ली(भी?)ड रे ॥७॥ गुरु...
घणा दिवस संयमपद पाली, गुरु सारिउ आतम-काम रे ।
वैशाख शुदि बारसि अनशनसिउं, गुरु पामिउ उत्तम ठाम रे ॥८॥ गुरु...
वडलीइ गुरु सोभा दीधी, तिहां कीधुं मूं(थू)भ विशाल [रे],
संघे थूभ कीधुं विशाल रे ।
पाटण प्रमुख संघ तिहां आवी, करेइ उच्छव मंगलमाल रे ॥९॥ गुरु...
श्रीहीरविजयसूरि थूभ थापन कीधी, श्रीसंघनइं हितकार रे ।
श्रीहर्षसागर उवझाय सीस वदइ, गुरु नामि जय-जयकार रे ॥१०॥ गुरु...

(१३) गुरु[विजयदानसूरि]स्वाध्याय

सेवउ सेवउ गछपति-राजीउ, **श्रीविजयदानसूरिंद** रे ।
सकल जन तिमिरहर ऊगीउ, अभिनवउ जिस्यउ दिणंद रे ॥१॥
सेवउ...(आंकणी)

तपगछ-विमल-गयणंगणे, विवध मुनि-तारक वृंद रे ।
सोम-किरण गुरु सोभवइ, दरिसण परम-आणंद रे ॥२॥ सेवउ...
परम-गुणरयण-रयणायरो, उपसम-जल-भरपूर रे ।
कुमत-दस विवध परि रेलतु, पाप-मल धावन सूर रे ॥३॥ सेवउ...
बालमति गछि गछि गुरु कहइं, रयण-गुण मरम अयांण रे ।
सूरिगुण इणि समइ तुं लहिउ, जिनवर-आण सुजांणि(ण) रे ॥४॥ सेवउ...
सुकृत-संयोग संगिं करी, पामीउ सदगुरु-राय रे ।
चउसठि इंद गुण वरणवइ, कह[इ?] सीमंधिर ताय रे ॥५॥ सेवउ...
सरद-ससी विमल चंदन जिस्यउ, गछपति ताहरो संग रे ।
देखतां नृपतनइं पामीइं, मूरत हरख अभंग रे ॥६॥ सेवउ...
देस पुर नयर महिमा घणो, जिहां जिहां करइय वी(वि)हार रे ।
इति दुख डंबर दुरिभिख टलइ, घरि घरि मंगल चार रे ॥७॥ सेवउ...
नार नर वरणवुं ते भलां, वंदना करइय त्री(त्रि)काल रे ।
वचन-सू(सु)धारस जे पीइ, प्रतिदिन अतिहिं रसाल रे ॥८॥ सेवउ...
सुहम गोयम गुरु मइं सुण्या, जिनवर-वचन वखाण रे ।
सूरिगुण तास सम भेटीउ, **श्रीविजयदान** गुरु भाण रे ॥९॥ सेवउ...
एक अभिमान-वस वरतता, चरणगुण-हीन-सरूप रे ।
सूरिपद गुण विना किम भजइ, नयण विना जिम नहीं रूप रे ॥१०॥ सेवउ...
नव निधि चऊद रयणा वली, दिन दिन चक(क्क)वइ रीध रे ।
देवतरु कामघटि(ट) घरि वसइ, तुं ही ज गुरु जेहनइं बुध(द्ध?)रे ॥११॥ सेवउ...
एक ज पू(पु)न्य-तरुअर फल्यो, जे लहिउं ताहरुं नाम रे ।
पंचमइ कालि जग तारवा, तुझ अवतार सू(सु)खधाम रे ॥१२॥ सेवउ...
सत्यसागर गणि विनवइ, तुं तपे कोड वरिस रे ।
श्रीविजयदान गुरु गछधणी, सकल जन हिअय आसी(सि)स रे ॥१३॥ सेवउ...

(१४) आनंदविमलसूरि-विजयदानसूरि स्वाध्याय

समरी **संति** जिणेसर सामि सोलमो रे, रिदय धरी आणंद वंदउ रे ।
वंदउ रे, जिणशासनि रवि-चंदला रे ॥१॥

श्रीआणंदविमलसूरि विजयदान गुरु सुंदरू रे, साचा संजमवंत सोहे रे ।
सोहे रे, दोइ गणधर मुनिपुंगवा रे ॥२॥
सकल जंतु जगजीवन-दायक संचरइ रे, गाम नगर पुर देसि(स)-देसे [रे] ।
देसे रे, भवियण सि(स?)वि पंथि मल्या रे ॥३॥
लहिर दीइं जस उपसम-वर-महीसागरू रे, तस गुणरयण-सुरासि(शि) पामइरे ।
पामइ रे, भवियण वर व्यापारीया रे ॥४॥
अभिनव उग ब्रह्मचारी मुनि पावनु रे, मूंकी प्रमाद पंथ तारइ रे ।
तारइ रे, पुरहुणनी परि जंतुनइ रे ॥५॥
मुनि-मूरति वयरागी जोता भावशुं(सुं) रे, हीयडउं करइ ही सोर मोरूं रे ।
मोरूं रे, धेनुतणु जिम केरडउ रे ॥६॥
मोह-निकंदन वाणी गुरुनी पीजिइ रे, जिम भव-त्रिषा ओह्लासि जाइ रे ।
जाइ रे, कुमति-ताप जिम नीसरी रे ॥७॥
यसोभद्र संभूतिविजय गुरु सांभर्या रे, तुह्म दरसिण मुझ आज लोचन रे ।
लोचन रे भरिआं अमी कचोलडां रे ॥८॥
इय सकल मुनिवरतणा गणधर सयल-साधु-सिरोमणी,
आणंदविमलसूरि(रिं)[द] निरमल **विजयदान** थुइ भणी ।
तस पाय वंदन दूरिअ खंडन कीजइ मननी रूली,
तस नाम जपीइ मोह खपीइ पामीइ वर सिवपुरी ॥९॥

(१५) विजयदानसूरि स्वाध्याय

सकल-सुरासुर-वंदित-पाय, गुणमणिभूषण-मंडित-काय ।
विमल-कला-गोपी-गोविंद, जय **श्रीविजयदानसूरिंद** ॥१॥
श्रीनंदन जिम शोभित रूप, श्री**तपगण**नायक नत-भूप ।
विद्याभर-जित-सूर-सूरिंद, जय... ॥२॥
हीनाचार-निवारण-वीर, जगतीतल-मुनिजन-कोटीर ।
रत्नत्रयधारक सुखकंद, जय... ॥३॥
यशभर-भावित-लोक-अशेष, विनयादिक गुण करी विशेष ।
दानव मानव नयनानंद, जय... ॥४॥
जन-मनवंछितदायक धीर, नव-चामीकर-देह गभीर ।

यतनिइं पालइ मुनिवरविंद, जय... ॥५॥
सूधां पंच महाव्रत धरइ, सूत्रविचार निरंतर करइ ।
रिपुजन-दूरित(?) परमानंद, जय... ॥६॥
रिद्धि समृद्धि लहइ जस नामि, भविजन पामइ अविचल ठाम ।
मद-विसहर-वशकरण-नरिंद, जय... ॥७॥
तुं सुरतरु चिंतामणि समउ, नित ऊठि भवियां तुम नमउ ।
नर नारी नु(न?)त पय-अरविंद, जय... ॥८॥
इम थुण्यु **श्रीतपगच्छ**नायक सुक्खदायक सुंदरो,
श्रीवर्धमान-जिनेश-शासन-महाभार-धुरंधरो ।
प्रतिपउ दिवायर जाव गयणंगणि सकल गुण-पूरिउ(पूरो)
श्रीविजयदानसूरिंद गिरुउ सेवकजन सुहंकरो ॥९॥

—x—

श्री सोमप्रभाचार्यकृत यमकबद्ध
श्री चतुर्विंशति जिनस्तुति सावचूरि ।।

— मुनिशीलचन्द्रविजय
मुनिनिर्ग्रन्थचन्द्रविजय
(डहेलावाला)

शास्त्रोमां वीतरागप्रभुनी गुणवर्णनाना अनेक प्रकारो जोवा मळे छे : स्तोत्र, स्तवन, स्तुति वगेरे. तेमां अहीं स्तुतिनी वात करवी छे. आ स्तुतिओ चैत्यवन्दनादिमां बोलाय छे, तेने थोय पण कहेवाय छे. आ थोयो मुख्यत्वे चार गाथानी होय छे. प्रथम गाथामां जे भगवाननी थोय होय तेमनुं वर्णन, द्वितीयगाथामां सर्वजिननी स्तुति, तृतीय गाथामां श्रुतज्ञाननी अने अन्तिम गाथामां शासनदेवतानी स्तुति करवामां आवे छे. आवा प्रकारनी थोयो संस्कृतभाषामां ऐन्द्रचतुर्विंशतिका, शोभनस्तुति वगेरे प्रख्यात छे.

अहीं जेनी वात करवी छे ए स्तुतिचतुर्विंशतिका पण शोभनस्तुति वगेरे जेवी ज छे, पण विशेषता ए छे के अहिंया ४ थोयोना जोडामां चोवीस तीर्थङ्करोनी प्रथम चोवीस अलग अलग स्तुतिओ छे, पण बाकीनी त्रण स्तुतिओ एक समान छे.

आम तो बे वर्ष पूर्वे आ स्तुतिनो परिचय लखीने 'अनुसन्धान' माटे मोकली आपेल (सामानमां आठ-दस वर्षथी एमनेम पडी रहेल) त्यारे आ. श्री शीलचन्द्रसूरिजी महाराजे जणाव्युं के आ यमकबद्ध स्तुतिओना पदच्छेद करीने मोकलावो. त्यारपछी विचारतां लाग्युं के टीका वगर तो आ यमकबद्ध स्तुतिना पदच्छेद करवा मुश्केल छे. एटले पछी टीकानी तपास करतां आ स्तुतिनी अवचूरि संप्राप्त थई. एना आधारे आ सम्पादन शक्य बन्युं छे.

आ कृतिनुं लिप्यन्तर साध्वी श्रीतत्त्वार्थमालाश्रीजीए करेल छे. तेओने शतशः धन्यवाद.

आ मूल स्तुतिओ प्रकाशित छे, अने एनी अवचूरि ज अप्रगट छे. अहीं मूल स्तुतिओ पण शुद्धि तथा पाठान्तर साथे पुनः प्रकाशित थाय छे.

बधी ज स्तुतिओ यमकबद्ध छे. यमक अलङ्कारनां 'सन्दष्ट' नामना भेद नो कर्ताए अहीं प्रयोग कर्यो छे. आ सन्दष्ट यमक अलङ्कारमां द्वितीयपादनी आवृत्ति चतुर्थपादमां थती होय छे. समान भासता शब्द अने वाक्यनो पदच्छेद करतां शब्द

अने अर्थ बन्ने बदलाई जाय छे, ए आ अलङ्कारनी विशेषता छे. प्रत्येक श्लोकनी रचना उपजाति छन्दमां थई छे.

आ कृतिना कर्ता विषे : तपागच्छपट्टावली अनुसार, भ. महावीरनी ४७मी पाटे थयेला आ. सोमप्रभाचार्य भगवंतनी आ रचना छे (४३ मी पाटे पण आ. सोमप्रभसूरि ज छे पण तेमनी आ रचना नथी). तेओनो जन्म वि.सं. १३१०मां, दीक्षा वि.सं. १३२१मां, आचार्यपद वि.सं. १३३२मां अने स्वर्गवास वि.सं. १३७३मां. सर्व आयु ६३ वर्षनुं छे. आ महापुरुषनां जीवन विषे अनेक अवनवी वातो तपागच्छ पट्टावली तथा जैन परम्परानो इतिहास (भा. ३)मां उपलब्ध छे. अवचूरिना कर्ता कोण छे ते जाणी शकायुं नथी. स्वोपज्ञ छे के पछी अन्य कर्तानी छे ए नक्की करवानुं बाकी रहे छे.

आ कृतिनी हस्तप्रतो :

आ स्तुतिचतुर्विंशतिका सावचूरिनी सम्पूर्ण हस्तप्रत लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर, अमदावाद तरफथी मली; जेनो नं. 4573 छे जेने L-1नी संज्ञा आपी छे. एना आठ पत्र छे. प्रत पंचपाठी छे. अक्षरो सुन्दर-सुवाच्य छे. आ हस्तप्रतमां बीजी पण स्तुतिचतुर्विंशतिकाओ अने स्तोत्र, स्तुति, स्तवनादि छे. एमां हजु पण एक स्तुतिचतुर्विंशतिकासावचूरि सोमप्रभाचार्यकृत छे जे भविष्यमां सम्पादन करवा भावना छे. बीजी महावीर जैन आराधना केन्द्र कोबानी चार हस्तप्रतो उपयोगमां लीधी छे. तेने K-1 नं. 37829, K-2 नं. 39930, K-3 नं. 34362 अने K-4 नं. 50803 संज्ञा आपी छे. छठ्ठी हस्तप्रत श्रीनीतिविजयजी शास्त्रसंग्रह, अमरजैनशाला, खम्भातना ज्ञा.भ.नी छे जेने N-1 संज्ञा आपी छे तेनो नं. 1729 छे ।

आम छ हस्तप्रतोमांथी पाठान्तरो नोंधी आ सम्पादन थयु छे ते माटे ते ते संस्थाना संचालकोने हस्तप्रतो पाठववा बदल अन्तरथी धन्यवाद पाठवीए छीए।

स्तुतितरङ्गिणी स्तुतयः सोमप्रभाचार्यकृताः

जनेन येन क्रियते गभीरनाभे यशोभारहिते नतेन ।
जिनेन्द्र भक्तिस्त्वयि नैव भाव्यं नाभेय ! शोभारहितेन तेन ॥१॥

निम्ना नाभिर्देहमध्यं यस्य । यशसां भा-दीप्तिस्तयाऽरहिते-संयुक्ते ॥१॥

मुषाण दुःखं दलिताऽन्तरारे ! ऽमरागधीराऽजित ! मेऽघजातम् ।
स्मराऽग्निशान्तौ तव यस्य वाक्यमऽराग ! धीराजित ! मेघजातम् ॥२॥

दारिता आन्तराः कर्माख्या अरयो येन । मेरुरिव निष्प्रकम्पः । पापसमूहम् । मेघसमूह इवास्ति कस्याम् ? स्मराग्निशान्तौ । रागरहित । बुद्धिराजित ॥२॥

नीतः सुखेनैव जिन ! स्मरोऽयं प्रभाविनाशं भवता रणेन ।
भवोदधेर्भव्यजनश्च[1] पारं प्रभाविना शम्भव ! तारणेन ॥३॥

प्रभया विनाशः प्रभाविनाशस्तम् । संयमेन । चः समुच्चये । प्रभावोऽस्यास्तीति प्रभावी तेन प्रभाविना । तारणेन संसाराब्धेः ॥३॥

श्रिताङ्ग नन्द्या अभिनन्दन त्वं, निष्कोपमानप्रभ ! वानरेण ।
यन्नेमुषा मुक्तिवधूरऽवापे, निष्कोपमानप्रभवा नरेण ॥४॥

स्वर्णोपमानकान्ते । यन्नेमुषा यं नतेन । अवापे - प्राप्ता । निर्गतौ कोपमानौ यस्मात् संयमात् तन्निष्कोपमानं तस्मात् प्रभव - उत्पत्तिर्यस्याः सा मूक्तिवधूः ॥४॥

प्रयान्ति निर्वाणमऽनर्थमुक्त-मऽनाशमऽत्यायतमानमन्तः[2] ।
भक्त्या नराः श्रीसुमतिं जिनेश-मनाशमत्या यतमानमऽन्तः ॥५॥

जन्मादिक्लेशमुक्तम् । अविनश्वरम् । अतिविस्तीर्णम् ।

न विद्यते स्वर्गादिषु आशा - वाञ्छा यस्याः साऽनाशा । अनाशा मतिर्यस्यां भक्तौ साऽनाशमतिस्तया अन्तर्मध्ये आनमन्तः । यतमानं मोक्षं प्रति ॥५॥

---

१. जनस्य K1, K3 । २. मत्याजित K3 ।

जिनेन्द्र ! नेतुं [३]वनिता यतस्त्वा मऽनुत्तमारा वश-मीशते न ।
सेव्योऽसि पद्मप्रभ ! मुक्तिभाजा मऽनुत्तमाराव ! शमीश ! तेन ॥६॥

यतः कारणात् अनुत्तमाराः कामोत्कटा वनिता-नार्यः त्वां वशं - आत्मायत्तं नेतुं न ईशते - न प्रभविप्सवः । न विद्यते उत्तमः - प्रधानो यस्मादसावनुत्तम आरावो - ध्वनिर्यस्य । तस्यामन्त्रणम् । शमिनां योगिनां ईश । तेन कारणेन ॥६॥

चक्रे नमो येन[४] कृताऽखिलाङ्गिमहाय ते सन्नतमस् ! तकेन ।
विलङ्घ्यते भीमभवः सुपार्श्व ! महायते ! सन्नतमस्तकेन ॥७॥

विहितसमस्ताङ्गिवर्योत्सवाय । ते तुभ्यम् । षड्लृं (९६६) विशरण-गत्यवसादनेषु । सीदति स्म सन्नं सन्नं गतं तमः पापं यस्य तस्य सन्नतमस् । तकेन - तेन । जगदेकमुने । अतिनम्रशिरसा ॥७॥

जिनेन्द्र ! चन्द्रप्रभ ! सान्द्रकर्म-विलोपकं दर्पमलो भवन्तम् ।
न जातु शिश्राय समग्रदोषाऽऽविलोऽपकन्दर्पमऽलोभवन्तम् ॥८॥

न कदाचिदाश्रितवान् । दर्प एवाभिमान एव जीवस्वरूप-कलुषीकरणान्मलो दर्पमलः । आविलो - व्याप्तः ।

तव स्तवं यो विधिना विधत्ते सुधीरऽवश्यं सुविधे ! हितस्य ।
मोहेभकण्ठीरवमुक्तिसौख्यं सुधीर-वश्यं सुविधेहि तस्य ॥९॥

विवेकितया । हितस्य आप्तस्य । वश्यं तदायत्तम् । सुविधेहि - अविलम्बितं कुरु ॥९॥

श्री-शीतलेश ! क्रियतां सुखं मे बलक्षमालाभवता नयेन ! ।
यशःश्रिया सौमनसी न जिग्ये वलक्षमाला भवता न येन ॥१०॥

पराक्रमक्षान्तिलाभयुक्तेन । त्वया मम सुखं विधीयताम् । नयस्वामिन् । सुमनसां - पुष्प(ष्पा)णामियं सौमनसी वलक्षमाला = श्वेतस्रक् येन भवता यशःश्रिया किं न न जिग्ये । अपितु जिग्ये ॥१०॥

---

३. विनिता L.1, N1 । ४. जिन N1 ।

श्रेयांस-मानौमि विनाशयन्तं नीराग-मोहं तमुदारमायाम् ।
रेमे न यः कोपदवानलैकनीरा-गमो हन्त ! मुदा रमायाम् ॥११॥

तं श्रेयांसं मोहं स्फीतशाठ्यं विनाशयन्तम् । नमस्करोमि । मुदा हर्षेण न रेमे न क्रीडयामास । रमायां = राज्यलक्ष्म्याम् । न रेमे इति भणन् इदं ज्ञापयति – यदुत राज्यश्रिय उपभोगेपि विरक्त एव ज(भ)गवान् । यदाहुः श्री हेमाचार्याः ॥

यदामरनरेन्द्रश्रीस्त्वया नाथोपभुज्यते ।
यत्र तत्र रतिर्नाम विरक्तत्वं तदापि ते ॥ [वीतरागस्तवे-]

ननु आङ् पूर्वान्नौते "र्नु- प्रच्छः" (३/३/६४) इति आत्मनेपदं प्राप्नोति कथमानौमि इति ? युक्तमेतत्, परमुत्कण्ठापूर्वके संशब्दने नौतेरयं विधिर्न हि सर्वत्रेति शब्दशास्त्रविदो विदुः । कोप एव दवानलो वनवह्निस्तस्मिन्नीरमागमयति-आनयतीति नीरागमो-मेघः ॥११॥

यत्रोषिता हन्तुमऽघं तपःश्रीः सहा यशोभाजि नवा सुपूज्य! ।
त्वमीश ! दिश्या मम मुक्तिमार्गसहाय शोभा(२/३) जिन-वासुपूज्य! ॥१२॥

यत्र त्वयि उषिता - निवासमागता । त्वयि किं भूते ? यशोभाजि - कीर्तियुक्ते । तपोलक्ष्मीः । सहा-समर्था । नवा प्रत्यया । सुष्ठु अतिशयेन पूजा । दिश्याः प्रयच्छ । शोभाः ॥१२॥

कल्याणसम्पत्तिनिधान[६] ! पुंसा - मायासहानिक्षम ! याचितानि ।
विधेहि नः श्रीविमलाऽशुभाना-मायाऽसहानि क्षमया चितानि ॥१३॥

कल्याणस्य - शुभस्य हेम्नो वा सम्पत्तिः - प्राप्तिस्तन्निधानमिव कल्याणसम्पत्तिनिधान । तस्य सम्बोधनम् । अत एव हे आयासहानिक्षम - क्लेशक्षयक्षम । केषाम् ? - पुंसाम् । प्रयच्छ याचितानि - वाञ्छितानि । नोऽस्माकम् । याचितानि किंविशिष्टानि ? - आयाऽसहानि लाभा - ऽसहष्णूनि । केषाम् ? - अशुभानां पापानाम् । क्षमया - क्षान्त्या चितानि - व्याप्तानि । यद्वा चितानि - निबिडानि । क्षमया - पृथिव्या सह इत्यपि घटते परं तुच्छत्वाज्जिनमतावदातमतयो नैतद् याचन्ते ॥१३॥

---

५. लौघ N. 1 । ६. निदान- K-2 ।

भक्तिं जनोऽनन्तजिनप्रभोर्यस्ततान नन्ता न तदैव तस्य ।
रागान्न लक्ष्म्यो मुमुचुः कटाक्षांस्ततानऽनन्ता नतदैवतस्य ॥१४॥

यः कश्चिन्नन्ता – नमस्कर्त्ता जनः अनन्तजिनप्रभोर्भक्तिं पूजादिलक्षणां ततान विस्तारयामास । तदैव तस्य पुरुषस्य रागाल्लक्ष्म्यः श्रियः कटाक्षान्न [न] मुमुचुः, अपितु मुमुचुः । ततान् – विस्तीर्णान् । न विद्यते अन्तः क्षयो यस्य सोऽनन्तः सम्बोध्यः । प्रणतामरस्य ॥१४॥

प्राप्नोत्यसौ धर्मजिनोत्सवौघा[७] – नऽरोगतापाय ! न मोहिताय ।
तुभ्यं प्रभो ! यः कुरुतेऽङ्गनाभिर्नरो गतापाय ! नमो हिताय ॥१५॥

हे धर्मजिन ! हे प्रभो ! हे गतापाय ! – गतानर्थ । उत्सवौघान् असौ नरः प्राप्नोति । यो नरः तुभ्यं नमः कुरुते । तुभ्यं किंविशिष्टम् । अरोगतापाय – न विद्येते रोगतापौ यस्य सः । तथा पुनः किम्भूताय ? न मोहिताय – नापादितचित्तवैचित्र्याय । काभिरङ्गनाभिर्युवतिभिः । पुनः किम्भूताय ? हिताय ॥१५॥

श्रीशान्तिनाथस्य नुमः प्रदत्त-प्रभूतमोदावऽघनोदकस्य ।
क्रमौ महामोहविषाऽपहारप्रभू तमोदावघनोदकस्य ॥१६॥

अघं-पापं नुदतीति अघनोदकस्तस्य । पुनः किंविशिष्टस्य ? तम एव – पापमेव जन्तुचेतोऽटवीदहनाद् दावः तत्र घनस्य – मेघस्य उदकम् । तस्य । क्रमौ किंभूतौ ? महामोहविषापहार, महांश्चासौ मोहश्च महामोह एव प्राणिविशिष्ट-चैतन्यतिरस्करणाद् विषं – गरलं तस्य अपहारे प्रभू समर्थौ ॥१६॥

येनेह पूर्वं न भवान् विनेमे विना शमेनोनयमेन तस्य ।
जगत्पते ! सम्प्रति कुन्थुनाथ विनाशमेनो नय मे नतस्य ॥१७॥

इह संसारे पूर्वं – पूर्वेषु भवेषु ऊन-यमेन – नियमरहितेन येन मया भवान् न विनेमे कथम् ? – विना । केन ? – शमेन । हे जगत्पते ! । सम्प्रति नतस्य तस्य मे – मम एनः – पापं विनाशं नय ॥१७॥

अरप्रभो ! ध्यानपथं न ये त्वा-मऽपाप! देवीतनयानयन्ति ।
शिवाय ते क्लेशकृतोप्यऽवश्य-मऽपापदे वीतनया नयन्ति ॥१८॥

७. वोघा L.1 N.1 ।

हे देवीतनय ! । देवीति नाम्ना प्रभोर्माता तस्यास्तनय । ये नरास्त्वां ध्यानपथं न आनयन्ति । अपापदे - गत-विपदे शिवाय क्लेशकृतोऽपि दुःकरकारिणोपि ते नराः तस्मिन् शिवे न यन्ति - गच्छन्ति । किंभूता नरा? वीतनया - सम्यग्ज्ञानादिरहिताः ॥१८॥

नमो मुनीन्द्राय करोति यस्तेऽसमान ! मल्ले ! खनये(४/१) हितानाम् ।
सिद्धिं समृद्धिं जगदीश ! तस्य समानमल्लेख ! नयेहितानाम् ॥१९॥

हे ऽसमान - निरुपमान । ते तुभ्यं । किंभूताय ? - खनये । केषाम् ? - हितानाम् । हे समानमल्लेख सम्यग्प्रणतामर । तस्य नरस्य ईहितानां सिद्धिं समृद्धिं नय - प्रापय ॥१९॥

उत्सृज्य राज्यं श्रितसंयमाय निरन्तरायासमऽरागमाय! ।
नमोऽस्तु ते सुव्रत ! सत्तमाय निरन्तरायाऽ समरागमाय ॥२०॥

हे सुव्रत ते - तुभ्यं नमोऽस्तु । राज्यं किंभूतम् ? - निरन्तरायासं सततक्लेशम् । ते । किंविशिष्टम् ? सत्तमाय - प्रधानाय न विद्यते रागो माया च यस्य स सम्बोध्यः । निर्गतं - विलीनं दानाद्यन्तरायं यस्य तस्मै । न विद्यते समरः - सङ्ग्रामो विधेयतया आगमे - सिद्धान्ते यस्य । अथवा न विद्यते समरहेतूनां - क्रामक्रोधादीनां आगम - आगमनं यस्य तस्मै ॥२०॥

तव क्रमास्ते कृशयन्तु मोहं नमे ! दुरापास्ततमऽस्तमान ! ।
यद्भक्तिरिष्टं फलमाशु दद्यान् न मेदुराऽपास्ततमस्तमा न ॥२१॥

दुरापा - दुर्लभास्ते - तव क्रमा मोहं कृशयन्तु - तनू कुर्वन्तु । ततं - विस्तीर्णम् । भक्तिः किंविशिष्टा ? - मेदुरा - सान्द्रा - स्निग्धा । पुनः किंविशिष्टा? प्रकृष्टं निकाचितं तमः पापं तमस्तमं अपास्तं निराकृतं तमस्तमं यया सा । न न दद्यान् अपितु दद्यादेव । क्रमा इति बहुवचनं कथम् ? उच्यते गुरुत्वाद्, गुरावेकश्च (२/३/१२४) इति भवति ॥२१॥

जगाम यो रैवतकं यदूनां राजी-मऽतीत्याऽगमऽनादरेण ।
पुनातु नो नेमिजिनः स मुक्तो राजीमतीत्यागमना दरेण ॥२२॥

---

८. सृत K-1 ।

यो यदूनां राजी अनादरेण अतीत्यातिक्रम्य रैवतकं अगं – पर्वतं गतवान् । नोऽस्मान् पवित्रीकरोतु मुक्तो – रहितः केन ? = दरेण – भयेन ॥२२॥

विजृम्भते नाथ ! न मन्मथस्य प्रभावनोदी प्रसरो जनेऽत्र ।
त्वमऽर्च्यसे येन जिनेश ! पार्श्व ! प्रभावनो दीप्रसरोजनेत्र ! ॥२३॥

प्रभावो – महिमा तस्य नोदी = विनाशको मन्मथस्य प्रसरो न प्रसरति। अत्र जने – लोके । प्रभावनाऽस्यास्तीति अभ्रादित्वाद् उः प्रत्ययः । अथवा प्रभावयतीति प्रभावनो नन्द्यादेराकृतिगणत्वादनः । हे विकसितपङ्कजनयन ॥२३॥

भिन्द्यादऽसौ वीरजिनो जनानामऽदभ्रमानं गतमोहरेणुः ।
चित्तस्थिते यत्र नृणां भवः स्यान् मदभ्रमाऽनङ्गतमोहरेऽणुः ॥२४॥

अदभ्रमानं – उच्चैरभिमानं । गतो मोह एव रेणुर्धूलिर्यस्मात् । नृणां भवोऽणुः स्यात् । कस्मिन् सति ? यत्र त्वयि । किंविशिष्टे ? चित्ते तिष्ठति स्म चित्तस्थितस्तस्मिन् । पुनः किंभूते ? मदश्च – जात्यादिर्भ्रमश्च – अतत्त्वेन बुद्धिरूपोऽनङ्गश्च – कामस्तमश्च – पापं च मदभ्रमानङ्गतमांसि तानि हरतीति मदभ्रमानङ्गतमोहरस्तस्मिन् ॥२४॥

भवार्णवे मृत्युजरातरङ्गे सारम्भजन्मोदकराजि नावः ।
सुखं क्रियासुः सुरवृन्दवन्द्याः सारं भजन्मोदकरा जिना वः ॥२५॥

जिना वो – युष्माकं सारं – सुखं क्रियासुः जिनाः । किंविशिष्टाः ? भजन्मोदकरा – सेवकहर्षविधायिनः । पुनः किंभूता ? – नावः कस्मिन् ? – भवार्णवे । मृत्युजरे ते एव तरङ्गा यत्र । सहारम्भेण जन्तुघातादिना वर्तते सारम्भम् । सारम्भं च तज्जन्म च सारम्भजन्म तदेव उदकं – पानीयं सारम्भजन्मोदकं तेन राजते – शोभते सारम्भजन्मोदकराट् तस्मिन् ॥२५॥

तदऽस्तु जैनं मतमऽन्त हेतुर्ममाऽनवातङ्कवितानकस्य ।
यद् भेजुषः स्यात् कुमतद्रुमाणा मऽमान-वातं कविता न कस्य ॥२६॥

तज्जैनं मतं अन्तहेतुर्विनाशकारणं भवतु । अनवा – अनादि-कालीनाश्च ते आतङ्काश्च आतङ्कहेतुत्वात् कर्माणि तेषां वितानं – विस्तारो यः

सोऽनवातङ्कवितानकस्तस्य । यद् भेजुषः पुरुषस्य यतो ज्ञानावरण-क्षयोपशमसाध्यं हि कवित्वं तच्च तद् भेजुषां एतज्जैनमतं सेव्यमानानां पुरुषाणां अवश्यंभावी । मतं किंभूतं ? अमानवातं - कल्पान्तपवनं केषाम् ? - कुमतद्रुमाणाम् । कविता नव्यकाव्यनिर्मापणसामर्थ्यं न स्यात् कस्य ? अपितु स्यादेव ॥२६॥

श्रियं विधत्तां श्रुतदेवता वः प्रभासमानच्छविभालकान्ता ।
विद्वन्मनःकैरवबोधसोमप्रभासमाऽनच्छविभाऽलकाऽन्ता ॥२७॥

[१०]श्री सोमप्रभाचार्यकृति स्तुतयः ॥

॥ छवि-र्देहकान्तिर्भालश्च-ललाटं छविभालौ । देदीप्यमानाभ्यां छविभालाभ्यां कान्ता या सा तथा । पुनः किंभूता ? विद्वन्मनःकैरवबोधसोमप्रभासमा । पुनः किंभूता ? अनच्छविभालकान्ता । न अच्छाऽनच्छाऽ - विरला चासौ दीप्तिश्च अनच्छविभाऽलकानां - केशानां अन्ता यस्याः सा तथा ॥२७॥ **स्तुतिचूर्णिः** ॥

---

९. बोधि L-1 ।

१०. हेमां जनाशोक शिशीन्द्रनील, प्रभासमानः परमोदकः श्रीः ।
श्रियेस्तु सर्वज्ञचयो भवाग्नेः, प्रभासमानः परमोदकः श्रीः ॥२८॥
इतिश्रीचतुर्विंशतिजिन स्तुतयः समाप्तमिति भद्रं भवतु श्री
श्रमणसङ्घस्य । शुभं भवतु लेखकपाठकयोश्च । चिरं नन्दतु । श्री ॥
पूज्य पं. सारप्रिय गणिशिष्य भावप्रियगणिनाऽलेखि परोपकाराय ।
श्रा० गउरीभणनार्थं । संवत् १५३६ वर्षे आसो सुदि नवमी दिन
शुक्रवारे श्रीमति कुतबपुरनगरे । श्रीचतुर्विध श्रीसङ्घस्य भद्रं भवतु । K-1 ॥
इति चतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥छा॥श्री॥छा॥ K-2 ॥
इति श्रीचतुर्विंशति जिन स्तुति ॥श्रीरस्तु॥ K-3 ॥
इति श्री चतुर्विंशति जिनस्तुतयः समाप्ता ॥श्री॥पं.
रत्नसौभाग्यम(मु)नि वाचनाय ॥ - N-1 ॥

एक विज्ञप्तिपत्र

– सं. विजयशीलचन्द्रसूरि

लुंकागच्छ अथवा नागपुरीय गच्छ साथे सम्बद्ध एक सुन्दर विज्ञप्ति पत्र अत्रे प्रगट थई रह्यो छे. आ पत्रनी संस्कृत भाषा प्रौढ विद्वत्ताथी छलकाय छे. पद्यरचना तेमज अनेक नवा छन्दोनो प्रयोग, पत्रलेखकनी विद्वत्ता पर महोरछाप लगावी आपे छे.

आम तो आ पत्रमां मात्र ४२ ज पद्यो छे. गद्यांश पण साव अल्प छे. परन्तु शब्दप्रयोगो, काव्यछटा, रचनाशैली बधुं दाद आपवी पडे तेवुं छे.

अन्य अनेक आ प्रकारना पत्रोमां जे रीते पत्रलेखन-परम्परा जोवा मळे छे, तेनो अहीं सदंतर अभाव छे. १ थी १०० विशेषणो, प्रारम्भना मङ्गलश्लोकोनी प्रचुरता, ठेर ठेर गद्य पाठो, बधुं आमां नथी. आमां तो सीधो ज पत्रारम्भ छे. आरम्भमां ज त्रण पद्योमां आचार्यनुं नाम, 'चूरु' नगरे तेओ बिराजमान होवानो तथा बृहन्नागपुरीय लुङ्कागच्छना अधिपति होवानो निर्देश आपीने आ पत्र तेमना चरणोमां पहोंचे तेवी आशंसा व्यक्त करी छे. पछीनां बे पद्योमां गुरुकृपा माटेनी आकांक्षा हृदयङ्गम रीते प्रगट करी छे. चोथा श्लोकमां गुरुना दर्शनना सुखनी अभीप्सा प्रगट थाय छे, अने ते इच्छाने वाळीने 'गुरुना गुणगानमां ज मारो सन्तोष समायो छे' एम समाधान पण दर्शावे छे.

पछीनां ७ पद्योमां परम्परागत देव-गुरु वन्दनारूप मङ्गलाचरण थयुं छे, पण लेखक तेने 'आशीर्वाद' तरीके उल्लेखे छे. सातमा पद्यमां नागपुरीय लुङ्कागच्छना श्रीपूज्य जगजीवनस्वामीनी प्रशस्ति छे.

ते पछी पत्रलेखन शरु थाय छे. 'चूरु' (मारवाड) नगरे बिराजता आचार्य लक्ष्मीचन्द्रजीने उद्देशीने पत्र लखायो छे, ते आ पद्योथी स्पष्ट थाय छे. २०-२१-२२मां आचार्यनी साथे वर्तता साधुओनां तथा मुमुक्षुओनां नामो आ प्रमाणे नोंधायां छे : पं. माधवजी, सुखमलजी, उग्रचन्द्र (उगरचन्द), मोहनलाल, वृद्धिचन्द्र, वखतावरमल, मेदचन्द्र, जुहारमल – आ बधा मुनिओ अने शम्भुराम, सूरतराम, व्रताभिलाषी देवदत्त, दौलत इत्यादि मुमुक्षुओ, बधा सूरिजीनी सेवामां वर्ते छे.

पत्र रघुनाथ नामना शिष्ये लख्यो छे (पद्य २४), तेनो साथी छे जिनदास (२५). पत्रनो मुख्य सन्देशो वन्दना तथा क्षमापनानो छे, जे २८-२९ पद्योमां वांची

शकाय छे. लेखकनो आचार्य प्रत्येनो अहोभाव पद्य ३१मां बराबर अनुभवी शकाय छे. श्रीपूज्यजीए आभू नामे द्विज साथे पत्र पाठवेलो, तेथी उद्भवेला हरखनुं वर्णन पद्य ३२मां थयुं छे. ३५मा पद्य परथी कल्पी शकाय छे के आ पत्र रायपुरथी लखायो छे. पद्य ३७मां १८६३मां आ पत्र लखायानो निर्देश छे.

लेखक हवे पोतानी बाजुनी वात करे छे : उत्तर दिशा (देश?) सत्क गणना मुनि भोगीऋषि तथा देवीदास वती नमस्कार पाठवे छे. तो मनसूरपुरना रहीश कर्मचन्द्रना पुत्र लाला चूहडसिंह आदिनी पण वन्दना पाठवी छे.

आ पछीना गद्यपाठमां केटलुंक वृत्तनिवेदन थयुं छे. १. मुख्यमन्त्री (रायपुरना हशे) महामात्र चमनसिंह तथा तेमना त्रण पुत्रो वती श्रीपूज्यजीने वन्दना करी छे. २. राजा पण (पत्रलेखकने) मळवा आवता होवानो निर्देश छे. ३. लोकोनी अवरजवर घणी छे, आखो दिवस एक क्षण माटे पण लोको केडो नथी मूकता. ४. व्याख्यानमां छट्ठुं अंगसूत्र (ज्ञाताधर्मकथाङ्ग)नुं वांचन चाली रह्युं छे अने ५-६ दिवसमां ते पूर्ण थतां स्थानाङ्गसूत्र-वृत्तिनुं व्याख्यान थनार छे; पत्रलेखक ज ते व्याख्यान करे छे - करशे. ५. छात्रो घणा अध्ययन करे छे, तेमां २-३ व्याकरण भणे छे, केटलाक गणितानुयोग तो थोडाक वैद्यक शास्त्रना ग्रन्थो भणे छे. ६. जिनदास (जे कदाच श्रीपूज्यने प्रिय शिष्य छे) व्याकरण भणे छे. ७. आ वर्षे पर्युषणानो महोत्सव मोटो थयो अने तपस्या पण घणी थई छे.

पत्रमां एकथी वधु वखत 'आ बधुं आपनी कृपानुं ज फल छे' एवो भाव बहुमानपूर्वक व्यक्त थयो छे.

पत्र पूर्ण थया पछी तेनी घडी पाडीने छेल्लुं उपरणुं आवे, त्यां ३ पद्यो लखेल छे. तेमां चूरुमां वर्तता अने लुङ्कागणना अधिपति श्रीलक्ष्मीचन्द्रजीने आ पत्र पहोंचे, एवो भाव व्यक्त थयो छे. आ पद्यो आ सम्पादनमां छेल्ले पद्य क्र. ४०-४१-४२ तरीके आपेल छे.

आ पत्रनी विशेषताओ :

१. आ पत्र सचित्र छे. आंखने पराणे आकर्षे तेवां चित्रो आ पत्रना आदि भागमां छे. पत्रना मथाळे बे कलात्मक वळांक धरीने बेठेला मोर अने मध्यमां मङ्गलकुम्भ आलेख्या छे. ते पछी 'नमः श्रीसकलकलनाय भवतु सततं' ए विलक्षण नमस्कार-वचन जोवा मळे छे. तेनी नीचे ज श्यामलवरणी जिनप्रतिमा, तेनी बे तरफ चामरधर युगल साथे चित्रित छे. ते पछी ९ पंक्तिमां 'नमोऽर्हद्भ्यः'थी 'इयतैव तोषो

भवतु वः' पर्यन्तनो पाठ छे. त्यार बाद पांच वर्ण(रंग)ना पांच तीर्थङ्करोनी मनोरम चित्राकृतिओ आलेखाई छे.

२. पत्रलेखकना अक्षरो अत्यन्त शुद्ध, स्पष्ट अने दिव्य छे. प्रायः पत्रलेखकना ज हस्ताक्षर होवानो सम्भव छे.

३. पत्रलेखक संस्कृत भाषाना तेमज व्याकरण, छन्द, कोश, सिद्धान्त, सहित विविध शास्त्रोना अभ्यासी ज्ञाता होवानुं पत्र वांचतां ज जणाई आवे छे. पोते सारा प्रवचनकार हशे, व्यवहारचतुर हशे, अने लोकोमां ज नहि, पण सत्ताधारी वर्गमां – राजा, मन्त्री वगेरे सुधी पण तेमनी प्रशस्य मुद्रा हशे.

४. पत्रलेखके ४२ पद्योमां नवानवा अनेक छन्दोनो प्रयोग कर्यो छे, जे आनन्द आपी जाय छे. पत्रनो प्रारम्भ ज तेमणे 'दोहा'थी कर्यो छे. भाषामां एवी प्रथा छे के ढाळ के गीतना मुखडारूपे दोहा/दूहा होय. ते प्रयोग आमणे अहीं संस्कृतमां कर्यो छे, अने पत्रारम्भे बे दोहा रच्या छे. पोते ज तेने 'दोहा छन्द' तरीके ओळखावीने आ 'सोरठा' (ते नामना दूहा) होवानुं स्पष्ट करी आप्युं छे. ते पछी 'कवित्व' लख्युं छे. भाषामां 'कवित्त' तरीके जे प्रयोजाय छे, ते आमणे अहीं संस्कृतमां प्रयोज्युं छे.

तदुपरांत तेमणे प्रयोजेला छन्दोः– प्रमाणिका, स्रग्धरा, सोरठा, शार्दूलविक्रीडित, वंशस्थविल, वसन्ततिलका, अनुष्टुप्, मृदङ्गक, आख्यानकी, कामक्रीडा, द्रुतविलम्बित, पञ्चचामर, उपजाति, तोटक, दोधक, भुजङ्गप्रयात, आवा प्रचलित–अप्रचलित छन्दो आ नानकडा पत्रमां लेखके प्रयोज्या छे, ते परथी तेमनी रचनाशक्तिनो तथा छन्दोज्ञाननो क्यास नीकळे छे.

आ पत्रथी समजाय छे के लोंकागच्छमां पण केवा विद्वान् साधुओ हशे! आवो सरस पत्र प्रकाशित करवानो आनन्द छे.

*

नमः श्रीसकलकलनाय भवतु सततम् ॥

नमोऽर्हद्भ्यः ॥

दोहाछन्दः संस्कृते–

१. सुधासमानोदर्य्य-वाग्विलासरञ्जितनृपाः ।
श्रीपूज्याः कविवर्य्य-रत्नै रक्ष्या गुरुकृपा ॥१॥

२. श्रीमत्पदप्रणतस्य मे, विज्ञपनीयमिदन्तु ।
अत्रभवन्तस्सर्वदा, निजहृदये प्रविदन्तु ॥२॥

इदं **दोहा**च्छन्दः । प्रथमं '**सोरठा**' नामकम् । अथ संस्कृतमय**कवित्व**म्-

३. श्री श्रीपूज्य**लक्ष्मीचन्द्र**जिन्मुनीन्द्रचन्द्र! चिरंजीव जीवसमविपुलमहामते !
सदा रक्ष कृपादृष्टिमिष्टरूपशिष्टशिष्टकारिणि-प्रकृष्टकृष्टिवन्द्यसाधुतापते! ।
शोभनगुणसञ्चयो विशदस्ते महाशयोदारतरशीलमयो मामके तु मानसे
कोविदकुलावतंस ! संवसति शुद्धवंश ! **लुंकागण**पद्महंस !
हंस इव मानसे ॥१॥

४. कदा तदागमिष्यति प्रभूतपुण्यजं दिनं ।
यदा भवत्सुदर्शनं सुखावहं भविष्यति ? ॥१॥ प्रमाणिकेयम् ।

इत्यलम् । किमनल्पलिखनेन? । का मे मतिरस्ति ?। यथा – श्रीश्रीपूज्यपादानां
गुणगणगणनां विदधीयाहं, इयतैव तोषो भवतु वः ।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

५. स्वस्ति श्रीसद्म पद्मच्छदमृदुमृदितोपप्लवाश्मव्रजस्या-
सेव्यं सौवर्गवर्गैरगणनगृणभृद् यस्य शस्यं त्रिलोक्याम् ।
आदेयं पादयुग्मं भवति भवततिच्छित् स्मृतं मूर्त्तिभाजां
भासा जाम्बूनदं तं प्रणिपतत पतिं प्रीतये **मारुदेवम्** ॥१॥ (स्रग्धरा)

६. अचिरोदरमानससरो - वरहंसेन शिवानि ।
शान्तिजिनेन विधीयतां भवतां सद्विभवानि ॥२॥ (सोरठा)

७. वन्याञ् जन्तुगणानमोचयदलं नो केवलं बन्धनात्
त्रस्ताञ् जन्मजरादितोऽपि भविनो दुर्म्मोहपाशाद् यकः ।
पारेवाङ्महिमा हिमांशुवदनो नीलारविन्दद्युति-
र्द्वाविंशः पुरुषोत्तमः स कुशलं वो रातु **नेमि**प्रभुः ॥३॥ (शार्दूलः)

८. निपीय यस्यैकगिरं गुरुं गताः प्रयान्ति यास्यन्त्यपि जन्मिनो गतिम् ।
प्रभुः स **वामातनुज**स्तनोतु वः श्रियं श्रयच्छ्रीजनको जिनेश्वरः ॥४॥
(वंशस्थम्)

९. पापापहारि सकलारिनिवारि हारि, दारिद्र्यदारि भवदावदवाग्र्यवारि ।
श्रीधारि विष्टपचमत्कृतिकारि वः स्ता–च्छ्री**वर्द्धमान**विभुपद्युगलं शिवाय ॥५॥
(वसन्त०)

१०. सन्देहाचलशृङ्गभङ्गभिदुराद् वीरप्रभोर्निर्म्ममे
लात्वा यस्त्रिपदीमुदारमतिको द्राग् द्वादशाङ्गीं हिताम् ।
यो वश्यन्नपि चाऽबुधावगतयेऽप्राक्षीत् पदार्थान् गुरुं
सार्व्वं सर्व्वद **इन्द्रभूति**भगवान् भूयात् स वो भूतये ॥६॥ (शार्दूल०)

११. श्री**मल्लुङ्गाच्छगच्छं भुजगपुर**भवं भव्यराजीवराजी–
भास्वान् यः शासदासीन्मतिमहिममुदां शिश्विदानो निदानम् ।
यद्गाम्भीर्यस्य चाग्रे पृथुरपि रसधिग्गोष्पदायाम्बभूवा–
ऽऽनन्दश्रेणीं प्रदेयात् स मुनिपरिवृढः **श्रीजगज्जीवनाह्वः** ॥७॥ (स्रग्धरा)

इत्याशिषः सप्तभिः ॥

१२. श्रीमदिष्टं नमस्कृत्य कामधुक्कोटिकामदम् ।
यथाज्ञप्ति सविज्ञप्ति–च्छदनं सदनं मुदाम् ॥८॥ (श्लो.)

१३. अर्थप्रयोगकुशलः सुकुलः प्रसाधितो, वासोग्र्यधातुमणिकारणिकः समृद्धकः ।
यत्र स्वभूरिव समुद्रशयो महाशयो, वर्व्वर्त्ति विश्वविदितः सुकृती सुरैजनः
॥९॥ (मृदङ्गकम्)

१४. अनेकविद्याचणचारुचातुरी–भृतां भृतान्तां निवहैर्नृणां सदा ।
श्री**चूरु**नाम्नीं पुरमुन्नतानतैर्गृहैः समैरध्युषिताः सुखावनिम् ॥१०॥
(आख्यानकी)

१५. श्रीमन्मुनीश्वरवराः प्रतिभानवन्तः, सत्प्रत्ययाः स्फुरदुदारकलानिवासाः ।
श्रेयोऽध्वसाधनपरास्समलब्धिभाजः, श्रीइन्द्रभूतिगणभृत्तुलनामवाप्ताः ॥११॥
(वसन्त०)

१६. आख्यान्ति ख्यातिमन्तः कलिमलमलिनस्वान्तसंशुद्धिहेतुं
संसाराम्भोधिसेतुं भविभविककृते धर्म्ममाप्तोदितं ये ।

धन्यानामग्रतः श्रीजिनमतविपिनर्द्धौ वसन्तोपमाना-
ज्ञानाद्याचारसम्पद्विलसितमधुरा निर्विकाराः प्रशान्ताः ॥१२॥ (स्र०)

१७. शङ्खाङ्कामृतसोमसोदरगुणग्रामाभिरामामहो—
दाराः स्फारपराक्रमाः सितयशोवादप्रतीतास्सना ।
अष्टाभिर्गणिसम्पदाभिरधिकं विभ्राजिता जिष्णवः
श्रीमन्मन्दरधीरवीरभगवत्सच्छासनोद्योतकाः ॥१३॥ (शा०)

१८. श्री**नागपौर**गणकौमुदतारकेशा ये सद्विहारसुपवित्रितनैकदेशाः ।
ऐदंयुगीनजनताहितकृत्यकृत्या राजन्ति राजमहिता महनीयपादाः ॥१४॥
(वसन्त०)

सँय्यन्तॄणां शुद्धाष्टाशाङ्कश्रीविभ्राजिष्णूनाम् ।
तेषां श्रीश्रीपूज्याचार्य्यश्रेणीधुर्य्याणाम् ॥
श्रीश्रीश्रीश

२५. भवदीयनिदेशकिरीटभृता, विनयानतकेन लिवीक्रियते ।
जिनदासयुजाऽथ विदांकुरुत, प्रणतीर्बहुशोऽनुगयुग्मकृताः ॥२१॥ (तोटकं)

२६. दृष्ट्या पीयूषवृष्ट्या वो मङ्गलं महदस्ति मे ।
सदैव दैवतानां हि श्रेयसां श्रेयसे सका ॥२२॥ (श्लो०)

२७. यद्यपि विश्वशिवैकनिदानं संश्रुतमेव परं करणीयम् ।
वश्मि तथापि प्रतिक्षणमृद्धं, भावुकवृन्दमदभ्रतरं वः ॥२३॥ (दोधकम्)

अथच–

२८. दैवस–शार्वर–पाक्षिक–चातु–र्म्माससमीयप्रतिक्रमणेषु ।
साधु यथाविधि साधवकृत्यं, साधयता दधता बहुमोदम् ॥२४॥ (दोधकम्)

२९. प्रणामं प्रणामं भवत्पादपद्मे, मया क्षामणाः क्षामितास्सन्ति सन्तः ।
लसन्तः सदा सद्गुणैः शुद्धमार्गे, वसन्तः श्रितेभ्यो हितान्यादिशन्तः ॥२५॥
(भुजङ्गप्रयातं)

३०. पण्यैरपि मुनीशानैः, क्षन्तव्यास्ताः क्षमाक्षमैः ।
अनुकम्प्य भृशं दासं दासंदासं च सर्वशम्म् ॥२६॥ (श्लो०)

३१. लोकोत्तरातिशयपुञ्जभृतां मुनीशां(श–)मुख्या मदीयमिति भाषितमामनन्तु ।
श्रीपूज्यपादशरणस्य चराचरे मे ध्येयं परं यदिह तच्चरणद्वयं वः ॥२७॥
(वसन्त०)

३२. **आभू**नामद्विजानीतं द्विजराजमिवाऽमिताम् ।
वीक्ष्यागाद्वः कृपापत्रं मन्मनःकुमुदं मुदम्म् ॥२८॥ (श्लो.)

३३. भूयोऽपि भूयो भविकैर्भवद्भिः श्रीपूज्यपादैर्धृतसाधुवादैः ।
प्रसद्य सद्योऽनुचरेऽनवद्यो देयश्छदो येन मुहुर्मुदः स्युः ॥२९॥ (उपजातिः)

३४. धन्यं जनुर्निजमवैमि भवादृशो यत् सत्पूरुषाः समदृशोऽपि हि मां प्रसद्य ।
सौवानुगामिगणनावसरे लघिष्ठ–मप्याशये स्मृतिपथं वरदा नयन्ति ॥३०॥
(वसन्त०)

३५. भक्तिप्रह्वीभवच्छीर्षोऽत्रत्यो वो वन्दते पदौ ।
सङ्घो रायपुरीयादिः श्रीमद्दर्शनतन्मनाः ॥३१॥ (श्लो०)

३६. कृपारसभरस्फारः सारोदन्तमयश्छदः ।
इतो वो मन्मनःक्षेत्रे हर्षवर्षीभविष्यति ॥३२॥ (श्लो०)

३७. **अनलर्त्तुधृति**प्रमितेऽब्दवरे शुभ आश्विनमासि दलेऽथ सिते ।
दिवसेशतिथौ शनिवारयुते लिख(खि)तं खलु पत्रमिदं त्वरया ॥१॥
(मयका)(तो०)

३८. श्रीमत्प्रसादप्रासाद-मध्यमध्यासितेन वै ।
प्रीतये भवतां भूयाद्-भगवत्पदवीभृताम् ॥२॥ (श्लो०)

३९. बहुकृत्यविहस्तत्वात् कूटं यद् घृष्टमत्र तत् ।
शोधनीयं सुधाधाम शुद्धसद्बोधवार्द्धिभिः ॥३॥ (श्लो०)

श्रीमदौत्तराहगणीय श्रीभोगीऋषि देवीदासकृतप्रणतिततयो वाच्या बहुशः प्राज्ञैः ॥ **मनसूरपुरा**धिवासि सुकर्म्म **कर्म्मचन्द्रा**पत्यानां **लाला चूहडसिंहा**दीनां सर्व्वेषां वन्दनाऽवसेया ॥

सकल**मन्त्रिमुख्य महामात्र चयनसिंहजितां** तदङ्गजन्मनां **दयालुसिंह-हमीरसिंह-कर्पूरसिंह**प्रभृतीनां च सहस्रशो वन्दनाऽवधार्य्याः शश्वत् । श्रीश्रीपूज्यपादानां गुणगणान् प्रत्यहं स्मरन्ति ते । अद्यश्वः क्षितिपतिरप्यत्र समागतोऽस्ति । अन्येऽपि बहवो जनाः समेताः सन्ति तेन बह्वी लोकागतिः । सर्व्वदिवसं क्षणमपि पार्श्वं न मुञ्चन्ति मुग्धाः । अद्यश्वः षष्ठाङ्गं शृण्वन्ति श्रावकाः सम्यक् । पञ्चषेषु दिवसेषु तत् पूर्तिभावमुपेष्यति । ततः श्रीस्थानाङ्गस्य व्याख्यानं बृहद्वृत्तिविमर्श-पूर्व्वं करिष्यते मया । श्रीमच्छ्रीपूज्यपादप्रसादबलेन सर्वमनवद्यं विद्याविनोदं करोमि । छात्राश्च विद्यार्थिनः प्रभूताः पठन्ति । तत्र द्वित्रास्तु शाब्दशास्त्रोपन्यासपराः सन्ति । केचन गणितागमं केचन च चिकित्साग्रन्थान् सम्यग्[1]धीयते । तत्र तत्रभवत्प्रसत्तिरेव सर्व्वनिर्व्वाहकरी । भवच्चरणरजःसेवक **जिनदास**स्तु शाब्दसूत्रं मुखसात् करोति । तत्रत्याः सर्व्वेऽपि शिष्याः सम्यक्पठन-क्रियाकुशला बोभुवतु नित्यशः । श्रेयःश्रेणयः सन्तु सदा श्रीः ।

ऐषमः पर्युषणापर्वसत्को महामहोऽत्राऽभूत्, तपोवृद्धिश्च गरीयसी जाता, व्याख्यानादिधर्मकृत्यं चाऽनघं जातम् । तत्र श्रीमत्कृपाकटाक्षविलसितं बीजम् । इति श्रेयः ॥

टि. १. प्रथम लकारस्य प्रथमपुरुषबहुवचनं कर्त्तरि । भ्रान्तिनिरासायेदं लिखितम् ॥

(पत्रना मथाळे-)

४०. अस्मादृशेषु शरदिन्दुयशोधना ये, कारुण्यनीरनिधयः सुरपादपन्ति ।
वन्दारुषु प्रतिदिनं सुमुमुक्षुमुख्य-मह्या महोदधिगभीरतराः प्रसन्नाः ॥१॥

४१. पूज्याचार्य्य श्रीश्री(१०८(ऽधिक))श्री श्री**लक्ष्मीचन्द्र**जित्कानाम् ।
उपयातु चरणकमला-तिथितां तेषामदः पर्णम् ॥२॥

४२. **बृहन्नागपुरीयश्री- लुङ्कागच्छै**श्यशालिनाम् ।
श्री**मच्चूरुपुरे** पुण्ये पुरन्दरपुरोपमे ॥३॥

इत्यलं बहुव्यासन्यासप्रयासेन सतां पुरस्तात् तु तद्विदाम् ॥

श्री सहजकीर्तिगणिकृत
एकादिशतपर्यन्तशब्द साधनिका
अने
श्री फलर्धि पार्श्वनाथ स्तवन

– शीलचन्द्रविजय
निर्ग्रन्थचन्द्रविजय
(डहेलावाला)

भूमिका :

श्रीसहजकीर्तिगणिकृत एकादिशतपर्यन्तशब्दसाधनिका अनु. ८८मां प्रकाशित थई छे ते अने आ प्रतमां पाठान्तरो घणा होवाथी साथे प्रकाशित न करतां अहीं अलगथी प्रकाशन थयुं छे जे समुचित छे.

कर्ता अने कृति सम्बन्धी हकीकतो त्यां जणावाई गई छे एटले अहीं पिष्टपेषण करवानी जरूर नथी.

आ सिवाय पण श्रीसहजकीर्तिगणिनी अप्रगट कृतिओ घणी छे जेमांनी एक लघुकृति एटले श्रीफलर्धिपार्श्वनाथ जिन स्तवन ए पण आनी साथे ज अहीं प्रकाशित करवामां आवे छे.

पांच कडीना आ स्तवनमां भक्तनी प्रभु प्रत्येनी भावना-विनंति सम्यग्तया व्यक्त कराई छे. कर्तानां नाम सिवाय अन्य कोई विगतो स्तवनमांथी मलती नथी. हस्तप्रत नं. AKGM - 22451 अने आ सिवाय आ. श्री कैलाशसागरसूरिजैन ज्ञानमन्दिर - कोबा तरफथी निम्नलिखित श्रीसहजकीर्तिगणिकृत अप्रगट कृतिओ संप्राप्त थई छे :

- शब्दार्णव व्याकरण
- शब्दार्णव प्रक्रिया
- सारस्वत व्याकरणनी सारस्वतप्रदीप टीका
- प्रतिक्रमणसूत्र सहबालावबोध
- सागरशेठ चौपाई
- शत्रुंजयतीर्थ स्तवन वगेरे

समयान्तरे प्रकाशित थाय एवी भावना सह कृतिओ पाठववा बदल आ. श्रीकैलाशसागरसूरि जैन ज्ञा. मं. कोबा तथा अहीं प्रकाशित एकादिशतपर्यन्तशब्दसाधनिका नी हस्तप्रत L.D. इन्स्टिट्यूट अमदावाद तरफथी मली छे ते बन्ने ज्ञानभण्डारोनां संचालकोने धन्यवाद पाठवीए छीए

॥ ६०॥ प्रणिपत्य नीलं(ल) वर्णं, गुरुवर्णं लब्धवर्ण-कृतवर्णम् ।
पार्श्वं पार्श्वसुपार्श्वं, **फलवृद्धिपुरं(र)** स्थितं रम्यम् ॥१॥
एकादि-शतान्तानां, शब्दानां ज्ञानहेतवे स्वस्य ।
धातुप्रत्ययपूर्वं, साधनिका लिख्यते मयका ॥२॥

तत्रादौ "इण्क् गतौ" (१०७५) "भीण-शलि० (१/२१) इत्युणादिसूत्रेण क-प्रत्यये गुणे च विहिते एक शब्दसिद्धिः । संख्यावाची, एकवचनान्तः, त्रिलिङ्गः । रूपाण्येवम्-

एकः । एकं । एकेन । एकस्मै । एकस्मात् । एकस्य । एकस्मिन् । स्त्रियां - एका । एकां । एकया । एकस्यै । एकस्याः । एकस्याः । एकस्याम् । क्लीबे - एकं । एकं । शेषं पुंवत् ॥१॥

"उभत् पूरणे" (१३८५) "उभेर्द्वत्रौ च (३/११४) इति उणादिसूत्रेण इ-प्रत्यये अनेनैव "उभत् पूरण" इत्यस्य द्व-त्र इत्यादेशे च द्वि-त्रिशब्दयोः सिद्धिः । द्विशब्दो द्विवचनान्तस्त्रिलिङ्गः, त्रिशब्दो बहुवचनान्तस्त्रिलिङ्गः । रूपाण्येवम् -

द्वौ । द्वौ । द्वाभ्यां । द्वाभ्यां । द्वाभ्यां । द्वयोः । द्वयोः ।
स्त्रियां - द्वे । द्वे । शेषं पुंवत् । क्लीबेऽप्येवम् ॥२॥

त्रयः । त्रीन् । त्रिभिः । त्रिभ्यः । त्रिभ्यः । त्रयाणां । त्रिषु ।

स्त्रियां-तिस्रः । तिस्रः । तिस्र(सृ)भिः । तिसृभ्यः । तिसृभ्यः । तिसृणां । तिसृषु । क्लीबे - त्रीणि । त्रीणि । शेषं पुंवत् ॥३॥

"चतेक् याचने" (८९९) "चतेः० (४/१७९) इत्युणादिसूत्रेण उर्-प्रत्यये चतुर् शब्दः । बहुवचनान्तस्त्रिलिङ्गः । रूपाणि-

चत्वारः । चतुरः । चतुर्भिः । चतुर्भ्यः । चतुर्भ्यः । चतुर्णां । चतुर्षु ।

स्त्रीलिङ्गे-चतस्रः । चतस्रः । चतसृभिः । चतसृभ्यः । चतसृभ्यः । चतसृणां। चतसृषु ।

क्लीबे- चत्वारि । चत्वारि । शेषं पुंवत् ॥४॥

पचुञ् व्यक्तिकरणे (६५७) "उक्षि-तक्ष्यक्षीशी०" (४/१४९) इत(ति) उणादिसूत्रेण अन्-प्रत्यये पञ्चन् शब्दः । बहुवचनान्तोऽलिङ्गः ।

अतः प्रारभ्य अष्टादशन् यावदलिङ्गाः बहुवचनान्ताश्च । रूपाणि पञ्च। पञ्च । पञ्चभिः । पञ्चभ्यः । पञ्चभ्यः । पञ्चानां । पञ्चसु ॥५॥

षहि मर्षणे (९९०) "सहेः षष् च' (४/२००) इत्युणादिसूत्रेण क्विप् धातोः षष् आदेशे षष् शब्दः । रूपाणि-

षट् । षट् । षड्भिः । षड्भ्यः । षड्भ्यः । षण्णां । षट्सु ॥६॥

षप् समवाये (३४०) अशौटि व्याप्तौ (१३१४) "षप्यशौभ्याम्०" (४/१५२) इत्युणादिसूत्रेण क्विप्, धातोः {षष्} तन्- प्रत्यये सप्तन्, अष्टन्।

सप्त । सप्त । सप्तभिः । सप्तभ्यः । सप्तभ्यः । सप्तानां । सप्तसु ॥७॥

अष्टौ । अष्ट । अष्टौ । अष्ट । अष्टाभिः । अष्टभिः । अष्टाभ्यः । अष्टभ्यः। अष्टाभ्यः । अष्टभ्यः । अष्टानां । अष्टासु । अष्टसु ॥८॥

णुं स्तुतौ (१०८१) "उक्षि-तक्षि०" (४/१४९) इत्युणादिसूत्रेण अन्-प्रत्ययः नवम् ।

नव । नव । नवभि(भिः) । नवभ्यः । नवभ्यः । नवानां । नवसु ॥९॥

दंश दशने (४९६) "लु- पु. -यु-वृषि-दंशि०" (४/१५०) इत्युणादि किदन्-प्रत्ययः कित्त्वाद् धातोर्नस्य लोपः-दशन् ।

दश । दश । दशभिः । दशभ्यः । दशभ्यः । दशानां । दशसु ॥१०॥

"एकादश-षोडश-षोडत्-षोढा-षड्ढा" (३/२/९१) इति सूत्रेण एकेनोत्तरा दश एकश्च दश च वा एकादश । एकस्य दशशब्दे उत्तरपदे दीर्घः। रूपाणि दशवत् । अष्टाद[श]पर्यन्तम् ॥११॥

द्वि-त्र्यष्टानां द्वात्रयोष्टा० (३/२/९२) इत्यनेन सूत्रेण द्विशब्दस्य द्वा आदेशे त्रिशब्दस्य त्रयस् आदेशे च द्वादश-त्रयोदश समास एकादशवत् ॥१२॥१३॥

एवं चतुर्दश ॥१४॥ पञ्चदश ॥१५॥

"एकादश-षोसमश(षोडश?) (३/२/९१) इति समाससूत्रेण षषोऽन्त्यस्योत्वं, उत्तरपददकारस्य डकारः ॥१६॥

सप्तदश ॥ द्वित्र्यष्टाना० (३/२/९२) इत्यादिसूत्रेण अष्टन् शब्दस्य अष्टा आदेशे अष्टादश ॥१८॥

"विंशत्यादयः शब्दा नाम्नि विषये तदस्य मानमित्यर्थे साधवो भवन्ति"। द्वौ दशतौ मानमेषां संख्येयानां संख्यानस्य वा विंशतिः। द्विशब्दस्य विंभावः शतिश्च प्रत्ययः। ततः एकेनोना एकोना एकोना चासौ विंशतिश्चेति कर्मधारये पुंवद् भाषि(वि)तेति ह्रस्वत्वेति एकोनविंशतिः। [1]एकवचनान्तः स्त्रीलिङ्गश्च। नवनवतिपर्यन्ताः संख्याशब्दाः। अत्र विकल्पचतुष्कमस्ति तत्तु स्यादि{ति}तोऽवसेयम्। रूपाण्येवम्-

एकोनविंशतिः। एकोनविंशतिं। एकोनविंशत्या। एकोनविंशतये। आख्याग्रहणस्य नित्यं स्त्रीविषयत्वात् केचिद् विंशत्यै त्री(त्रि)भ्यः इत्येवमिच्छन्ति। एकोनविंशतेः। एकोनविंशतेः। एकोनविंशतौ ॥१९॥

एवं विंशति पूर्ववत् साधना। रूपाणि - एकोनविंशतिवत् ॥२०॥

एकेनाधिका विंशतिः एकश्च विंशतिश्चेति वा एकविंशतिः ॥२१॥ "द्वित्र्यष्टानाम्०" (३/२/९२) इति सूत्रेण द्वा-त्रयस् आदेशः। समासः पूर्ववत्। द्वाविंशतिः ॥२२॥ एवं त्रयोविंशतिः ॥२३॥ चतुर्विंशतिः ॥२४॥ पञ्चविंशतिः ॥२५॥ षड्विंशतिः ॥२६॥ सप्तविंशतिः ॥२७॥ अष्टाविंशतिः ॥२८॥

त्रयोदशतो मानमेषां संख्येयानामस्य संख्यानस्य वा त्रिंशत् ॥३०॥ पूर्ववत् समासः। रूपाण्येवम् –

एकोनत्रिंशत्। एकोनत्रिंशतं। एकोनत्रिंशता। एकोनत्रिंशते। एकोनत्रिंशतः। एकोनत्रिंशतः। [एकोनत्रिंशति ॥३]९॥

---

१. यदा तु विंशत्यादीनामेव गणनं विवक्ष्यते तदा सर्वाणि वचनानि भवन्ति स्त्रीलिङ्गता च। यथा विंशतिरेका द्वे विंशती तिस्रो विंशतयः पुंसां स्त्रीणां कुण्डानां वा। भूमिशब्दवत् रूपाणि।

एवं त्रिंशत् ॥३०॥ पूर्ववत् समासः ।

चत्वारो दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य संख्यानस्य वा चत्वारिन् शत्। चतुरिश्चत्वारिन्भावः शच्च प्रत्ययः । ततः एकेन ऊनेति पूर्ववत् कृते एकोनचत्वारिंशत् । एकोनचत्वारिंशतं । एकोनचत्वारिंशता । एकोनचत्वारिंशते। एकोनचत्वारिंशतः । एकोनचत्वारिंशतः । एकोनचत्वारिंशति ॥३९॥ एकोनं(वं) चत्वारिंशत् ॥४०॥ एकचत्वारिंशत् ॥४१॥ ततः "चत्वारिंशदादौ वा" (३/२/९३) इति सूत्रेण द्वि-त्र्यष्टानां द्वा-त्रयस्-अष्टा आदेशा वा स्युः । द्वाभ्यामधिका चत्वारिंशत् द्वौ च [च]त्वारिंशच्चेति द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत् ॥४२॥ [त्रयश्चत्वारिंशत्], त्रिचत्वारिंशत् ॥४३॥ चतुश्चत्वारिंशत् ॥४४॥ पञ्चचत्वारिंशत् ॥४५॥ षट्चत्वारिंशत् ॥४६॥ सप्तचत्वारिंशत् ॥४७॥ अष्टाचत्वारिंशत्, अष्टचत्वारिंशत् ॥४८॥

पञ्च दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य संख्यानस्य [वा] पञ्चाशद् । चस्य आत्वं, शच्च प्रत्ययः । ततः एकेनोना पञ्चाशत् एकोनपञ्चाशत् । रूपाणि पूर्ववत् ॥४९॥

एवं पञ्चाशत् ॥५०॥ एकपञ्चाशत् ॥५१॥ "चत्वारिंशदादौ वा" (३/२/९३) इत्यनेन द्वापञ्चाशत्, द्विपञ्चाशत् ॥५२॥ त्रयः पञ्चाशत् त्रिपञ्चाशत् ॥५३॥ चतुःपञ्चाशत् ॥५४॥ पञ्चपञ्चाशत् ॥५५॥ षट्पञ्चाशत् ॥५६॥ सप्तपञ्चाशत् ॥५७॥ अष्टापञ्चाशत्, अष्टपञ्चाशत् ॥५८॥

षट् दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य संख्यानस्य वा षष्टिः । ष[ष]स्ति-प्रत्ययः "तवर्गस्य०" (१/४/६०) इति टत्वे सिद्धिः । अयं त्रिलिङ्गः । ततः एकेनोना षष्टि एकोनषष्टिः । रूपाण्येवम् -

एकोनषष्टिः । एकोनषष्टिं । एकोनषष्ट्या । एकोनषष्टये । एकोनषष्टेः । एकोनषष्टेः । एकोनषष्टौ ॥५९॥

एवं षष्टिः ॥६०॥ एकषष्टिः ॥६१॥ "चत्वारिंशदादौ वा" (३/२/९२) इति सूत्रेण द्वा-त्रयस्-अष्टा वा आदेशाः । द्वाषष्टिः, द्विषष्टिः ॥६२॥ त्रयः षष्टिः, त्रिषष्टिः ॥६३॥ चतुःषष्टिः ॥६४॥ पञ्चषष्टिः ॥६५॥ षट्षष्टिः ॥६६॥ सप्तषष्टिः ॥६७॥ अष्टाषष्टिः, अष्टषष्टिः ॥६८॥

सप्तदशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य सप्ततिः । तिप्रत्ययः, नाम्नो न लुप् । तत एकेनोना सप्ततिः एकोनसप्ततिः । एकोनसप्तति । एकोनसप्तत्या । एकोनसप्ततये । एकोनसप्ततेः । एकोनसप्ततेः । एकोनसप्ततौ ॥६९॥

एवं सप्ततिः [॥७०॥ एकसप्ततिः ॥७१॥ द्वासप्ततिः, द्विसप्ततिः ॥७२॥ त्रयः सप्ततिः, त्रिसप्ततिः ॥७३॥ चतुःसप्ततिः ॥७४॥ पञ्चसप्ततिः ॥७५॥ षट्सप्ततिः ॥७६॥ सप्तसप्ततिः ॥७७॥ अष्टासप्ततिः, अष्टसप्ततिः ॥७८॥

अष्टो(ष्टौ)दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा [संख्यानस्य] अशीतिः । "विंशत्यादयः" (६/४/१७३) इत्यनेन ति-प्रत्ययः अष्टन् स्थाने अशी आदेशश्च । ततः एकेंनोनाशीतिः एकोनाशीतिः । एकोनाशीतिं । इति सप्ततिवत् रूपाणि ॥७९॥

एवं अशीतिः ॥८०॥ एकाशीतिः ॥८१॥ "द्वि त्र्यष्टानाम्०" (३/२/९२) इति सूत्रे[ण] अनशीतिकथनात् द्वा-त्रयस्-अष्टा आदेशा न भवन्ति। द्व्यशीतिः ॥८२॥ त्र्यशीतिः ॥८३॥ चतुरशीतिः ॥८४॥ पञ्चाशीतिः ॥८५॥ षडशीतिः ॥८६॥ सप्ताशीतिः ॥८७॥ अष्टाशीतिः ॥८८॥

नव दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य वा संख्यानस्य {वा} नवतिः । तिप्रत्ययः । नाम्नो न लुक् । एकेनोना नवतिः एकोननवतिः । रूपाणि सप्ततिवत् ॥८९॥

एवं नवतिः ॥९०॥ एकनवतिः ॥९१॥ "चत्वारिंशदादौ वा" (३/२/९३) इति द्वानवतिः, द्विनवतिः ॥९२॥ त्रयोनवतिः, त्रिनवतिः ॥९३॥ चतुर्णवतिः ॥९४॥ पञ्चण(न)वतिः ॥९५॥ षण्णवतिः ॥९६॥ सप्तनवतिः ॥९७॥ अष्टानवतिः, अष्टनवतिः ॥९८॥

दश दशतो मानमेषां संख्येयानामस्य संख्यानस्य वा शतम् । "विंशत्यादयः" (६/४/१७३) इत्यादिसूत्रेण त-प्रत्ययः, दशन् दशस्थाने शश्च। ततः - एकोनशतं । एकोनशतं । एकोनशतेन । एकोनशताय । एकोनशतात्। एकोनशतस्य । एकोनशते ॥९९॥

[२]शतम् ॥१००॥ एवं "विंशत्यादयः" (६/४/१७३) इति सूत्रेण सहस्रादयः संख्याशब्दाः साध्यन्ते इति ।

इति श्रीहेमशब्दानु - शासनते(नादि)सुशास्त्रतः ।
एकादिशतपर्यन्त - शब्दसाधनिका शुभा ॥१॥
व्यलेखीयं मनोरम्या, ऋजुः **सहजकीर्त्ति**ना ।
यदशुद्धं भवेदस्यां, तच्च शोध्यं विचक्षणैः ॥२॥

इति श्रीएकादिशतपर्यन्तसाधनिका लिखिता ॥

श्रीसहजकीर्तिगणी विरचित
श्रीफलर्धि पार्श्वनाथ जिन स्तवन

आज सफल अवतार मनोरथ[मन] तणा ए ।
सकल फल्या इणि वार, सफल दिन आजनउ ए ॥१॥
कलपलता चिंतामणि ए, कामगवी सुरकुंभ ।
सुधारस सारिखउ ए, प्रभु दरसण सुखलंभ ॥२॥ स० ॥
मे मनमे निश्चय कीयउ ए, तूं साहिब हुं दास ।
न छोडुं भवभवें ए, साहिब तुम चउपास ॥३॥ स० ॥
तुझ गुण मुझ मन रमि रह्या ए, जिम साकर गोखीर ।
कला जिम शशी धरै ए, जिम समता जिनसीर ॥४॥ स० ॥
फलविधि (वृद्धि) साहिब आगलै ए, **सहजकीरति** करजोडि ।
करै ए विनति ए, भवभयथी मुझ छोडि ॥५॥ सक० ॥

॥ इति श्री फलव(वृ)धिपार्श्वनाथजी स्तवनं ॥

---

२. शतं ॥१००॥ एकशतं ॥१०१॥ "प्राक्शताद्" इति प्रतिषेधाद् द्व्यादीनां द्वा-त्रयोऽष्टा आदेशा न भवन्ति । तेन द्विशतं ॥१०२॥ त्रिशतं ॥१०३॥ चतुःशतं ॥१०४॥ इत्यादि । शतं पुरुषाः । शतं पुरुषान् । शतेन पुरुषैः । शताय पुरुषेभ्यः इत्यादि । शतं स्त्रियः । शतं कुलानि ।

एवं सहस्रायुतप्रयुतार्बुदानां पुंनपुंस्त्वं ।
सहस्रः । सहस्रौ । सहस्रं । सहस्रे इत्यादि ।

साधुगुणस्वाध्याय

– मुनि श्रुताङ्गचन्द्रविजय

पूज्य उपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराज रचित 'साधुगुणस्वाध्याय' नामनी एक लघु कृतिनुं अत्रे सम्पादन करवामां आव्युं छे। पूज्य उपाध्यायजीना जीवन-कवन विषे तो सहु कोइ जाणता होवाथी अहीं ते विषे वात न करतां कृति विषे ज वात करुं छुं।

४१ कडीनी प्रस्तुत कृति चार ढालमां वहेंचायेली छे। शास्त्रोनी संस्कृत-प्राकृत गाथाओनो मारुगूर्जर भाषामां रसाल पद्यानुवाद करवानुं पूज्य उपाध्यायजीमां असाधारण प्रभुत्व हतुं। एमनी आ शक्तिनां समकितना सडसठ बोलनी सज्झाय, आठ योगदृष्टिनी सज्झाय वगेरेमां जे रीते दर्शन थाय छे, ए ज रीते आ लघु कृतिमां पण तेनो परिचय थाय छे।

पहेली ढालमां श्रीदशवैकालिक सूत्रना सभिक्षु नामना दसमा अध्ययनना आधारे साधुजीवननुं संक्षिप्त वर्णन कर्युं छे। बीजी ढालमां श्रीउत्तराध्ययन सूत्रना अनगारमार्गगति नामना ३५मा अध्ययनना आधारे साधुनी जीवनशैलीनुं वर्णन कर्युं छे। तो त्रीजी ढालमां श्रीसूत्रकृताङ्ग सूत्रना मार्ग नामना ११मा अध्ययनमांथी साधुना आचार-व्यवहारनुं वर्णन कर्युं छे। त्रणे ढालनी जे कडीमां उपरोक्त शास्त्रोनी जे गाथानो पद्यानुवाद थयो छे तेनी एक सूचि पण अत्रे प्रस्तुत छे।

ढाल-१नी कडी	उपरोक्त शास्त्रनी गाथा	ढाल-२नी कडी	उपरोक्त शास्त्रनी गाथा	ढाल-३नी कडी	उपरोक्त शास्त्रनी गाथा
१	५	१०	३	२१	९-१०
२	५-६	११	४-५	२२	११-१३-१४
३	९-१०	१२	६-७-८-९	२४	१६-२१
४	११-१२	१३	१०-११	२५	२०
५	१३-१४	१४	१२-१३	२६	२३
६	१५	१५	१४	२७	२५-२६
७	१८-१९	१६	१५-१६	२८	२७-२८
८	२०-२१	१७	१७	३०	३०-३१
		१८	१८-१९-२१	३१	३६
				३२	३७

त्रणे ढालमां साधुना आन्तर अने बाह्य एम बंने आचारनुं वर्णन जोवा मले छे । खूबीनी वात तो ए छे के त्रणे ढालमां अलग-अलग आगमग्रन्थोना समान विषयवालां अध्ययनोमांथी वर्णन कर्युं होवा छतां क्यांय पुनरुक्ति नथी देखाती । चोथी ढालमां शुद्ध आचारनी परिपालना, शुद्ध मार्गनी प्ररूपणा, गीतार्थता वगेरेनी वातो करी छे । आ ढालमां श्रीव्यवहार-भाष्य, श्री स्थानाङ्ग सूत्र, श्रीषष्ठिशतक प्रकरण अने श्रीउपदेशमाला प्रकरणनो आधार लीधो छे ।

कलशरूप छेल्ली गाथानी रचना प्राकृत भाषामां करवामां आवी छे । आ गाथामां मुनि **श्रीनयविजयजी**नी कृपानुं स्मरण अने **'जसंसिणं'** एवा पद द्वारा गुप्त रीते **जसविजयजी** तरीके कर्तानो निर्देश जोवा मलतो होवाथी ज आ कृतिनी रचना उपाध्याय श्रीयशोविजयजीनी होवानुं निश्चित थाय छे.

समग्र कृति खूब रसाल अने वांचता ज समजाती जाय तेवी छे । अल्प पर्यायवाला साधु-साध्वीजीने आगमनो अभ्यास बाकी होवा छतां आ कृतिना माध्यमे आगमवर्णित साधुजीवननो बोध मली जाय ते आ कृतिथी थतो बहु मोटो लाभ छे । कृतिगत अल्पपरिचित शब्दोनो छेल्ले शब्दकोश पण आप्यो छे । समुदान, आधाकर्म, पूति जेवा पारिभाषिक शब्दोनो अर्थ शब्दकोशमां समाववो शक्य न होवाथी तेवा शब्दोने शब्दकोशमां स्थान आप्युं नथी ।

एक उल्लेखनीय वात : आ कृति पूर्वे 'गूर्जर (यशोवाणी) साहित्यसंग्रह' नामना पुस्तकमां पृष्ठ ४२६ उपर प्रकाशित थइ चूकी छे । परन्तु हमणां पूज्य आचार्य श्रीविजयशीलचन्द्रसूरिजी महाराजना अंगत संग्रहमांथी कोइक ज्ञानभण्डारनी आ कृतिनी एक हस्तप्रतनी झेरोक्ष कोपी मली आवी । बे पानांनी आ प्रतना अन्ते आ प्रमाणे **पुष्पिका** छे : **"सं. १७४८, राधनपुरे"** । आम कृतिकारना कालधर्मना चोथा ज वर्षे आ प्रत लखायेली छे । मुद्रित वाचना अने प्रतनी वाचनानी तुलना करी जोतां ख्याल आव्यो के मुद्रित वाचना करतां प्रतनी वाचना वधु शुद्ध, प्राचीन अने कृतिकारना रचनाकौशलने अनुरूप छे । आथी पूज्य आचार्यश्रीनी आज्ञाथी आ कृतिनुं अहीं पुनः सम्पादन कर्युं छे । मुद्रित वाचना करतां प्रस्तुत वाचनामां जे महत्त्वना पाठभेद जोवा मले छे ते पण कृतिना अंते आप्या छे ।

अन्ते, कृतिनी हस्तप्रतनी झेरोक्ष कोपी आपवा बदल तथा कृतिगत सन्देह स्थानोने दूर करवा बदल पूज्य आचार्यश्रीनो ऋणी छुं । तथा सम्पादनगत क्षतिओ तरफ ध्यान दोरवा माटे विद्वज्जनोने विनंति करुं छुं ।

॥ ढाल पहेली ॥

सदगुरु एहवा सेवीइ, जे संजम-गुण-राता रे ।
निज-सम जग-जन जाणता, वीर-वचन मनि ध्याता रे ॥१॥ सदगुरु०
च्यार कषाय जे परिहरइ, साचूं शुभमति भाखइ रे ।
संवरवंत अकिंचना, संनिधि कांइ न राखइ रे ॥२॥ सदगुरु०
आणइ भोजन सूझतुं, साहमीनइ देई भुंजइ रे ।
कलह-कथा सवि परिहरइ, श्रुत सज्झाय प्रयुंजइ रे ॥३॥ सदगुरु०
कंटक ग्राम-नगरतणा, समसुख-दुख अहियासइ रे ।
निरभय हृदय सदा करइ, बहुविधि तपस्युं विलासइ रे ॥४॥ सदगुरु०
मेदिनी परिं सवि सांसहइ, काउसगिं परितापो रे ।
खमीय परिसह ओधरइ, जाति-मरण-भय-व्यापो रे ॥५॥ सदगुरु०
कर-क्रम-वचन-सुसंयता, अध्यातम-गुण-लीना रे ।
विषय-विभूति न अभिलषइ, सूत्र-अरथ-रस-पीना रे ॥६॥ सदगुरु०
'ए कुशील' न{इ} एम कहइ, जेहथी परिजन रूसइ रे ।
जातिमदादिक परिहरी, धर्मध्यानथी तूसइ रे ॥७॥ सदगुरु०
आप रही व्रतधर्ममां, परनइ धर्ममां थापइ रे ।
सर्व कुशील-लक्षण तजी, बंधन भवतणा कापइ रे ॥ सदगुरु०
अध्ययनइं कहिया गुण घणा, **दशवैकालिक दसमइ** रे ।
कंचन परिं ते परिखीइ, ए कालिं पणि विसमइ रे ॥९॥ सदगुरु०

॥ ढाल बीजी ॥

उत्तराध्ययन कहिओ तेह तणो, मारग ते हवि भवियण सूणो ।
हिंसा अलिय अदत्त अबंभ, छंडइ मुनि ग्रह आरंभ ॥१०॥
धूप-पुष्प-वासित घर चित्र, मनि नवि वंछइ परम पवित्र ।
जिहां रहतां इंद्रिय सविकार, कामहेतु होवइ दुनिवार ॥११॥
स्त्री-पशु-पंडक-वर्जित ठाम, प्रासुक वास करइ अभिराम ।
घर न करइ न करावइ कदा, त्रस-थावर-वध छइ जिहां सदा ॥१२॥
अन्न-पान न पचावइ पचइ, पचतुं देखी मनि नवि रुचइ ।
धान-नीर-पृथिवी-तृण-पात-निश्रित जीवतणो जिहां घात ॥१३॥

दीप अगनि दीपावइ नहीं, शस्त्र सरव धारुं ते सही ।
कंचन तृण समवडि मनि धरइ, क्रय-विक्रय कहीइं नवि करइ ॥१४॥
खरीदार क्रय करतो कहिओ, विक्रय करतो वलि वाणीओ ।
क्रय-विक्रयमां वर्त्तइ जेह, भिक्षुकभाव नवि पालइ तेह ॥१५॥
क्रय-विक्रयमां बहुली हाणि, भिक्षावृत्ति महागुण-खाणि ।
इम जाणी आगम अनुसरी, मुनि समुदान करइ गोचरी ॥१६॥
रस लालचि न करइ गुणवंत, रस-अर्थइं नवि भुंजइ दंत ।
संजम-जीवित-रक्षा-हेत, संतोषी मुनि भोजन लेत ॥१७॥
अर्चन रचना पूजा नति, नवि वंछइ शुभध्यानी यति ।
करी महाव्रत-आराधना, केवलज्ञान लहइ शुभमना ॥१८॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

मारग साधुतणो छइ भावि, दर्शन ज्ञान चरित्र स्वभावि ।
चरकादिक आचार कुपंथि, पासत्थादिकनो निज यूथि ॥१९॥
आधाकर्मादिक जे सेवइ, कालहानि मुख दूषण देवइ ।
जिनमारग छोडी भवकामी, थापइ कुमत कुमारगगामी ॥२०॥
मारग एक अहिंसारूप, जेहथी ऊतरीइ भवकूप ।
सर्व युक्तिथी एह ज जाणो, एह ज सार समय मनि आणो ॥२१॥
ऊरध अध त्रीछा जे प्राणी, त्रस-थावर ते न हणइ नाणी ।
एसण दोष तजइ उद्देसी, कीधुं अन्न न लिइ शुभलेशी ॥२२॥
आधाकर्मादिक अविशुद्ध, अवयवमिश्रित जे छइ शुद्ध ।
ते पणि पूति दोषथी टालइ, ए मारग संजम अजुआलइ ॥२३॥
हणतानइ नवि मुनि अनुमोदइ, कूपादिक न वखांणइ मोदइ ।
पुण्य-पाप तिहां पूछइ कोई, मौन धरइ जिन-आगम जोई ॥२४॥
पुण्य कहइ तो पातक पोषइ, पाप कहइ जनवृत्ति विशोषइ ।
कोइ भाखइ निरदोष आहार, सूझइ अम्हनइ हो अधिकार ॥२५॥
मुगति-काजि सब किरिया करतो, पूरण मारग भाखइ विरतो ।
भव-जल वहता जननिं जेह, द्वीपसमान करइ दुख-छेह ॥२६॥

एह धरम न लहइ अज्ञानी, वलीय अपंडित पंडितमानी ।
बीज उदक उद्देशिका भुंजइ, ध्यान करइ असमान(ध?) प्रयुंजइ ॥२७॥
माछा-भक्षण ध्याइ पंखी, ढंकादिक जिम आमिषकंखी ।
विषय-प्राप्ति ध्याइ तिम पापी, बहुलारंभ परिग्रह थापी ॥२८॥
विषयतणा सुख वंछइ प्राणी, परिग्रहवंत न ते सुहझाणी ।
ते हिंसाना दोष न दाखइ, निज-मति-कल्पित कारण भाखइ ॥२९॥
अंध चलावइ काणी नावा, तेह समर्थ न तीरइ जावा ।
मिथ्यादृष्टि भवजल पडिया, पार न पामइ तिम दुख-नडिया ॥३०॥
जेह अतीत अनागत नाणी, वर्तमान तस एक कहाणी ।
दयामूल समतामय सार, धरम तेहनो परमाधार ॥३१॥
धरम लही उपसर्गनइ पार्ति, मुनि न चलइ जिम गिरि घन-वार्ति ।
अग्यारमुं अध्ययन संभारो, **बीजइ अंगइ** एम मनि धारो ॥३२॥

॥ ढाल चोथी ॥

ते मुनिनइ भामणडइ जईइ, जे व्रत-किरिया पालइ रे ।
सुधुं भाखी जे वली जगमां, जिनमारग अजूआलइ रे ॥३३॥ ते मुनिनइ०
जे सूधो मारग पालइ ते, शुद्ध कहइ निरधारिं रे ।
बीजो शुद्ध कहइ भजनाइं, कहिउं भाष्य-व्यवहारिं रे ॥३४॥ ते मुनिनइ०
द्विविध बोल ते शुद्ध न भाखइ, भाखइ संवेगपाखी रे ।
ए भजनानो भाव विचारो, ठाणांगादिक साखी रे ॥३५॥ ते मुनिनइ०
कुगुरु-वासना-पाश पड्यानइ, निज बलथी जे छोडइ रे ।
शुद्ध कथक ते गुण-मणि-भरिया, मार्ग मुगतिनइ जोडइ रे ॥३६॥ ते मुनिनइ०
बहुल असंयतनी [जे]पूजा, ए दशमुं अछेरुं रे ।
षष्ठिशतक भाखिउं ठाणांगिं, कलि-लक्षण अधिकेरुं रे ॥३७॥ ते मुनिनइ०
एहमां पणि जिनशासन-बलथी, जे मुनि पूज चलावइ रे ।
तेह विशुद्ध कथक बुध जनना, सुरपति पणि गुण गावइ रे ॥३८॥ ते मुनिनइ०
तप करतो अतिदुष्कर पडीओ, अगीतार्थ जंजालिं रे ।
शुद्ध कथक हीणा पणि सुंदर, बोलिउं उपदेशमालिं रे ॥३९॥ ते मुनिनइ०

शुद्ध प्ररूपक साधु नमीजइ, शरण तेहनुं कीजइ रे ।
तास वचन अनुसारिं रहतां, चिदानंद फल लीजइ रे ॥४०॥ ते मुनिनइ०

कलसः

सिरि**नयविजय**मुणीणं, पसायमासज्ज सयलकज्जकरं ।
भणिया गुणा मुणीणां, साहूण **जसंसिणं** एए ॥४१॥

॥ इति श्रीसाधुगुणस्वाध्यायः ॥
सं. १७४८, राधनपुरे ।

मुद्रित वाचना अने प्रस्तुत वाचनाना महत्त्वना पाठभेद

कडी क्रमांक	मुद्रित वाचना	प्रस्तुत वाचना
१	वीरवचनने ध्याता	वीर-वचन मनि ध्याता
२	कषाय जे	कषायने
२	संजमवंत	संवरवंत
३	आणिय	आणइ
४	निरभर	निरभय
४	तप सुविलासे	तपस्युं विलासइ
५	मेह मेदनी	मेदिनी
६	करे क्रम	कर-क्रम
७	धर्मध्यान विभूसे	धर्मध्यानथी तूसइ
१०	पुन परिग्रह	मुनि ग्रह
११	रहे त्यां	रहतां
११	होवे इणि वार	होवइ दुनिवार
१२	ताम	ठाम
१३	निश्चित	निश्रित
१४	षट् धारू	सरव धारुं
१८	प्रजा-नति	पूजा-नति
१९	कुपंथ	कुपंथिं
१९	यूथ	यूथिं
२३	अशुद्ध	शुद्ध

२३	पोते	पूति
२४	न वखाणे प्रमोदे	नव खांणइ मोदइ (न वखाणइं मोदइ)
२५	अम्हने इहां	अम्हनइ हो
२६	निरतो	विरतो
२७	उद्देशिकनुं जी	उद्देशिक भुंजइ
२७	धरे	करइ
२७	प्रयुंजी	प्रयुंजइ
३२	उपसर्ग-निपाते	उपसर्गनइ पार्ति
३९	करतो अति दुःकर पण पडियो	तप करतो अतिदुष्कर पडीओ
३९	शुद्ध-कथन हीणो	शुद्ध कथक हीणा
३९	बोले	बोलिउं
४०	तेहनुं	तेह तुं
४०	रही	रहतां
४१	०गुरुणं	०मुणीणं
४१	सयलकम्मकरं	सयलकज्जकरं
४१	साहुण जससिसेण ए ए	साहूण जसंसिणं एए

मुद्रित वाचनामां ४०मी कडीना चोथा चरणमां रहेला 'चिदानंद' शब्दने ते शब्द कृतिकारनो सूचक होय ए रीते घाटो (Bold) करवामां आव्यो छे । परंतु आगल प्रस्तावनामां जोयुं तेम ४१मी गाथा द्वारा आ कृति उपाध्याय श्रीयशोविजयजीनी होवानुं सुनिश्चित छे । वली, ते प्रकाशित पुस्तक पण श्रीयशोविजयजीनी कृतिओना संग्रहनुं ज पुस्तक छे । आथा 'चिदानंद' शब्दने घाटो करवानी कोइ जरूर नथी ।

शब्दकोश

कडी क्रमांक	शब्द	अर्थ
५	सांसहइ	सहन करे
५	व्यापो	विस्तार
६	क्रम	पग
७	परिजन	अन्य व्यक्ति
१३	पात	पत्र-पांदडुं
१५	खरीदार	खरीदी करनार
१७	दंत	दान्त-इन्द्रियो उपर संयम राखनार

२०	आधाकर्मादिक	जैन साधुना गोचरीना दोषो
२२	एसण दोष	जैन साधुना गोचरी संबंधी दोषो
२२	उद्देसी	जैन साधुनो गोचरीनो एक दोष
२२	त्रीछा	तिर्छा-समांतर दिशामां रहेला
२३	पूति	जैन साधुनो गोचरीनो एक दोष
२७	पंडितमानी	पोतानी जातने पंडित माननारो
२८	माछा	माछली
३२	बीजइ अंगइ	बीजा आगमग्रंथमां
३३	भामणडइ जईइ	ओवारणां लइए
३७	अछेरुं	आश्चर्य
३८	पूज	पूजा-प्रभावना

पं. दोलतरुचि-कृत
१२० कल्याणक पूजा

– पं. सुजसचन्द्रविजयगणि
गणि सुयशचन्द्रविजय

कृतिपरिचय :

स्तुति, स्तवन, थोई वगेरे साहित्यप्रकारनी जेम ज भक्तिविषयक साहित्यनो एक विशिष्ट प्रकार ते पूजासाहित्य । अन्य भक्तिकाव्योनी जेम अहीं पण प्रभुना जीवनचरित्रने, तेमना गुणवैभवने, अतिशयादिना स्वरूपने गुर्जर भाषामां गुंथवामां आवे छे । जो के विशेष एटलुं के अहीं ते विषयोने विस्तृत स्वरूपे, विध-विध रागोमां के देशीओमां संदृब्ध कराय छे । प्रस्तुत सम्पादनमां आपणे ते ज साहित्यप्रकारमां रचायेली "१२० कल्याणक पूजा" नामनी कृतिनो परिचय करीशुं।

आपणे त्यां तीर्थङ्करोना च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान तथा निर्वाण - ए पांचेय दिवसो विशेष कल्याणने करनारा होई कल्याणक तरीके ओळखावाया छे। एक जिनेश्वरना पांच एम चोवीस जिनेश्वरोने आश्रयी १२० कल्याणकनी गणतरी कराय छे । प्रस्तुत कृतिमां कृतिकारे आ रीते ज चोवीस तीर्थङ्करोनां ५-५ कल्याणक गणी १२० कल्याणकनी वर्णना करी छे । जो के अहीं कल्याणकोनी वर्णनानी साथे-साथे कविए प्रत्येक परमात्मानुं च्यवन क्यांथी थयुं ते स्थाननी, प्रभुना माता-पिता तथा गामना नामनी, प्रभुना निर्वाणस्थाननी तथा सह निर्वाणप्राप्त मुनिओनी संख्यानी, तथा तीर्थङ्करो वच्चेना आन्तरादिनी वर्णना पण करी छे ।

ते सिवायनी विशेष विगतोमां क्यांक कविए १ समये १०८ सिद्ध थयानी के असंयती-पूजाना अच्छेरावाळी विगत नोंधी छे, तो क्यांक 'शासनदेवी वडे चारित्र ग्रहण करवानी विनंती करायानी विगत आलेखी छे. क्यांक वळी तेमणे कल्याणक भूमिनां चैत्यो वांद्यानी ऐतिहासिक नोंध रजू करी छे, तो क्यांक प्रभु वडे करातां सांवत्सरिक दाननी, अष्टप्रकारी पूजाना लाभोनी, केवलज्ञानी परमात्माना उपदेश विगेरेनी सैद्धान्तिक विगतो वर्णवी कृतिमां घणुं विषयवैविध्य दर्शाव्युं छे ।

कृतिना अन्तमां कविए पूजामां करवानो जुदो आरती-मंगळदीवो आलेखी 'सांझनी रचना विगत'मां जिनेश्वर परमात्मानी आगळ स्तवनारूपे करातुं **लावणी** संज्ञक काव्य आलेख्युं छे । लावणी पछी अन्य कृतिमां **तीर्थमाळा** नामनी लघु

कृतिनो पण अहीं समावेश करायो छे । आ कृतिमां कविए डीसा नगरथी निकळेला समेतशिखरजी(?) तीर्थयात्रा संघनी वर्णना करी छे । तेमांय कविए पोते पोताना गुरु भगवन्तनी निश्रामां आ यात्रा करी होई कृतिनी विगतो दस्तावेजी गणाय।

कृतिकार-परिचय :

प्रस्तुत कृति **पं. दोलतरुचिनी** रचना छे । कृतिमां अन्ते पोतानी परम्परा आलेखता पोताने **हीरावत**शाखाना **पं. दलपत-लालरुचि**ना शिष्य जणाव्या छे । जो के तेओ आगळ कई परम्परा साथे जोडाया छे तेनी काव्यमां कशी नोंध नथी । ते छतां कृतिमां आलेखित हीरविजयसूरिनी परम्पराना विजयराजसूरिजीना राज्यमां, विजयलब्धिगुरुनी सहायथी तथा गौतमविजयना आग्रहथी कृति रचायानी विगत, कृतिकार तपागच्छमां थया होय तेवुं अनुमान करावे छे । कृतिकारे पोतेज प्रतनी लेखन प्रशस्ति तथा रचना प्रशस्तिमां संवत्नुं आलेखन कर्युं होई तेमनो ते ज सत्ता समय निर्धारित थाय छे ।

कृति कर्ता द्वारा ज लखाई होवा छतां तेमां भाषाकीय अशुद्धिओ पण सारी एवी छे । आवुं थवानुं कारण कदाच कृति बोल-चालनी भाषामां लखाई होय तेवुं पण गणी शकाय ।

प्रत परिचय :

प्रस्तुत कृतिनुं सम्पादन पलासवा संघ ज्ञानभण्डारनी हस्तप्रतना आधारे करायुं छे । कृतिनी हस्तप्रत कृतिरचना पछीना आठमा वर्षे कर्ता द्वारा डीसामां ज लखाइ छे । कुल १३ पानांनी आ प्रत कांइक मोटा अक्षर लखायेली । प्रत्येक पत्रमां १४ जेटली पंक्ति तथा ४२-४४ जेटला अक्षरो लखाया छे ।

सम्पादनार्थे कृतिनी हस्तप्रत नकल आपवा बदल पलासवा संघ ज्ञानभण्डारना व्यवस्थापकोनो तथा प.पू. आ.श्रीमुक्तिचन्द्रसूरिजी तथा पू.आ. श्रीमुनिचन्द्रसूरिजी म.सा.नो खूब खूब आभार ।

*

॥ अथ एकसो वीस कल्यांणिक पूजानी वीधी लिख्यते ॥

प्रथम शुभ दीवस जोई चैत्यमध्ये अथवा बीजे स्थान पवीत्र जग्या जोई पभासणनी रचना करवी । चंद्रुआ पुंठीयां अमोलक वस्त्रे जग्या दीप्तमान करवी । ते पभासण उपर चउवीसे धातुना बिंब थापीयें । तेहने आगले त्रीगडो मांडीए । ते उपर चउवीसथानी प्रतीमा धातूनी थापीये ।

पछे स्नात्रीया जण ५ आंबील एकासण बेयासण तप धारण करी अभिषेक कारण आवी जिन आगल उभा रहे । एक जणना कर मध्ये सुवर्ण त्था रूपानी रकेबीमध्ये फल, फुल, अक्षत लेई चवनकल्यांणीक पूजा करे। बीजा स्नात्रीयाना कर मध्ये रकेबी कंचोलायुक्त रजतकलश नीरमल जल पंचामृतथी भरी अने दरपण लेई जन्मकल्यांणिक पुजा करे । त्रीजा स्नात्रीयाना हाथ मध्ये रकेबीमें अंगलुणां १ धुप २ वास ३ लेई दीक्षाकल्यांणीक पूजन करे । चोथा स्नात्रीयाना करमध्ये धजा १ दीप २ चामर ३ लेई श्रीकेवल कल्यांणीक पूजा करे । पंचम स्नात्रीयाना कर मध्ये नीवेद्यनो थाल भरी मोक्ष कल्यांणीके नीवेद्य पूजा करे ।

इंम एकेक तीरथंकरना पंच पंच कल्यांणीक चउवीस जिननां पूजवा एटले चउवी[स] पंचा वीसा-सो, एकसो वीस कल्याणीक पूजा थाए । कलस पूजा पचीसमी ते चउवीसे समक्ष भेला अभिषेक करी अष्टप्रकारी पूजा कीजे अने १२१ नागरवेलना पत्र उपर स्वस्तीक १२१ करवा । प्रतेक प्रतेक स्वस्तिक उपर श्रीफल द्रव्य रूपानाणुं मुंकीये । १२१ दीपक करीये । गोघृत पुरीये ।

प्रथम स्नात्र भणावी पछे पूजा प्रारंभीये । ए पूजा एकसो वीस कल्याणीक तप पुरण करी तप उजमतां ए पुजा भणावीये तप-फल वृद्धी थाये। पुजानी ढाल वांची रह्या पछे प्रथम चवन पुजन १ बीजी जन्म २, त्रीजी दीक्षा ३, चतुर्थ कैवल ४, पंचम नीरवांण पूजा-ए पांचकल्यांणीकनी पांच पूजन करीये । वीसेस आगमथी, पंडित गुरुथी धारण करीये । ते माहरो अपराध खमी सुधारजोजी ।

एकसो वीस कल्याणक पूजा

॥ ६०॥ श्रीजिनाय नमः ॥ अथ एकसो वीस कल्यांणिक पूजा लक्ष्यते ॥

दुहा- श्री**पार्श्वनाथ** त्रेवीसमा, **सामलीया** जिनराज ।
परतस(ख) परचो पेखीयो, **मधुवन** अधीक दिवाज ॥१॥
तेहना पय प्रणमी करी, त्रीकरण-सुध प्रभाव ।
अथाह समुद्र तेहथी, तारण भवजल-नाव ॥२॥
सेवुं सदगुरु सारदा, प्रेमे तस भीम पाय ।
बलीहारी गुरुदेवकी, राजनके महाराय ॥३॥
मुझ मन एहवो भाव छे, करवा वचन वीलास ।
कल्यांणिक पूजा रचुं, आपो ज्ञांन-प्रकास ॥४॥
दोय पचासें वेढीयो, कोइक नवो कोठार ।
बाथां भरीनें काढतां, कीणही न लाधो पार ॥५॥
तो पीण गुरुकृपा करी, उत्पन हरख अपार ।
कल्यांणिक जिनराजनां, थयां तेहनो वीस्तार ॥६॥
वीबुध नरे ग्रंथ ज रच्या, नाना वीवीध प्रकार ।
तेहमां स्थिती जिनतणी, कही आगम अनुसार ॥७॥
हु पीण नीज बुधे करी, अल्पमतीसुं जेह ।
गुण गाऊ अरीहंतना, रचना रचस्युं तेह ॥८॥
चवन जन्म दीक्ष्या वरी, ज्ञांन अने नीरवांण ।
पंच पंच एकेकनां, कल्यांणिक ते जांण ॥९॥
इम चोवीसे जिन मली, एकसो वीस ते थाय ।
पूजा द्वादस भावना, करतां शिवपुर-ठाय ॥१०॥

॥ ढाल-१ ॥ प्रथम पुरवदीसी० - ए देसी ॥

प्रथम **अयोध्यापुरी, सव(व्व)ट्ठथी** उतरी,
सागर तेत्रीस पुरण करी ए ।
तात **नाभिराय** ते, **मरुदेवी** माय ते,
तेरमे भव प्रभु अवतरी ए ॥१॥

चवन कल्याणके, फल फुल आणिके,
अक्षतपूजन विधिसु ए ।
चउदश सुपनथी, मान सनमानथी,
अनुक्रमे जन्म थयो ऋधीसु ए ॥२॥
कल्यांणिक जनमनो, देव अभिषेकनो,
जल चंदन भवीयण अरचना ए ।
राज-ऋद्ध भोगवी, ऋत सवी योगवी,
दीक्ष लेइ सीक्ष्य आपे जना ए ॥३॥
धुपपूजा कही, कर्ममलने दही,
त्रण कल्यांणक **वनिता** नयरीये ए ।
वीचरत भुतला, सहन परीसह भला,
पधार्या नाथजी **मतालापुरी**+ ए ॥४॥
अंतराय दुरें गयो, उद्योत केवल भयो,
दीपपुज चामर श्रधौंतणी ए ।
देव बहु आवीया, चओसठ भावीया,
ठावीया श्रीजिन त्रिगडा भणी ए ॥५॥
अपच्छर नाचती, नाथ गुण गावती,
मधुरध्वनी वांणी जिनजी कहें ए ।
उत्तम जोग्यता, वांणि नीज भोग्यता,
अढार कोडाकोडी सागर लहें ए ॥६॥
चउरासी गणधरा, बहु मुनी परवरा,
नीरवाण अवसरें **अष्टापदें** ए ।
एक अछेरु थयुं, सुणतां मन गहगयुं,
एक सत आठ सम सीधी वदें ए ॥७॥
कल्यांणिक पंच ए, सुणो भवी संच ए,
पीठ रची जिनबिंब थापीऐं(यें) ए ।
चोवीसे जिनवरा, ज्यौती झगमगधरा,
स्नात्र करतां दुख कापीयें ए ॥८॥

+ मताला=पुरिमताल। *अहीं कृतिमां 'द्ध'नी जग्याए घणे ठेकाणे 'ध'नो प्रयोग करायो छे.

नीवैद्य बहु भातथी, करतां अति खांतथी,
मीथ्या भरम दुर वामीयें ए,
ऋषभ गुण गावतां, भावना भावतां,
सास्वती **दोलत** पांमीयें ए ॥९॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**ऋषभ** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।
ए मंत्र पूजा प्रते कही पछे अभिषेक करवो ।

॥ इति प्रथम अभिषेक पूजा ॥

दुहा- **अयोध्या** नयरी भली, **जीतसत्रु** भुपाल ।
वीजया रांणी तेहनी, वसीया गर्भे कृपाल ॥१॥
वीजयवीमांनथकी चवी, ज्ञांन-तीन-संयूक्त ।
नमो नमो जिनराजनें, पुण्ये महाबल-भुक्त ॥२॥
कल्यांणिक पंच ज भला, पंचमगती-दातार ।
फुल नें अक्षत फल धरी, चवननी पुजा सार ॥३॥

॥ ढाल-२जी ॥ आसण राय योगी० - ए देशी ॥

जनम्या **अजित** जिणेसर चारु, महीमंडल हीतकारु रे,
मन वसीया स्वामी ।
पहीला बीजा वीचें लाख पंचास, कोडी सागर अंतर खास रे,
मन वसीया स्वामी ॥१॥
चोसठ इंद्र मीली ते सघला, अभिषेक सुरगीर वीमला रे, मन... ।
सरवे तीरथंकरनी माता, चउद सुपन वीख्याता रे, मन... ॥२॥
स्तवना करी जननी खोलें, अरिहाने मुकी अमोलें रे, मन... ।
रत्ननी वृष्टि करें निज मोजें, छपन दीगकुमरी छोजें रे, मन... ॥३॥
लाड लडावें खेल खेलावें, दीन दीन अधिक वधावें रे, मन... ।
इम करतां वीलसें राज-रीधी, जुझ्या बुझ्या दीक्षा लीधी रे, मन... ॥४॥

स(छ?)दमस्त पाली पाप पखाली, श्रीकेवलज्ञांन संभाली रे, मन... ।
इंद्र मीली देव त्रीगडुं रचता, वांणी सुणी गहगहता रे, मन... ॥५॥
च्यार कल्यांणिक नयरी वनीता, नीरवाण **सीखरजी** पोहोता रे, मन... ।
भक्ति भवीयण **दोलत** रंगें, जिनचरण पूजन उमंगे रे, मन... ॥६॥

काव्य–सकलतीर्थकृतां चवनं जनि–वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र– ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म–जरा–मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**अजित** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति द्वितीय अभिषेक पूजा ॥

दुहा– **भद्दे(द्द)** नाम ग्रीवेकथी, तेवीस सागर आय ।
पाली नीरुपम त्यां थकी, **सावथ्थी** जस पाय ॥१॥
भूप कहीए **जीतारी**जी, **सेना** रांणी जेह ।
चवीया संभवनाथजी, चरणांबुज नमु तेह ॥२॥
हीत करी करीयें पूजना, गुण–ग्राहक ते जोय ।
चवनपूज्य(जा) फल फुलनी, अजर अमरपद होय ॥३॥

॥ ढाल–३जी ॥ नमो रे नमो श्रीसत्रुंजयगीरी रे. – ए देसी ॥

नमो रे नमो श्री**संभव** जिना रे, ध्यांन धरमथी राग रे ।
आणी मारग विरतीयें रे, अजव मदव त्याग रे ॥१॥ नमो...
जन्म थयो जिनराजनो रे, ओछव अधीक मंडाण रे ।
धन कण कंचन अति घणा रे, संख्य नही सुजांण रे ॥२॥ नमो...
देव हुलरावें रमाडता रे, अरिहानी भक्ति कहाय रे ।
बालक भाव–वीरक्तथी रे, राज–रमणी वीलसाय रे ॥३॥ नमो...
सासनदेवी आवी कहे रे, चारीत्र अवसर जांण रे ।
इंम सांभली संवछरी रे, आपे दांन प्रमांण रे ॥४॥ नमो...
कोड एक अठ लख भला रे, प्रतिदीन प्रहर प्रभात रे ।
मास द्वादश सुधी[दी?]यें रे, जनमन रंजे वीख्यात रे ॥५॥ नमो...

सरवे सोनैया संख्या कही रे, तीन अरब अठ्यासी कोड रे ।
असी लाख उपर कह्या रे, अरिहानी करे कुण होड रे ॥६॥ नमो...
दांन देइ दीक्षा लीइं रे, जीत्या अरिअण आठ रे ।
केवलकमला पांमीया रे, जग-त्रयमां गहगाट रे ॥७॥ नमो...
चवन जन्म दीक्षा वरी रे, ज्ञांन सावथी(थ्थी)ए च्यार रे ।
कल्यांणिक पंचमें चढ्या रे, **समतसीखरजी** प्यार रे ॥८॥ नमो...
पंच कल्यांणिक पूजीए रे, जांणि धरम-सनेह रे
सू(जू)ठ डफांण परीहरी रे, वधे **दोलत** गुणगेह रे ॥९॥ नमो...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**संभव** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति त्रतीय [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **जयंत** नाम वीमांनथी, **वनीता**ए आवें ।
चवीया तेही ज जामनी, मात सुपन पावें ॥१॥
इंद्रा(द्र आ?)सनथी उठीने, सक्रस्तवी भावे ।
देवलोक जांणी रही, चवननी भक्ति कहावे ॥२॥
पीता **संवर** राजीयो, मात **सीधारथी(था)** नाम ।
एहवा जिनजी वंदीए, त्रिकरण राखी ठाम ॥३॥

॥ ढाल-४थी ॥ वीवाहलानी देसी, त्था सुर सांभलीने संचरीया० - ए देसी ॥

भयो जन्म अरिहाजीनो, देवें मनोरथ कर्यो नगीनो ।
तात मात ज्ञाति जिमावे, **श्रीअभिनंदन** नांम थपावें ॥१॥
त्रीजा चोथा वीचें अंतर जांणो, लख दस कोडी सागर प्रमाणो ।
अतीसयवंत महंत जे स्वामी, करुणासागर अंतरजामी ॥२॥
रमणी राज अथिर जे जांणी, चरण ग्रहयुं भवी तारण प्रांणी ।
इम अनुक्रमे केवल पायो, तत्त्वबोध करी धर्म बतायो ॥३॥

अजोध्याए च्यारनी प्राप्ति, क्षेत्र फरसण हुस जे व्याप्ति ।
जिनवाणी सुणवा घणु रागी, तेह तणा गया प्राचित भागी ॥४॥
सहस मुनी-परीवारे सोहता, **सीखरगीरी** जई मोक्षे पोहो(ह)ता ।
अष्ट गुणे युक्त सीधराज, योतीस्वरूपी अधिक दीवाज ॥५॥
माहरी वेला प्रभु अलगो वसीयो, पंच कल्यांणिक पुजवा रसीयो ।
त्यां बेटा(ठा) अरजी सुणी लीजे, **दोलत** दीलासा जरुरी दीजे ॥६॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**अभिनंदन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति चोथी अभिषेक पूजा ॥

दुहा- **कोसल्या** नयरी भली, **मेघ राय** सुभ जांण ।
तेहनी रांणी **मंगला**, गर्भे रह्या परमांण ॥१॥
जयंतवीमानथी चवी, चवन लक्षण जे होय ।
अभिनंदन सुमती वीचे, अंतर कह्यो ते जोय ॥२॥
नव लख कोडी सागरे, जन्म्या श्रीजिनराज ।
चवन जन्म कल्यांणिके, सीस नमावुं आज ॥३॥

॥ ढाल-५मी ॥ सांभल रे तू सजनी मोरी रजनी क्यां० - ए देसी ॥

सहस एक नें आठ ते उपर, लक्षीत देही सोभेजी ।
जन्म थयानो मोछव करवा, अपछरी(रा) कीन्नरी थोभे ॥१॥
भवी जिन भजीयेजी रे, कुड कपट दुर तजीऐं (आंकणी) ।
राज रामा सुख वीलसी साहेब, संजमव्रतनो भारजी रे ।
लेई वीचर्या भूतल उपर, करता जन-उपगार ॥२॥ भवी...
वीहार करी **वनीता**ए पधार्या, पांम्या केवलज्ञांनजी रे ।
च्यार कल्यांणिक थयां वनीताए, धरीये सुभ परें ध्यांन ॥३॥ भवी...

अणसण करवा **समतसीखर**जी, साथे जती हजारजी रे ।
नीरवाण पोहोता **सुमती** जिणेसर, नीवेद्य मुकीयें सार ॥४॥ भवी...
पंच कल्यांणीक पुजा करतां, च्यार गती करे अंतजी रे ।
पंचमगतीनी प्राप्ति थावें, **दोलत** हरख धरंत ॥५॥ भवी...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**सुमतीजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति पंचमी अभिषेक पूजा ॥

दुहा- **कोसंबीए** आवीया, नूंमा **गृ(ग्रै)वेग**थी जांण ।
एगत्रीस सागर आउखू, पाली चवीया सुजांण ॥१॥
धर नृपती रामा **सु[सी]मा**, उदरें कीध वीश्रांम ।
पुरण दिवसे जनमीया, तोरणमाला-धाम ॥२॥
पंचम जिन छठा वीचे, अंतर कह्यो उतंग ।
नेउ सहस कोडी सागरां, वंदु चरण उमंग ॥३॥

॥ ढाल-६ष्ठी ॥ पारधीयानी देसी ॥

अनुमती लेई दीक्षा वरी रे, परमेश्वर निग्रंथ रे मनवसीया ।
पंच माहाव्रत पालता रे, साधन करी शिवपंथ रे गुणरसीया ॥१॥
भूतल वीचरे जगधणी रे, करता जन-उपगार रे मन... ।
घनघाती उछेदीया रे, उपनो ज्ञांनप्रकार रे गुण... ॥२॥
तीन भूवनके नाथजी रे, समवसरण मंडाण रे मन... ।
सुर नर कीन(न्न)र आवीने रे, वीनय करें जिनभांण रे गुण... ॥३॥
भवीक मन आस्या फली रे, तत्त्वबोधथी ताम रे मन... ।
कल्यांणिक चारे हवा रे, नयरी **कोसंबी** ठाम रे गुण... ॥४॥
द्रव्य भावथी अरचिए रे, चरण-कमल चित आण रे मन... ।
समतसीखर मुक्ति वर्या रे, अचल थया नीरवाण रे गुण... ॥५॥

तीनसें साते संजमी रे, अधिक कह्या छे आठ रे मन...,
पद्मप्रभु ते जोई रह्या रे, दीलरंजन जग-ठाठ रे, गुण... ॥६॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥

ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**पद्मप्रभ** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति छठी अभिषेक पूजा ॥

दुहा- आठमा **गृ(गै)वेग**थी, चवीया स्वांमी **सुपास** ।
वना(णा)रसी नयरी भणी, पें(पइ)ठ नरेसर खास ॥१॥
पोहवी माता उरे जयो, उत्पन्(?) माहरो नाथ ।
जन्म थयो जिनदेवनो, करता शिववहु हाथ ॥२॥
छठा जिन सप्तम वीचें, अंतर कह्यो छे एह ।
नव सहस्र कोडी सागरु, पंच-अंग नमुं तेह ॥३॥

॥ ढाल-७मी ॥ कंत तमाखु परीहरो० - ए देशी ॥

श्री**सुपास** जिन सातमा, नामथी नीरमल काय मेरे लाल ।
खेत्र कल्यांणिक फरसतां, अधिक अधिक स(सु?)हाय मेरे लाल ॥१॥
वंदो पुजो बहु भावथी (आंचली) ।
चवन जन्म संजम ग्रह्युं, लह्युं केवल श्रीकार मेरे... ।
त्रीगडे बीराजत योति झ(ज)गे, कृपाल दयाल सुवीचार मेरे ॥२॥ वंदो...
भदनी घाट पर सोभतो, चैत्य तीहां वीसाल मेरे... ।
च्यार कल्यांणिक भूमीका, नमतां रंग-रसाल मेरे... ॥३॥ वंदो...
मुनी साथे सत-पंचसु, सीध्या **सीखरजी** कहाय मेरे... ।
ए पंचे वीसाखाए थयां, कह्यां आगमें देखाय मेरे... ॥४॥ वंदो...
कर जोडी सन्मुख रही, फल दीप धुप पुज लेई मेरे... ।
उपगारी ए जगधणी, सास्वती **दोलत** देई मेरे... ॥५॥ वंदो...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**सुपास** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति सप्तमी अभिषेक पूजा ॥

दुहा- **जयंत**वीमांनथी चवी, तीन भुवन प्रतीपाल ।
जनेता कहीये **लखमणा, महसेन** खुसीआल ॥१॥
नवसे कोडी सागरां, अंतर थयो नीरदोस ।
सप्तम जिन अष्टम वीचें, जन्म थयो संतोस ॥२॥
उन्यत करता आपणी, दीन दीन वधते वान ।
दांन देइ दीक्षा लही, नमो नमो तूम ज्ञांन ॥३॥

॥ ढाल - ८ ॥ जांझरीयानी देसी ॥

चंद्रप्रभ सोहामणाजी, दरसणथी मनरंग ।
चंद्रपुरीए भेटीयाजी, च्यार कल्यांण अभंग ॥१॥
मनमांन्या मोहन सुणजो ए अरदास (आंकणी) ।
चरणकमलनी सेवनाजी, सुर नर अपछर-व्रंद ।
अष्टप्रकारी पूजन करतां, भवीयण मन आनंद ॥२॥ मन...
नाथ नीरंजन मुखनी वाणी, सुणतां भावठ जाय ।
पंचम काले तीरथयात्रा, करतां पाप जलाय ॥३॥ मन...
ज्ञांनी वीरहो आवी पडियो, ते मुझने न खमाय ।
प्यारा प्रभुजी अरज सुणीनें, आपज्यो पुण्य-पसाय ॥४॥ मन...
पोते मु(म)तलब पुर्णा(र्ण?) कीधी, **सीखरजी** चढीया शृंग ।
सहस मुनी परीवारे सीध्या, लीनी **दोलत** सुरंग ॥५॥ मन...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**चंद्रप्रभ** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति अष्टमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **आनं(न)त**कल्पथकी चवी, **काकंदीपुर** ठाम ।
मात रूडी **रांमा** कही, **सुगृ(ग्री)व** तात सुनाम ॥१॥
नव कोडी सागरं(र-अं)तरे, **चंद्रथी सुवीधी** होय ।
मुल नक्षत्रे जनमीया, एहथी अधिक न कोय ॥२॥
राजऋद्ध ते भोगवी, वरीया संजम सार ।
च्यार कल्यांणिक वंदतां, तार तार भव तार ॥३॥

॥ ढाल-९मी ॥ चं(वं)द्रावन के वासी रे वीठल ते मुझनें नीवारी० - ए देसी ॥

जीनजीको ध्यांन धरेवो मेरे प्यारा (आंकणी)
सुवीधी जिणेसर वीधीसु पुजो, गुरु-आणा संग लीजे ।
अतिचार लगे नही तेहवो, वीसय कसाय जीपीजे ॥१॥ मेरे...
करम खपावी केवल लीनो, जीतनी बाजी पांमी ।
केवल-पूजा धूप उखेवी, वांणी सुणो मोह वांमी ॥२॥ मेरे...
चवन-पूजा अक्षत ढोवो, अक्षयसुख मीलावें ।
जल चंदन जन्म-कल्यांणें, करतां नीरमल थावें ॥३॥ मेरे...
संजम-पूजा वास सुगंधे, चारीत्र सुध सोहावें ।
दीपपुजा केवल महीमा, ज्ञांन ते बोध पमावें ॥४॥ मेरे...
मोक्षनी प्राप्ति नीवेद्य करतां, क्षूधावेदनी नावे ।
आवे तप उदये थीर मन, करम-कष्ट मीटावें ॥५॥ मेरे...
समतसीखरजी आत्म-आनंदे, वरीया मुक्तिनारी ।
सहस एक मुनीजन साथें, लीधी **दोलत** सारी ॥६॥ मेरे...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**सुवीधी** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति नवमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- कल्प **प्राणं(ण)त**नो कह्यो, सागर आयु वीस ।
पुरण करी चवीया प्रभु, **नंदन**(नंदा-)-नंद जगीस ॥१॥
दृढरथ नरपतीनें कुलें, **शीतल** सीतल नाम ।
कोडी सागर नव अंतरो, नवम दसम वीचे जाम ॥२॥
अछेरु बीजु थयुं, धीजजाती मनाय ।*
मीथ्या दुरे हठाववा, **भद्दीलपुर**में आय ॥३॥
जन्म थयो जिनराजनो, सुर मीली करता नाच ।
नमो नमो जगतातनें, अवीचल जेहनी वाच ॥४॥

॥ ढाल-१०मी ॥ देसी - रसीयानी ॥

पंच कल्यांणिक महिमा मनोहरु, जिन तिह काले रे पंच सुरंगा ।
एक चउवीसीनां मीली एकठां, एकसो वीसनो रे संच सुरंग ॥१॥ पंच...
जिन जन्म्ये सुरवरगीरी लेई, नवण करी सुध देव सुरंगा ।
परमातम मुझ परमेस्वरु, सुर नर सारे रे सेव ॥२॥ पंच...
सुर नदी **मागध प्रभास**ना, **वरदाम** खीर-जल लेव सुरंगा ।
न्हवरावें देव जिणेसरु, तिम भवी भावें रे भेव ॥३॥ पंच...
पुजा करतां पावन आती(त)मा, पुरव कोडी रे करम सुरंगा ।
क्षय होवे नीरमल भावथी, उपसम जांणी रे मरम ॥४॥ पंच...
दीक्ष्या लेइ केवल पामीया, सनमान्या भवी सुध सुरंगा ।
मोक्ष वरवा गढ **सीखरजी**ए, कह्युं ग्रंथोक्ते रे वीबुध ॥५॥ पंच...
साथें संजमी सत दश कह्या, सीद्धनुं ध्यांन रे धरंत सुरंगा ।
अनंतानंत सुख प्राप्ति थयुं, जन्म जरानो रे अंत ॥६॥ पंच...
सात राज उपर जइ रह्या, तूम मीलवानी रे हुस सुरंगा ।
स्ये योगें मीलवुं थस्ये आपथी, कहीजो दयालुं रे खूस सुरंगा ॥७॥ पंच...

---

* 'असंयती पूजा'ना संदर्भे आ पंक्ति लखाई होवानुं समजाय छे ।

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**शीतलजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति दशमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- बारमा कल्पनुं कह्युं, बावीस सागर आय ।
त्यांथी चवीया जिणंदजी, **सीहपूरी** मन भाय ॥१॥
वीष्नु माता विष्नु पीता, तस कुल घर गहगट(ट्ट) ।
आपद हरता आपणी, त्रणे ज्ञांन प्रगट(ट्ट) ॥२॥
शीतल श्रेयांस वीचे अंतरो, एक कोडी सागर जेह ।
तेहमां ओछां वरस ए, एकसो सागर तेह ॥३॥
लाख छासट्ठि सहस षट, एतां उणां जांण ।
जन्म थयो **श्रेयांस**जी, तिमिर-हरणकुं भांण ॥४॥
सुख वीलसी संसारनां, वरसीदान मन धार ।
दीक्ष्या लीधी रूअडी, न्मो(नमो) न्मो(नमो) जगतार ॥५॥

॥ ढाल-११मी ॥ ललनांनी देसी ॥

श्री**श्रेयांस**जी वंदीए, जगत-सीरोमणी नांम ललनां ।
दान अभय दाता कह्या, सुर नर कहे मुझ स्वांम ॥१॥ श्रीश्रेयांस...
दीक्षा ग्रही घनघातीयां, दुर गयां दुख-दु(पू?)र ललनां... ।
केवलज्ञांन ते उपनो, वाज्यां मंगल तूर ॥२॥ श्री...
च्यार कल्यांणिक **सीहपुरी**, थयां जांणीजे आज ललनां ।
चैत्य चरणमें भेटीया, वांछित मीलीयां काज ॥३॥ श्री...
क्षेत्र-फुरसणा तप करी, पुजा भणावीए सार ललनां ।
यूक्तिए द्रव्य भावें करी, तप उजमणो उदार ॥४॥ श्री...
पंच कल्यांणिक अती भला, पूजन वंदन नैत(त्य) ललनां ।
देव सदा **दोलत** लेइ, पूजें सास्वत चैत्य ललनां ॥५॥ श्री...

सहस एक मुणिंदसुं, अतीसयवंत महंत ललनां ।
अणसण लेइ शिव वर्या, जोतीमां जोती समंत ललनां ॥६॥ श्री...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**श्रेयांसजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति इ(ए)कादशमि [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- देवलोक **प्राणं(ण)तथी**, **चंपापुरी**मे वास ।
वासुपूज्य वसीया घरे, माता **जया**-कुल खास ॥१॥
चउपन सागर अंतरो, **श्रेयांस** वीचे **वासुपूज्य** ।
जनम थयो जिनराजनो, नमतां आनंद मुझ ॥२॥
राज्य भोगवि मगन थि(थइ), अथिर जांणि संसार ।
स्वहस्ते संजम ग्रहि, माहाव्रत कहिइं च्यार ॥३॥
वासुपूज्य चंपापुरी, पंच कल्यांणिक जोय ।
विधिपूर्वक आराधीइं, अष्ट कर्म दुरें होय ॥४॥

॥ ढाल-१२मी ॥ सुण प्रांणिजी रे० - ए देशी ॥

महाव्रत लेइ वीचर्या सुण प्रांणिजी रे,
भुवीमंडल विख्यात, सुखनां सात सुण प्रांणिजी रे ।
बाविशि मन लेरथी सुण...,
जीती क्षण एक मांहें, बहू बल बांहें सुण... ॥१॥
करम-रीपू हठावीया सुण...,
केवलज्ञांन पवीत्र, उपनो विचीत्र सुण... ।
देव घणा आवी नम्या सुण...,
त्रिगडू बनाव्युं सार, अती मनोहार सुण... ॥२॥
वासुपूज्य बिराजता सुण...,
उपदेश वांणि रसाल, झाकझमाल सुण... ।

दश दृष्टांते दोहिलो सुण...,
उत्तम नर उदार, मिलतां प्यार सुण... ॥३॥
पामीनें नवी हारीयें सुण...,
केवली-भाषीत धर्म, जांणि मर्म सुण... ।
गुरुआणाथी चालीए सुण...,
नगुरें धर्म न थाय, सुणो हित लाय, सुण... ॥४॥
चउरासी आसातना सुण...,
करस्यो नही कोय काल, दुरगती टाल सुण... ।
वीनय आदरी सुलक्षणा सुण...,
तीर्थभक्ति चीत धार, ए उपगार सुण... ॥५॥
केई जग प्रांणी तारीया सुण...,
भमतां भव भगवंत, बोध दीयंत सुण... ।
उपगारी अरिहंतजी सुण...,
थापी चतूरवीध संघ, अंग उमंग सुण... ॥६॥
बहोतर लाख वरसनुं सुण...,
पुरण करी नीज आय, शिवपूर जाय सुण... ।
पंच कल्यांणिक पूजवा सुण...,
चंपापूरीए पंच, भवी मन-संच सुण... ॥७॥
दोलत कहीयें लक्ष्मी सुण...,
सक्ति भक्ति अनुमान, वधी ए वान सुण... ।
गुणगण प्राप्ति प्रार्थना सुण...,
जिन दरसण नीहाल, मंगल माल सुण... ॥८॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**वासुपूज्य** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति द्वादश [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **सहसार** देवलोकनुं, सागर आयु अढार ।
पुरण करी त्यांथी चवी, **स्यामा** सतीयां सार ॥१॥
कृतब्रह्मा(वर्मा) कुल उजलो, **कंपीलपुर** राजान ।
जन्म थयो **वीमले**सनो, नमतां वाधे वान ॥२॥
राजनी लीला लेरथी, युक्त भोग संजोग ।
परमातम त्यागी थया, साध्यो संजमयोग ॥३॥

॥ ढाल-१३मी ॥ वीचरे पूर्व वीदेहमां सुखकारी रे सा० - ए देसी ॥

वीमल जिणेसर जगधणी हीतकारी रे जिणंदजी,
तीन भुवन आधार रे अनंत गुणधारी रे जिणंदजी ।
उपदेसें उपगारीया हीतकारी रे जिणंदजी,
करता उग्र विहार रे अनंत गुणधारी रे जिणंदजी ॥१॥
अरीयण परठ्या उछेदीनें हीत..., केवलज्ञांन लीयंत रे अनंत... ।
हरीकृत आसण बेसीनें हीत..., अधीक अमृतथी दीयंत रे ॥२॥
अष्ट प्र(प्रा)तिहारय भला हीत..., चोत्रीस अतिसयवंत रे अनंत... ।
पणत्रीस वाणी गुणाकरु हीत..., मुझ मनमान्या तंत(कंत?) रे अनंत... ॥३॥
जगगुरु एहवा सेवीए हीत..., भमतां भेट्या आज रे अनंत... ।
केसर चंदन मृगमदे हीत..., चरण पूजू जिनराज रे अनंत... ॥४॥
पुष्प घटा धुप दीपनी हीत..., अक्षत फल नीवेद रे अनंत... ।
एह पूजा नीरप(पे?)क्षथी हीत..., करतां वारे त्रण वेद रे अनंत... ॥५॥
वासूपूज्यथी **विमलजी** हीत..., चउपन्न सागरे सीध रे अनंत... ।
छ सहस मुणिंदसु हीत..., **सिखरजी** शिव ते लीध रे अनंत... ॥६॥
दोलत खजांनो अखंडनो हीत, विलसे अति सुख प्रेम रे अनंत... ।
प्रभु पसाए आवी मीले हीत..., मनवंछित ततखेम रे अनंत... ॥७॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**वीमलजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति त्रयोदशमि [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- देवलोक दशमाथकि, चविया स्वांमि **अनंत** ।
सिहसेन नृप कुलतीलो, **सुजसा** माता कहंत ॥१॥
थयो जन्म जिनेस्वरु, देव करे सहू कांम ।
प्रबल पुण्य प्राप्ति थयुं, जगगुरु वल्लभ नांम ॥२॥
अयोध्यामें अवतर्या, पंचे जिन मनोहार ।
कल्यांणिक ओगणीस थयां, में युक्ते कर्यो जोहार ॥३॥

॥ ढाल-१४मी ॥ ग्वालणि घरे गोकुल दुझे, अमृत खीर जमावे रे.
- ए देशी ॥

सूरगीर सीखरें सुरपती पूजें, चंदन अंगे लगावें रे, माहरा जिनवरनें ।
अष्टमंगल ठवी आरती दीवो, करता अधिक दीपावें रे, माहरा जिनवरने ॥१॥
लावी घरे माताने सूपी, रत्ननी वृष्टि करीने रे माहारा... ।
सदन दीपावी स्तुती करता, धीप जइ हरखिने रे ॥२॥
आठ दिवस अति मोछव सुविधें, करि निज कल्प सधावें रे माहारा... ।
जननि पोतानो पुत्र खेलावे, पालणिइं पधरावें रे माहारा... ॥३॥
सोना रूपानां रांमकडां लेई, हियडा उपर रमाडें रे माहारा... ।
कुंकणी केलां आंबाजी गलीया, साकर भेली चटाडें रे माहारा... ॥४॥
दोर साइ सोनानी अमुल्यक, हिचोलें हुलरावें रे माहारा... ।
इम दीन दीन प्रतें चढतें वानें, जी जी करत बोलावें रे माहारा... ॥५॥
बाल्य-अवस्ता ए रीतें योगवी, तेम सुख-भोगवी जीत्या रे माहरा... ।
संजम लेइ केवल वरीया, दोस अढार ते वीत्या रे माहारा... ॥६॥
सीखरजीए जइ सिधि पोहता, सागर नवनें अंतें रे माहारा... ।
वीमल अनंत वीचे ए जांणो, सप्त सहस मुनी शांतें रे माहारा... ॥७॥
इछा-पुरण दुख सवी चरण, **दोलत** संततिदाता रे माहारा... ।
पंच कल्यांणिक एह विध थुणतां, पूजाथी सुख साता रे माहारा... ॥८॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-र्वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**अनंत** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति चतूर्थ(दस)मी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **वीजय**विमांनथी चवी, **भानु**-नंदन जाण ।
मात **सुव्रता** भली कही, मानो वचन प्रमाण ॥१॥
धर्मनाथजी **रत्नपुरें**, जोहार्या जिनदेव ।
चउ कल्यांणिक ओछवे, पामें शिवपुर-मेव ॥२॥

॥ ढाल-१५मी ॥ द्वेष न धरीए लालन द्वेष न० - ए देसी ॥

जिनजीकु पुजो लालन जिनजीकु पुजो । (आंकणी) ।
गुण अनंत परमातम केरा, पूजा कर्याथी टाले भव भव फेरा
लालन जिनजीकु पूजो ॥१॥
सिद्धगतीए जइ थया अरूपी, केवलज्ञांनी सुधस्वरूपी लाल... ।
चरणनी सेवा करवा मन इछे, पंचमें कालें ज्ञांनी नही छे लाल... ॥२॥
पंचकल्यांणिक पुजा रचावी, नाटीक गीतसुं ठाठ बनावी लाल... ।
एकसो आठ मुनी साथें सुख वाध्यो, **समतसीखर**जी अणसण साध्यो लाल... ॥३॥
अनंत धर्म वीचे थयो अंतर, सागर च्यार ते भेद निरंतर लाल... ।
जिन-आणाथी सम्यक्त(क्त्व) साधे, योग-पंथसुं नीज गुण वाधे लाल... ॥४॥
भावठ भागें अनुभव जागें, चेतन सुणजो थइ रस-रागें लाल... ।
दोलतदाता मारु मन मोह्युं, जन्म जरानुं खांपण खोयुं लाल... ॥५॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**धर्मजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति पनरमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- चवीया **सवार्थसिधथी**, **हथीणाउर** दरबार ।
अचिरा माता सोभती, **वीश्वसेन**-कुलधार ॥१॥

जन्म कृतारथ साचवे, सुर नर मीलीया धाय ।
थाल भरी मुक्ताफले, वधाव्या सुखदाय ॥२॥
नमस्का[र] जिनराजनें, लल्लि(लि) लल्लि(लि) नमता पाय ।
ध्याता भक्तिभरातमा, भय सप्त क्षय जाय ॥३॥

॥ ढाल-१६मी ॥ नर चतूर सुजांण, पर-नारीसु प्रीत कबु न कीजीए० - ए देशी ॥

मनमंदिर स्वाम, **शांति** जिणेसर आवी दरीसण दीजीए (आंकणी)
दोय पदवी मोटी तूमे लीधी, पारेवा उगारी करुणा कीधी ।
सुरनें जीती सीख्या दीधी ॥१॥ मन...
गज रथ घोडा उलसीनें, श्री चोसठ सहस वीलसीनें ।
त्यागी थया मन सुलसीनें ॥२॥ मन...
भव ध्वा(द्वा)दसमें केवल लीनो, केई प्रांणीने सुख दीनो ।
जिनवचनेथी चेतन भीनो ॥३॥ मन...
शांतिकरण चाल्या स्वांमी, **सीखरजी**ए अणसण जामी ।
नवसें मुनीसु शिवगामी ॥४॥ मन...
शांति धर्म विचे अंतर भाख्यो, सागर तीन वीचे उणो दाख्यो ।
करता कल्यांणिक सुत्रें आख्यो ॥५॥ मन...
पंचम काल ते बहु दुखीयो, मुनी मारग घर घर अखियो ।
प्रभु तूम नामें थाउ सुखीयो ॥६॥ मन...
दोलत क्यंकर चित धरजो, करुणा रागथी उधरजो ।
भावपूजाथी भव-भय हरजो ॥७॥ मन...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-र्वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**शांतिजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति सोलमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **सर्वार्थसीध**थी आवीया, **कुंथू** जिणेसर देव ।
सिरि माता सोहामणी, **सुरराय** जस हेव ॥१॥
त्रिः(त्रि)जगपति जनमीया, नारकीमांहे उजास ।
दोय घडी साता कही, कल्यांणिक प्रकास ॥२॥
गजपूरमध्ये उत्पती, ओछव इंद्र सोहाय ।
तेम इहां भवी पुजीए, नमतां धर्म सोभाय ॥३॥

॥ ढाल-१७ ॥ सत्रुंजयगीरीके स्वामकुं मेरी जाकर कहीयो सलाम - ए देसी ॥

हो स्नेहा **कुंथू** जिणेसरस्वामकुं, मेरी पूजन करजो सवाय ।
जिम चेतन सुखदाय (आंकणी) ।
तीरथपती ए सुत्रे वद्यो, पूजा-करणी अधीकार ।
केसर कपुरें अगरथी, करीये सुध प्रकार ॥१॥ हो स्नेहा...
मोगर लाल गुलाबना, सेवंत्री जासुल फूल ।
सदा सोहागण दाउदी, करुणारागें अमूल्य ॥२॥ हो स्नेहा...
पुष्पजाती वीस्तारथी, रचना आंगी रचाय ।
जिनभक्ति उमंगें करतां, सुधरे आत्म-प्रजाय[१] ॥३॥ हो स्नेहा...
च्यार कल्यांणिक **गजपूरे**, थयां ते भावे भेट ।
सहस मुनि विस्तारे सीध्या, **शिखर**जी पोहता शिव नेट ॥४॥ हो स्नेहा...
शांतिथि अर्ध पल्योपमें, मोक्ष गया **कुंथुनाथ** ।
तारण तूं सा(स)मृथ धणि, **दोलत** छे प्रभु हाथ ॥५॥ हो स्नेहा...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**कुंथुजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति सतरमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- चोसठ मण मोती कह्युं, मध्य एक विस्तार ।
पाखल फरतां अर्ध अर्ध छे, पवन लेहर झणकार ॥१॥

---

१. पर्याय ।

ते सज्याथी चवीया प्रभो, **नागपूरे** आवंत ।
नंद **सुदरसण**तणा, मात **देवी** जनमंत ॥२॥
तीर्थंकर तीन ज थया, **हथीणापुर**के माय ।
तेर कल्यांणिक जांणियें, वंदीए धरी उछाय ॥३॥

॥ ढाल-१८मी ॥ मधुवनमें धुम मची ए होरी० - ए देसी ॥

आज नगरमें ओछव मोछव, **हस्तिनागपूर** शुभ शांतें,
दरीसण कीयो दरीसण कीयो आज में खुब खांते ।
देव घणा उछरंगें मीलीया, इंद्र इंद्राणी नाचत नचते
दरीसण कीयो दरीसण कीयो आज में खुब खांते ॥१॥
झांझरना झणकार झणकते, घुमर लेती भली भंते, दरीसण... ।
छ राग वली छत्रीस रागणी, गावत खेलत रिझंते, ॥२॥
जिनगुण गावत हर्ष उपावत, दीक्ष्या केवल उपजंते, दरीसण... ।
च्यार कल्यांणिक **गजपुर** सुणीया, पहेछां(चा?)ण्या जिनसिधांते, ॥३॥
श्री**अरनाथ**नी बंदगी करतां, सुकृत पुरण विलसंते, दरीसण... ।
एक सहस मुनी साथें सीध्या, **समतसिखर**जी भगवंते, ॥४॥
एक हजार कोड वरस कांइ उणा, **कुंथूसे अर** मुक्तंते, दरीसण... ।
पंच कल्यांणिक महीमा मोटो, **दोलत** खेत्र फरसंते, दरीसण... ॥५॥

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**अरजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति अढारमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- चवनपणुं **जयंत**थी, **प्रभावती** घर आय ।
कुंभ नरेसर राजीयो, श्री(स्त्री)-वेदे जिनराय ॥१॥
जन्म लेइ दीक्ष्या वरी, ब्रह्मचारी भगवंत ।
त्रणसें कुमरी संजमी, महीमंडल वीचरंत ॥२॥

जीत करी केवल वर्यो, **हथ्थीणापुर** प्रकास ।
एहवा स्वामी माहिरा, पाए नमुं उला(ल्ला)स ॥३॥

॥ ढाल-१९मी ॥ जंबु भरतना खेत्रमां० - ए देसी ॥

त्रण कल्यांणिक **मिथु(थि)ला** नयरी, केवल **हथ(थ्थ)णापुर**मां रे ।
केवली थई तीर्थंकर वीचरें, जोजन सवासोनीमां ॥१॥
भवीयण सुणजो रे,
तीर्थंकर अवदात गुण लेई थुणजो रे (आंकणी) ।
जोजिन वाणी सुणता प्राणी, प्रणमें समझे हीत जांणी रे ।
संसय भांजे सर्व जीवना, मेघध्वनी चित आंणी ॥२॥ भवी...
रोग उपद्रव तेह स्थानीकना, जावे नवा नही थावें रे ।
षट् रीतू फले समकालें, तिर्थंकर परभावें ॥३॥ भवी...
वेर वीरोध कोई जंतूने, न थावें अति-अनावृष्टि रे ।
भय नासें पर-चक्रनो त्यांथी, वली नावें मी(म?)रगी दृष्टि ॥४॥ भवी...
ज्यां जिन वीचरत न पडें दुकाल, कारण अतिसय जांणो रे ।
भामंडल जिन सीर पर दीपें, कल्यांणिक पुजा मांणो ॥५॥ भवी...
समतसीखर पर सीधी कीधी, पंचसे मुनि शिव साथो रे ।
जिनजी कारण करीनें वसीया, मुझ कारज प्रभु-हाथो ॥६॥ भवी...
अरथकी **श्रीमल्लि**नो अंतर, एक सहस कोडी वरसांनो रे ।
तरीया भवजल-तारण **दोलत**, लगन लागी एकतानो ॥७॥ भवी...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य **श्रीमल्लीजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति ओगणीसमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **अपराजीत**वीमांनथी, मात **यसा** नीज गेह ।
चवी जन्म्या नवमें भवे, पीता **सुमीत्र** नृप तेह ॥१॥

राजगृही रलीयामणी, **मुनीसुव्रत** अवतार ।
केई मुनी मुक्ते गया, पीण कल्यांणिक ते च्यार ॥२॥
वीपुल[१] **रत्न**[२] **उदयाचल**[३], **हेम**[४] **वैभार**[५] गीरीराज ।
पुण्य योगें दरसण भया, सारो आतमकाज ॥३॥

॥ ढाल-२०मी ॥ श्री युगमंधरनें कहेजो० - ए देसी ॥

श्री**मुनीसुव्रत** स्वामी मीलीया, दुख दोहग प्राचित जलीया (आंकणी) ।
राज्य वीलसी संजम वरीया, कर्म-रीपू दुरे टलीया ।
केवलकमला झलमलीया रे ॥१॥ श्रीमुनी...
च्यार अतिसय जन्म्याथी, करम खप्याथी इग्यारें साथी ।
ओगणीस देव ते ज्ञांनीथी रे ॥२॥ श्रीमुनी...
चउत्रीस अतिसय कह्या वारुं, एहवा जिणेसर पूज्या सारुं ।
विधिए पुर्वक वीधी धारुं रे ॥३॥ श्रीमुनी...
संसार-अटवी भमता वार्या, वीषय कषाये बलता ठार्या ।
केई रजलता प्रांणी तार्या रे ॥४॥ श्रीमुनी...
ते दिनथी मुनें कीम मुक्यो, कहो कीण दिन भक्ति चुक्यो ।
हवे तो जिनचरणे रुक्यो रे ॥५॥ श्रीमुनि...
शिखरजी जइ वर्या सिवनारी, अरीहाने लागे घणु प्यारी ।
सहस एख संजमधारी रे ॥६॥ श्रीमुनि...
मल्ली पछें चोपनलाख वरसें, श्री**मुनीसुव्रत** सीद्ध फरसे ।
दोलत सुख संपत करसे रे ॥७॥ श्रीमुनी...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**मुनीसुव्रत** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति वीसमी अभिषेक पूजा ॥

दुहा- **नमीनाथ** एकवीसमा, चिदानंद चिद्रुप ।
प्राणं(ण)तकल्पथी आवीया, चवीया सुद्धस्वरूप ॥१॥

वी(व)प्रा रांणी माता कही, **वीजयराज** परनांम ।
नीराबादथी जनमीया, नाथ रूप अभिराम ॥२॥
मीथु(थी)लानयरी राजीयो, **मल्लि नमीकुमार** ।
सात कल्यांणिक ज्यां थया, वांद्ये हर्ष अपार ॥३॥

॥ ढाल-२१मी ॥ धारणी मनावें रे मेघकुमारनें रे० - ए देसी ॥

निज मन मोह्युं रे श्री**नमीनाथजी** रे, देख्यो जिन दिदार ।
कल्पतरु कल्यांणिक पुजना रे, करतां दील हुसीयार ॥१॥ निज... (आंकणी)
चवन जन्म अने योग-धारणा रे, केवल धारण एह ।
मोक्षगमन ए पांचे जांणीए रे, परतापुरण गुणगेह ॥२॥ निज...
ज्ञांन लेइनें प्रथवी उपरें रे, वीचरे श्रीजिनराज ।
लक्षण वर्त्ते तेह वखांणीए रे, वीनोदें करी कहु आज ॥३॥ निज...
यूग्म चामर इंद्र ढोलता रे, पदगज रचना पीठ ।
नभमारगे चक्री(क्र) चालतो रे, नाद दुंदुभी घणो मीठ ॥४॥ निज...
त्रीजगगुरुनें आगल चालतो रे, ध्वज मोटो लहकंत ।
सहस्त्रजोयणनो मान ते कह्यो रे, अधिके रीध कहंत ॥५॥ निज...
गढ त्रणे पर पाय ठवी रहें रे, चउमुख चउ दीए धर्म ।
उपदेस सुणतां तीव्र भावथी रे, जांणीए धर्मनो मर्म ॥६॥ निज...
इम प्रतिबोध करीनें चालता रे, चढीया **सिखरजी**ए शृंग ।
इछाकारी साता वरतिया रे, सहस मुनिथी प्रसंग ॥७॥ निज...
छ लाख वरसनो अंतर इंम भयो रे, **मुनी नमी** वीचें अभंग ।
दास दया करी **दोलत** दीजीए रे, सीधसलाथी उमंग ॥८॥ निज...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**नमीनाथ** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति एकवीसमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **अपराजीत**वीमांनथी, **सोरीपुर** चवी आवें ।
मात **सिवादेवी** कही, **समुद्रवीजे** मन भावें ॥१॥
गर्भस्थीती दूरे करी, पधार्या नरलोक ।
देवकुंमरी वधावती, मुक्ताफल लेइ थोक ॥२॥
पुर **सोरी** ध्व(द्व)य उत्पती, **सोरठ** देस सुस्थान ।
त्रण कल्यांणिक त्यां वर्या, भेटत अमरवीमांन ॥३॥

॥ ढाल-२२मी ॥ जिनवर ध्याइयें रे, मुक्तिमारगना दाता० - ए देसी ॥

भवीयण सुणीए रे, रंग-रसे थइ राता (आंकणी) ।
नेम जिणेसर अति अलवेसर, ब्रह्मचारी भगवंता ।
नव भव सुधी नेह नीरंतर, **राजुल** वीषम व्रजंता ॥१॥ भवी...
आज सकल मंगल मीली गावें, पुजाको ठाठ बनावी ।
सामलीया नेमेस्वर स्वामी, वंदो सीर नमावी ॥२॥ भवी...
तप कोटीये जे फल थावें, ते प्रभुभक्तिए लहीस्युं ।
केवलज्ञांन उपजें त्यारे, ते सुभ लक्षण कहीस्युं ॥३॥ भवी...
नख केस रोम वाधें ना(न)ही, कंटक पीण थाए उंधा ।
सुर कुसुमनी वृष्टि करता, वायु नही कुल-सुधा ॥४॥ भवी...
सुगंधोदक जल चट(छ)कावें, समोसरण सुख शांति ।
वीहंगम सुप्रदक्षणा देता, नमता तरुवर कांति ॥५॥ भवी...
केवलज्ञांनी जगजंतूनें, उपदेस तत्त्वना दाता ।
गरीबनवाज अरज सुणीनें, दीजीए अवीचल साता ॥६॥ भवी...
आप नीरंजन **उजंतगीरी** पर, राज मुकी पेहेला ।
पछे जिनजी सधाव्या सीधपुर, अख्य सुख दोय भेला ॥७॥ भवी...
दोलत करता लेहर तूमारी, चरणकमल तेरा बंदा ।
वरस पांच लाख ते अंतर, **नमी** पीछे **नेमी** जिणंदा ॥८॥ भवी...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**नेमिजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति बावीसमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- देवलोक दशमाथकी, पधार्यां **वांमा**-धाम ।
अश्वसेन दीपावीयो, जन्म लीध वीश्राम ॥१॥
पार्श्वनाथ त्रेवीसमा, **वनारसी**में वास ।
च्यार कल्यांणिक वंदता, भवी-मन पुरें आस ॥२॥

॥ ढाल-२३मी ॥ देसी लावणी की चाल ॥

त्रेवीसमो जिनराज भजो सहु भाइ रे, भजो...,
एह समर्यां तो राज-रीध चली आइ रे, रीध... ।
पार्श्व प्रीत प्रभाव सुगम बुध लाइ रे, सुगम...,
पार्श्व संगथी हेम लोह मीट जाइ रे, लोह... ॥१॥ त्रेवीसमो...
तीहुअणनायक देव जगत हीतदाइ रे, जगत...,
दशमें भव अवतार दीक्ष दीलचाही रे, दीक्ष... ।
कमठ हठायो जोर रीपु हठवाइ रे, रीपु...,
ज्ञांन सुध संपूर्ण भयो जिन ध्याइ रे, भयो ॥२॥ त्रेवीसमो....
फरत करत वीहार रहत सहाइ रे, रहत....,
अंधकार मीथ्यात्व दुर हठवाइ रे, दुर... ।
इम देतां ज्ञान अनंत **सीखर** पर जाइ रे, सीखर...,
अजोगी गुणस्थान वर्या जिनराइ रे, वर्या... ॥३॥ त्रेवीसमो...
त्रेवीस मुनी संसा(गा?)थ निश्चल सुख पाइ रे, निश्चल...,
हुए योती महंत हमकु बतलाइ रे, हमकु... ।
चरणकमलकी सेव दायक दीलवाइ रे, दायक...,
भव भव चाहत तोय धर्म सखाइ रे, धर्म... ॥४॥ त्रेवीसमो...
सहस तीयासी सप्तसत अधिकाइ रे, सप्त...,
एते अंतर जांण **नेमथी पार्श्व** हुआइ रे, पार्श्व.... ।

कहत गहत माहाराज **दोलत** दीलवाइ रे, दोलत...,
दोलत के दरीयाव समुद तरवाइ रे, समुद... ॥५॥ त्रेवीसमो...

काव्य–सकलतीर्थकृतां चवनं जनि–वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र– ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म–जरा–मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**पार्श्वजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा ।

॥ इति त्रेवीसमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा– दशमा कल्पथी आवीया, **क्षत्रीकुंड** मझार ।
सीधारथ राजा घरे, **त्रिसला**–मात–मल्हार ॥१॥
कल्यांणिक त्रण उपनां, एह नगर सुवखांण ।
सीखरजी पासे **रजुवती** (रजुवालीइ?), उपन्यो केवलनांण ॥२॥
समोसरण देवे रच्युं, **गुणसीलचैत्य** सुजांण ।
गौतम केवल पामीया, क्षेत्र एह परमांण ॥३॥
पुरी कही ए **पावापुरी**, **वीर** जीणंद नीरवांण ।
कहे **दोलत** भवीयण सुणो, मांनो अरिहंत–आंण ॥४॥
सासननायक पुजीए, प्रह उगमते सुर ।
त्रीकरण शुक्लध्यांनथी, केसर कुसुमे भरपुर ॥५॥

॥ ढाल–२४मी ॥ मेरा नेडा लग्या नाभी नंदन से० – ए देसी ।

अंगीया मेरा जिनजीसे आज रसी, आज रसी ओ प्यारा आज रसी (आंकणी)
पावापुरीमां वीर जिणेसर(२), देखत दुरगति दुर खसी ॥१॥ अंगीया...
दोय मंदीर ने जलमंदीर छे (२), भेटत मुझ मन भाव वसी ॥२॥ अंगीया...
प्रभु अवदात बहुत विध सुंदर (२), तूं मेरा राज्य में आय धसी ॥३॥ अंगीया...
चरण बीरुद(?) की पुज रचाउ (२), पुज्य करत मेरा दील हसी ॥४॥ अं०..
पतीतउधारण उर्गकु तारण (२), मेरे तूही ज नीस्तार करसी ॥५॥ अं०..
समस्त संघ मीली पंच कल्यांणिक (२), यात्र करी अरचा सरसी ॥६॥ अं०..
पंचामृत करी तीर्थोदकथी (२), द्रव्य भावसु रंग जिनसी ॥७॥ अं०..

चेतन क्षायक समकीत सोभें (२), आवत लेख कीरीया करसी ॥८॥ अं०..
कहत **दोलत** युं परम कृपा करी, ज्ञान-पीयुस सुध घन वरसी ॥९॥ अं०..

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।

मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**वीरजिन** पंच कल्यांणिक पूजाभक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति चउवीसमी [अ]भिषेक पूजा ॥

दुहा- **भरत**खेत्रमांहे थयां, एकसो वीस कल्यांण ।
चउवीसे जिननां मीली, वर्तमांन प्रमांण ॥१॥
चउवीसी पुजा गुणी, मुगट कलश पभणंत ।
मंगलमाला वरतीए, सुवास संघ प्रव(स?)रंत ॥२॥
समस्त भेला कल्यांणनी, पुजा सतवीस थाय ।
थुणतां सुख वाधे घणो, नमतां पातिक जाय ॥३॥

॥ ढाल-२५मी ॥ राग-धन्यासी ॥ गीरुआ रे गुण तूम तणा० - ए देशी ॥

चउवीसे जिन प्रणमीए, कल्यांणिक सत-वीस रे ।
पुरव देसें पुण्य प्रगटथी, जैनधर्म सुजगीस रे ॥१॥ चउ...
मास ध्वा(द्वा)दश तप कल्यांणिक, आदरीयें व्रत [अ]भ्यासें रे ।
चवन-प्रमेष्टी[१] जन्म-[अ]र्हत[२], दीख्या-नाथाय[३] ख्या(खा?)सें रे ॥२॥ चउ...
ज्ञांननुं गुणणु सर्वज्ञायक[४], पारंगत-मोक्ष[५] कहीये रे ।
गुरुमुख तप धारी सुध गुणीए, आगमथी अनुचरीये रे ॥३॥ चउ...
तप पुरणथी उजमणा वीध, पुजा भक्ति रसाल रे ।
सामीवछल सक्ति व्यक्तें, लह(य?)लीन एकताल रे ॥४॥ चउ...
एह तप प्रभावथी प्रांणी, उधरीया अनंता रे ।
श्री जिनधर्म साचो जांणी, भजीए श्रीभगवंता रे ॥५॥ चउ...
वीतराग अनोपम थुणीया, भणीया भवी हीत काजें रे ।
सजनवर्ग सुणजो अभिलाषें, लहेर महेर शिव-राजें रे ॥६॥ चउ...

श्री**वीजेहीरसूरी** गुरु माहरा, पेढी परंपर ध्याई रे ।
श्री**वीजेराजसूरी**सर राज्ये, ए अधीकार बनाइ रे ॥७॥ चउ....
वीजयलब्धी गुरु सा[हा?]ज्यपणाथी, मुनी **गौतम** गुणवंता रे ।
तेहना आग्र[ह?]थी ए थइ रचना, मानु वचन रीझंता रे ॥८॥ चउ...
डीसा नगरना संघ संयूक्ते, **समतसीखरजी** फरस्या रे ।
बीजा एकसो एक कल्यांणिक, यात्र करी सुख वरस्या रे ॥९॥ चउ...
सिधी-तत्त्व-नीधी-चंद्र (**१९३८**) वर्षे, **अगस्तपुर** चउमासी रे ।
माघ सुदी दशमीने दीवसें, पार्श्व दर्श सुवीलासी रे ॥१०॥ चउ...
हीरावत साखाए **दलपत, रुचिलाल** पंन्यास रे ।
पंकज मधुकर सुवासलेणथी, **दोलतरुचि** प्रकास रे ॥११॥ चउ...

काव्य-सकलतीर्थकृतां चवनं जनि-वृतग्रहो वरकेवलमक्षयम् ।
यदमितीह सुपंचक भावयन्, जिनमहं शिवदं परिपूजये ॥१॥
ए काव्य पूजा प्रते कही मंत्र केहवो ।
मंत्र- ॐ ह्रीँ श्रीपरमपुरुषाय, परमेस्वराय, जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय, श्रीमते जिनेद्रा(न्द्रा)य श्री**चउवीस** तीर्थंकर पूजा भक्ति यजामहे स्वाहा।

॥ इति पचीसमी अभिषेक पूजा ॥

पछी आरती मंगलदीवो उतारीये

॥ अथ आरती लीख्यते ॥

जयकारी आरती रे, के **सुमती** जीणेसरकी,
होड न आवे रे, के सहस दीणेसरकी (ए ढाल) ।
पेहली आरती रे, के च्यवन कल्यांणिकनी ।
मातानी उदरें रे, के ओपम माणीकनी ॥१॥ जयकारी...
दुजी आरती रे, के जन्म-मोछवकी ।
चित्तमें चाहे रे, के भवी पुजा भवकी ॥२॥ जयकारी...
त्रीजी आरती रे, के चारीत्र गुण जांण ।
दीक्षा वरीया रे, के मन स्थीर प्रभु आणी ॥३॥ जयकारी...
श्रीकेवल पाम्या रे, के आरती चोथी कीजें ।
चउमुख वाणी रे, के अमृत-रस पीजें ॥४॥ जयकारी...

पंचमी आरती रे, के जिनजी शिव वसीया ।
पांम्या **दोलत** रे, के रंगे रसे रसीया ॥५॥ जयकारी...
इम जांणी भवीयण रे के आरती नीत कीजे ।
मंगलीकमाला रे के पेहरी लाहो लीजे ॥६॥ जयकारी...

॥ अथ मंगलदीवो लख्यते ॥

॥ अहो भव्य प्रांणी रे सेवो० - ए देसी ॥

मंगलदीपक रे करीए, जेहथी शिवसुख हेलां वरीए (ए टांप)
च्यार दीवटनो रे दीवो, नीरमल घृत कामधेनु कहीवो ।
केसर कुंकुंम रे घोली, फुल अक्षत वीधीए मीली टोली ॥१॥ मंगल...
जिनजी सनमुख रे जोतां, मंगलदीवो झगमग होतां ।
च्यार गतीने रे टाली, मुक्तिरमणि आपे लटकाली ॥२॥ मंगल...
जन्माभिषेके रे करता, इंद्र लेइ जिन सुरगीर धरता ।
वाजित्र नादे रे भंभा, नाटिक करती थैई थैई रंभा ॥३॥ मंगल...
इम अरिहानी रे भक्ति, करता समकीत सुध ज शक्ति ।
मुकि सदने रे जावें, **नंदिसर धिपे** अड दीन ठावें ॥४॥ मंगल...

॥ अथ सांझनी रचना विगत ॥

॥ नाटक श्रीजिन आगल करतां **लावणि** केवि ते लीख्यते ॥

सुणो मेरे भाई कहू चतूराई संसार भ्रमणमें बोहत पडे (२),
मन वच काया जीत लीयो तो सिव-मंदिरमें होत खडे ।
शिव-मंदिर तो देखण लायक ज्ञांन ध्यांनसे एह मीले (२),
मुक्ति-श्रीसे केल करणकूं सिध जइके हलमीले ॥१॥ सुणो...
अरिहाजीको चैत्य पेखीके समकीतदृष्टी सुध करो (२),
केवलीपुरुस हमणां नही हे सीध नमुनो एह खरो ।
इनके आगल नृत्य करु हवे एह वीधी वीचार धरो (२),
चरणे गुं(घु)घर घमकत रमझम झणण झणण झणकार वरो ॥२॥ सुणो...
लल्ली(ली) लल्ली(ली) लुच(छ)ण लेते ललके खलक खलक अमृत रसो,
सुणो गुरु ज्ञांनी सुणो नीरवाणी मे हु तारो दास वछो ॥

चरणकमलमें निश्चे नमीयो करम कलंक दूरे फटीयो (२),
तीर्थंकर-मुख देख्यां दरसण उतक्रष्टे भावे चढीयो ॥३॥ सुणो...
प्रभुजीके नमुनें अंगी चढाउं केसर चंदन गरकाव घनौ (२),
कनक-पत्रमें रचु कोरणी मुक्ताफल मणी दीप्त बनौ ।
भामंडल वली सीर पर झगमग भलक भलक दीपें हस्तो (२),
कारण योगे जोग मील्यो सब प्रभुजीसे मलवा बहु सस्तो ॥४॥ सुणो...
घणण घणण रणकार होत हे घंटा स्वर घडीया बजे (२),
ताल वीणा झलर ने भेरी ढोल नोबता नभ गजे ।
द्रव्य मीलें कचु(छु) पुण्य प्रकर्त्ति पुण्यको जोग मीलत कबही (२),
मीलत पीछे कछू खोवत नांही भक्ति करत सुणियो सबही ॥५॥ सुणो...
एह वीध नाटीक करो रंगरेली द्रव्य भावसु नीत्य जनो (२),
सुत्र सीधांतमे जिनजी पूजन वीध ते आणा मेरे मन मनो ।
आणासेथी धरम नीपजे ऋध वृध समृध लहो (२)
दोलतरुचि वीलसें शिवलछी जिनसासन अखंड रहो ॥६॥ सुणो...

॥ इति नाटीक लावणी पूर्णम् ॥

सं. **१९४४** ना वर्षे जेष्ठ (?) माघ सुदी १ दीने लखीतं पं. **दोलतरुच** ।
श्रीडीसामध्ये ॥ श्री**गौतमवीजे**जी साखे ॥

॥ अथ तीर्थमाल स्तवन ॥

॥ आबु रे सीखर सोहांमणो - ए देसी ॥

समतसीखर सोहामणो, जिहां छे **पार्श्व** जिणंद रे लाल ।
अश्वसेन-कुल-चंदलो, **वामा** रांणीनो नंद रे लाल ॥१॥ समत...
सत्रुंजय चैत्य बिंब ज घणा, सास्वतो तीर्थ जांणी रे लाल ।
उजं(ज्जं)त गीरी मनोहरु, **आबु अष्टापद** वखांणी रे लाल ॥२॥ समत...
ए पंचे तीरथ जै नमें, भव्य प्रांणी सुखदाय रे लाल ।
पंच तीर्थ **गोढवार**में, भले भेटीए जिनराय रे लाल ॥३॥ समत...
जीवतस्वामी महावीरजी, **अर्बुद** पासे पंच रे लाल ।
साता कारी जात्रा कहीं, संघ लेइ करी खंच रे लाल ॥४॥ समत...
पल्लवीहार पालणपुरे, **पाली नवलख** सोभंत रे लाल ।
अजमेर दुरगे पासजी, तिम **जेपूर** चित मोहंत रे लाल ॥५॥ समत...

दिली सहेर(रे?) त्रेवीसमा, दरस परस लीयंत रे लाल ।
पुर **आगरे** दील खुसी, **पास** आस पुरीयंत रे लाल ॥६॥ समत...
मी(म)थुराजी बनारसी, पार्श्व नीरंजन देव रे लाल ।
अयोध्या रत्नपुरें, सुरी(र) नर सारे सेव रे लाल ॥७॥ समत...
राजगृही पावापुरी, गुणाला लछ्वाड रे लाल ।
मोक्षदावादे चिंतामणी, दुख दोहग पाप गमाड रे लाल ॥८॥ समत...
काकंदी कलकतें भला, मंदीर दीपे अमुल्य रे लाल ।
पार्श्व तीर्थ सोभा लही, तूम सम अवर न तूल्य रे लाल ॥९॥ समत...
लखणोरें चैत्य दरसिया, एकवीस मंदीर झलकंत रे लाल ।
त्रेवीसमा जिन राज्य करे, **पुर्व देस** लहकंत रे लाल ॥१०॥ समत...
प्रथम जिणंद **प्रागवडे, हथीणाउर श्रीशांति** रे लाल ।
वासुपूज्य चंपापुंरी, अलबेला घणी कांती(ति) रे लाल ॥११॥ समत...
कुंडलपुर सासनपती, **वीसाला पाडलीपुर** रे लाल ।
चंद्रपुरी वली **सीहपुरी**, धरीयें ध्यान हजुर रे लाल ॥१२॥ समत...
तीर्थवंदना नीत प्रते, हुस धरी अमंद रे लाल ।
वंदे पुजे भावसु, पामें परमानंद रे लाल ॥१३॥ समत...
डीसा नगरना संघथी, तीर्थ फरस्या समुदाय रे लाल ।
वीजयलब्धी गुरु सांनिधे, **गौतम** पवित्र कहाय रे लाल ॥१४॥ समत...
परम-स्नेही अभिप्रायथी, गणी **लालरुचि**नो सीस रे लाल ।
कहे **दोलत** पुण्ययोगथी, ए खेत्रें थया जगदीस रे लाल ॥१५॥ समत...

॥ इति श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

शब्दकोश

ढाल क्र.	पद्य क्र.	शब्द - अर्थ
पीठिका		पभासण - पबासण
,,		दीप्तमांन - सुशोभित
,,		चउवीसथा - चोवीसी (प्रतिमा)
,,		स्नात्रीया - स्नात्र करनार
,,		रकेबी - थाळी
,,		कंचोला - वाटको (?)
,,		अंगलुणां - अंगलूंछणा
,,		वास - वासक्षेप
,,		नीवेद्य - नैवेद्य, मीठाई वगेरे द्रव्य
,,		वीसा-सो - एकसो वीस
,,		प्रतेक - प्रत्येक
,,		गोघृत - गायनुं घी
,,		उजमतां - उजमणुं करतां
दुहा	१	परतस(ख) - प्रत्यक्ष
,,	२	अथाह - ऊंडुं
,,	५	वेढीयो - विंट्यो (?)
,,	५	कोठार -
ढा.१	१	सव्वट्ठ - सर्वार्थ [सिद्ध] नामनुं विमान
	२	आणिके - लावीने
	३	ऋत - ऋतु
	३	योगवी - पूर्ण करी (?)
	३	सीक्ष्य - बोध (शिक्षा)
	४	भुतला - पृथ्वीतलपर
	५	भावीया - भाविक
	५	ठावीया - स्थाप्या
	६	जोग्यता - योग्यता
	७	परवरा - परिवरेला
	७	अछेरु - आश्चर्य

ढाल क्र.	पद्य क्र.	शब्द - अर्थ
	७	सीधी - सिद्धि (गति)
	७	गहगयुं - आनंदित थयुं
	८	संच - रचना, गोठवण
	९	खांतथी - उल्हासथी
	९	वामीयें - दूर करीए
ढा.२	३	छोजें - आनंदपूर्वक
	४	जुझ्या - युद्धो कर्या
	५	स(छ?)दमस्त - छदमस्थपणुं
दुहा	२	चरणांबुज - चरणकमल
ढा.३	१	अजव - आर्जव
	१	मदव - मार्दव
	२	मंडाण - रचना
	३	वीलसाय - भोगवी
	६	अरब - अबज(?)
	६	होड - शरत
	७	गहगाट - आनंद
	९	डफांण - ?
दुहा	१	जामनी - रात्री
ढा.४	१	नगीनो - ? (नंग-रत्न)
	४	फरसण - स्पर्शवानी
	४	हुस - होंश
	४	प्राचित - पाप
	५	सीधराज - मोक्ष
	५	दीवाज - शोभवुं
	६	अलगो - जूदो
	६	दीलासा - सांत्वन
ढा.५	१	थोभे - उभी रहे, भेगी मळे
	४	जती - मुनि
दुहा	२	तोरणमाला-धाम - तीर्थ स्वरूप (?)

	३	उतंग - मोटुं
ढा.६	२	उछेदीया - नाश कर्या
	४	हवा - थयां
ढा.७	१	स(सु?)हाय - गमे छे
	२	श्रीकार - उत्तम
	३	रंग-रसाल - आनंद
दुहा	१	खुसीआल - आनंदित
	३	उन्यत - उन्नति
ढा.८	३	भावठ - दुःख
	३	जलाय - सळगी जाय
	४	वीरहो - विरह
	४	मु(म)तलब - पोतानो स्वार्थ(?)
ढा.९	२	उखेवी - उडाडी
	२	वांमी - छोडी
	३	ढोवो - मूंको
ढा.९	४	पमावें - अपावे
	५	क्षूधा वेदनी - वेदनिय कर्मनो एक भेद
दुहा	३	धीजजाती - द्विजजाति
ढा.१०	३	खीर-जल - क्षीरसमुद्रना पाणी
	३	भेव - भेद
	७	खूस - आनंदित (खुश)
दुहा	२	आपद - संकट
	४	उणां - न्यून
ढा.११	२	वाज्या - वाग्या
	४	यूक्तिए - युक्तिपूर्वक
	५	नैत(त्य) - हंमेश
	६	जोती - ज्योति
	६	समंत - समाववुं
ढा.१२	१	भुवीमंडल - पृथ्वीतल पर
	१	लेरथी - आनंदथी
	१	बाविशि - बावीस (परिसहना संदर्भे)
ठा. १२	२	हड्डावीया - दूर कर्या
	२	त्रिगडू - समवसरण
	४	नगुरें - गुरु विना
	६	चतूरवीध - चतुर्विध, चार प्रकारनो
	८	वान - गौरव
ढा.१३	२	परठ्या - नाखी दीधा
	२	लीयंत - लीधुं
	३	पणत्रीस - पांत्रीस
	३	तंत - (छेडो)
	४	मृगमद - कस्तूरी
	५	नीरप(पे?)क्ष - अपेक्षा रहितपणे
	७	ततखेम - तुरंत
दूहा	३	जोहार - प्रणाम
ढा.१४	२	सूपी - सोंपी
	२	धीप - द्वीप
	३	मोछव - महोत्सव
	३	कल्प - देवलोक
	३	पालणिइं - पारणामां
	४	रांमकडां - रमकडां
	४	कुंकणी केलां - कोंकण देशना केळा
ढा.१४	५	साइ - पकडी
	५	हिचोलें - हींचकामां
	६	अवस्ता - अवस्था
	६	वीत्या - चाल्या गया
	८	थुणतां - स्तवना करतां
दुहा	२	मेव - मेवो
ढा.१५	५	खांपण - कलंक
दुहा	२	धाय - दोडीने
	३	ललि ललि - लळी लळी
	३	भक्तिभरातमा - भक्तिथी भरेलो आत्मा

ढा.१६ २ उलसीनें - आनंदित थई
२ श्री - स्त्री
२ सुलसीने - ?
४ जामी - जमावी (?)
६ अखियो - कह्यो
७ क्यंकर - चाकर (किंकर)
ढा.१७ १ वद्यो - कह्यो
२ दाउदी - ?
३ आत्म-प्रजाय
आत्मानो पर्याय
४ नेट - निश्चितपणे
५ सा(स)मृथ - समरथ
दुहा १ पाखल - आसपास
२ सज्या - शैया
ढा.१८ १ नाचत - नृत्य
२ घुमर - फुदरडी
३ उपावत - पामतां
४ बंदगी - भक्ति
दुहा ३ माहिरा - मारा
ढा.१९ २ जोजिन - योजन
४ पर-चक्र - पर सैन्य
४ मीरगी - मरकी
४ द्द(दू)ष्टी - खराब
५ मांणो - (नो) आनंदलो
ढा.२० ४ रजलतां - रखडतां
५ रुक्यो - अटक्यो
दुहा २ नीराबादथी - पीडारहितपणे
ढा.२१ १ दिदार - दर्शन
१ हुसीयार - आनन्दित थाय
२ योग-धारणा - दीक्षा
३ प्रथवी - पृथ्वी
४ पदगज - पगरूपी कमळ
७ वरतिया - पाम्या (?)
८ सीधसला - सिद्धशिला
दुहा २ थोक - समुदाय
ढा.२२ १ व्रजंता - त्याग करतां (वर्जतां)
४ कुल-सुधा - ?
५ वीहंगम - पक्षी
६ गरीबनवाज - मालिक
ढा.२३ १ सुगम - ?
२ हठवाइ - हठ करनार
३ हठवाय - कर्या
४ सखाइ - मित्रता
५ हुआइ - थया
५ तरवाइ - तराव्यो
ढा.२४ ३ अवदात - वात
४ बीरुद - ?
५ उर्गकु - सापने
दुहा २ प्रव(स)रंत - फेलाय
ढा.२५ २ प्रमेष्टी - परमेष्ठि
३ अनुचरीये -
८ सा[हा?]ज्यपणाथी - सहायथी
८ रीझतां - खुश थतां
११ सुवासलेण - ?

मंगलदीव

१ दीवट - दीवेट
३ भंभा - वीणा
नाटक १ केल - रमत
२ गुं(घु)घर - झांझर
३ लुच(छ)ण - ओवारणा
३ ललके - ढळे (?)
३ खलक - ढोळाई
३ वछो - वत्स, पुत्र
३ फटीयो - गयो
नाटक ३ उतक्रष्टे - उत्कृष्ट
४ गरकाव - डुबाडु (?)

४ घनौ - घणा

४ कनक-पत्र - सुवर्णनुं पतरु - वरख (?)

४ भलक - चक्की

५ झलर - एक वाद्य

५ भेरी - ढोल

५ नोबता - नगारां

५ कचु(छु) - कोई

५ प्रकर्त्ति - प्रकृति

६ आणासेथी -

६ वृध - वृद्धि

तीर्थमाला

५ जेपूर - जयपुर

६ परस - स्पर्श

६ पुरीयंत - पूरे

८ गुणाला - गुणीयाला (गुणीयाजी)

८ मोक्षदावादे - मक्षुदाबाद

८ गमाड - दूर कर

श्री वहिरमान जिन स्तवन

– सं. सा. जैनंधराश्री
सा. पुण्यधराश्री

कृति परिचय :

जैनोना विचरता २० तीर्थङ्करने विहरमान एटले वर्तमानमां विचरता तीर्थङ्कर कहेवाय छे. जैनोनी भूगोल प्रमाणे आ तीर्थङ्कर परमात्मा अढी द्वीपमां रहेला जम्बुद्वीप, धातकीखण्ड अने पुष्करवर द्वीपमां आवेला महाविदेह नामना क्षेत्रमां वर्तमानकाले विचरी रह्या छे. तेओनी स्तवनारूपे रचायेलुं आ श्रीवहिर(विहर)मान स्तवन छे.

कर्ता : आ स्तवनना अन्ते कलशमां कविए पोताना नामनो उल्लेख करतां लख्युं छे के–

"वाचनाचारिज सुगुरु, **आरजकुशल भक्ति** पसाय ए;
शुभ बोध निरमल लाभ कारण, **हरखचंद** सुगाय ए ॥"

वाचनाचार्य आर्यकुशलनी भक्तिना[१] पसाये हरखचंदे आ स्तवना गाइ छे. 'जैन गूर्जर कविओ'मां हरखचंदनो उल्लेख नथी मल्यो.

रचनाकाल – स्थल – आजथी १४५ वर्ष पूर्वे सं. १९३३मां जेसलमेरमां मागशर सुद बीजना गुरुवारे आ स्तवना रचाइ छे.

३३ गाथानी आ स्तवना कुल पांच ढालमां पथरायेली छे. कवि प्रथम दूहामां कहे छे 'पांचे बोले प्रणमस्युं, सूत्रतणै अनुसार.'

तीर्थङ्करना पांच बोल – जन्मनगरी, माता-पिता, स्त्री अने लंछनना माध्यमथी परमात्माने स्तव्या छे. पहेली ढालमां जम्बुद्वीपना चार विहरमानना पांच बोलनी साथे विजयक्षेत्रनां नाम पण लख्यां छे. बीजी ढालमां ५ थी ९, त्रीजी ढालमां १० थी १४ अने चोथी ढालमां १५ थी २० तीर्थङ्करोनी चार बोलथी स्तवना छे. जन्मनगरी अने विजयना नाम समान होइ पुनः एनी नोंध नथी लीधी. पांचमी ढालमां २० विहरमानना वर्ण – कायाप्रमाण अने आयुष्य वर्णवी कवि स्तवनाने पूर्ण करे छे.

आ स्तवनाना अन्ते कवि मनोरथ व्यक्त करे छे –

---

१. आर्य कुशलभक्ति (के भक्तिकुशल?) एम होई शके.

नयणे समवसरण निरखीजै, श्रवणे वयण सुणीजै जी,
सीसै प्रभुना चरण नमीजै, ते दिन सफल गिणीजै जी''

परंतु ते तो अहीं केम मले ? माटे कवि विनंती करे छे, प्रभु हृदयमां मुजने अविहड भक्ति दीजे जेथी अमारा कार्य सिद्ध थाय.

आ हस्तप्रतनी झेरोक्स कोबा-कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर द्वारा प्राप्त थई छे. तेओना कार्यवाहकनो झेरोक्स आपवा बदल आभार.

अमारो आ प्रथम प्रयास छे माटे भूल होय तो सुधारवा विज्ञप्ति.

*

॥ श्री जिनाय नमः ॥

॥ दूहा ॥

समरू मन सुधै सदा, वहिरमान[1] जिन वीस ।
विचरै महाविदेहमै, जयवंता जगदीस ॥१॥
पांचे बोले प्रणमस्यु, सूत्रतणै अनुसार,
जनमपुरी १ माता २ पिता ३ स्त्री ४ लंछन ५ सुविचार ॥२॥

ढाल-१

मन मधुकर मोही रह्यो ए जाति ॥

श्री सीमंधर सेवीयै प्रथम विदेह मझार रे,
तिहा नगरी पुंडरीकणी प्रभु लीनौ अवतार रे ॥३॥ श्री०
राय श्रेयंसकुलांबरै चंद्रोपम जिनचंद रे ।
वृषभलंछिन सेवीजता माता सत्यकी नंद रे ॥४॥ श्री०
राणी नाम सुरूखमणी तेहनौ कंत कहाय रे
वसै विजय पुकलावती[2] प्रणमीजै तसु पाय रे ॥५॥ श्री०
वप्रविजय विजयापुरी जिहां **जुगमंधर** साम रे
पुत्र सुदरसण - रायनौ मात सुतारा नाम रे ॥६॥ श्री०
प्रियांगु लांछन परगडौ गज लंछन गुणवंत रे
दुतीय जिनेसर वांदतां आणीजै भवअंत रे ॥७॥ श्री०

---

१. विचरता - विहरमान तीर्थङ्कर । २. पुष्कलावती विजयनुं-क्षेत्रनुं नाम ।

वछ विजय सुसमापुरी तिहा तीजा जगतात रे
विजयाकुखै अवतर्या **बाहु** सुनाम विख्यात रे ॥८॥ श्री०
सुगरबराय पटोधरू राणी मोहण कंत रे
सिंह लंछन कर सोहता सेवै मुनीजन संत रे ॥९॥ श्री०
वसै विजय नलनावती चौथा **सुबाहु** जिणंद रे
जनम्या वीतसोकापुरी निसढ महीपति नंद रे ॥१०॥ श्री०
भूनंदा माता भणू स्त्री किंपुरुषा सार रे
मरकट लंछन मनहरू सेव्यां सुखदातार रे ॥११॥ श्री०
ए च्यारे जिनवरतणा विजय पुरीना ठाण रे
आगै चिहुं-चिहुं जिन क्रमै, एहिज नाम सुजाण रे ॥१२॥ श्री०

ढाल - २

श्री संखेसर पासजिनेसर भेटीयै ए जाति ॥

पंचम देव **सुजात** सूरज लंछन भलौ, देवसेन नरराय कुलांबर चंदलौ ।
देवसेनानौ नंद अहोनिस वंदीयै, जयसेनानौ नाह नमी दुःख छंदीयै ॥१३॥
छट्ठा **स्वयंप्रभु** सांमि नमौ तेहनै सही, लंछननै मिस चंद चरण मूंकै नही ।
वीरसेनाधव जाणसु मात सुमंगला, मित्रप्रभुनौ पुत्र पुहवी चढती कला ॥१४॥
श्री ऋषभाननसांमि जपौ सत्तम सदा, मानै दाणव देव सह जेहनै मुदा ।
वीरसेना जसु मात रांणी है जयवती, कीर्तिरायनौ सूनु कि लंछन मृगपती ॥१५॥
अनंतवीर्य इण नाम अठम जिन जांणीयै, मेघराजनृपवंस अवतंस वखाणीयै ।
मंगलावती मात लछण गज दीपतौ, कुंती स्त्रीनौ कंत करमरिपु जीपतौ ॥१६॥
सूरप्रभू जिनराज नमीजै प्रह समै, विजयनरेसर पुत्र दुष्ट अरीगण दमै ।
विजयवतीनौ नंद चंद्र लंछन भलौ, नंदसेनानौ नाह नवम पुहवी तिलौ ॥१७॥

ढाल-३

ऋषभ जिनेसर प्रीतम माहरा ए जाति ॥

देव **विसाल** दसमजिन वंदीयै, भद्रा मातनौ नंद ।
नागपिता जसु लंछन रवि कहू, विमलापति जगचंद ॥१८॥ दे०
वहिरमांन **वज्रधर** इग्यारमा, पदमरथ हि कुलचंद ।
मात सरसती रे विजयवती प्रिया, संख लंछन सुखकंद ॥१९॥ दे०

चंद्रानन जिन बारम चरचीयै, जासु पिता वालमीक ।
माता पदमणि स्त्री लीलावती, वृषभ लंछन निरभीक ॥२०॥ दे०
तेरम जगपति **चंद्रबाहू** स्तवु, देवाणंद सुतात ।
प्रिया सुगंधा रे अंक पदम भलौ, रेणुका मात विख्यात ॥२१॥ दे०
सांमि **भुजंगम** नामै चवदमा, पंकज अंक प्रतक्ष्य ।
पिता महाबल माता महिमती, गंधसेनाधव दक्ष ॥२२॥ दे०

ढाल - ४

पंथीडा संदेसौ पुजजीनै वीनवे रे ए जाति ॥

ईश्वर त्रिभुवन ईश्वर पनरमा रे, नृप गलसेन कुलाचल सूर रे ।
मात यशोबला लंछन चंद्रमा रे, भद्रवतीपति गुणनिधि भूर रे ॥२३॥ ई०
सोलम **नेमप्रभू** नित समरीयै रे, वीरराजनृपकुल दीपसमान रे ।
श्रीसेना उयरै प्रभू ऊपना रे, मोहणधव सूर्यांकित मान रे ॥२४॥ ई०
वृषभांकित **वीरसेन** जिनेसरू रे, सतरम जगपति सौख्य निवास रे
अंगज भानुमती भूपालनौ रे, रायसेनापति पूरै आस रे ॥२५॥ ई०
मात उमा गज लंछन परगडौ रे, **महाभद्र** नाम अढारम सांम रे ।
देवरायांनौ नंदन दीपतौ रे, सूरीकंता स्त्री गुणधाम रे ॥२६॥ ई०
श्री शिवराज नरेसर कुलतिलौ रे, उगणीसम **देवयसा** जगभाण रे ।
शिस (शशी) लंछन राणी पद्मावती रे, जननी श्रीगंगा सुत जाण रे ॥२७॥ ई०
विचरै **अजितवीरज** जिन वीसमा रे, सहिजपाल पिता सुप्रसिद्ध रे ।
स्वस्तिक लंछन मात कनीनिका रे, रयणमाला पति आपै ऋद्धि रे ॥२८॥ ई०

ढाल-५

सुण बहिनी पिउडौ परदेशी ए जाति ।

इण पर वीसजिनेसर राया, कंचनवरणी कायाजी ।
पांचसै धनुषप्रमाण कहाया, देहमान सुखदाया जी ॥२९॥ ई०
वरष चौरासी पूरब लाखै, आयु प्रमाण सुभाखै जी ।
विचरंता भवीयण निस्तारै, महाविदेह मझारै जी ॥३०॥ ई०
नयणे समवसरण निरखीजै, श्रवणे वयण सुणीजै जी ।
सीसै प्रभुना चरण नमीजै, ते दिन सफल गिणीजै जी ॥३१॥ ई०

ते प्रापत विण किम पामीजै, पिण ए वीनत कीजै जी ।
अविहड भक्ति रिदय मुझ दीजै, तिण सहू कारज सीझै जी ॥३२॥ इ०

॥ कलस ॥

इम भुवन[३]-गुण[३]-निधि[४]-चंद्र[१]वरसै **जेसलमेरू** मझार ए;
संथुण्या जिनवर शुक्ल मिगसरबीज दिन गुरुवार ए ।
वाचनाचारज सुगुरु **आरज कुशल भक्ति** पसाय ए;
सुभ बोध निरमल लाभ कारण **हरखचंद** सुगाय ए ॥३३॥

इति श्री वहिरमान जिन स्तवनम् ॥

श्रीऋषभसागरकृत
श्रीविनयचट शेठनो रास

– सं. सा. दीप्तिप्रज्ञाश्री

प्राचीन-मध्यकालीन जैन साहित्य कथाओथी भरपूर छे.

एक ज कथा अलग कवि द्वारा अलग नामे लखाइ होय छे.

मध्यकालीन जैन साहित्यमां 'विद्याविलास' नामे लोकप्रिय कथा सैके सैके अनेक कविओए संस्कृत गद्य-पद्य अने प्राकृत-गूर्जरमां कथानक-चरित्र-पवाडु-रास-चौपाईना स्वरूपे आलेखी छे. ए ज कथाने कवि ऋषभसागर 'विनयचट शेठनो रास'ना नामे निरूपे छे. विद्याविलास ए ज विनयचटशेठ छे.

सौ प्रथम प्रायः आ कथा संस्कृतमां सं. १३३८मां श्री विनयचंद्रसूरि कृत श्री मल्लिनाथ चरित्रमां उपकथा तरीके मळे छे. त्यां ते तपधर्म ऊपर विद्याविलासनी कथा स्वरूपे आलेखायेली छे.

आ लोककथाने श्री हीराणंदसूरिए सं. १४८५मां सौ प्रथम पवाडा स्वरूपे ढाळी ते पछी चौपाई - रास आदि अनेक स्वरूपे एनी रचना थती रही छे.

* * *

'श्री विनयचट शेठना रास'नी वाचना तैयार करवामां त्रण हस्तप्रतनो उपयोग कर्यो छे.

मुख्य प्रत झेरोक्ष विद्वद्वर्य आ. श्रीविजयशीलचंद्रसूरिजी म. पासेथी प्राप्त थई छे. बीजी एक अपूर्ण प्रत (मात्र चोथो उल्लास) पण तेओश्री पासेथी ज मळी छे.

मुख्य (पूर्ण)प्रतमां घणां स्थाने प्रासनो मेळ मळतो न हतो, कविए प्रास गोठव्यो ज हशे, पण लहियानी भूलथी प्रास जळवायो न होय एवुं लागतां फरी बीजी प्रत मेळववा प्रयत्न कर्यो अने कोबा 'श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर'मांथी प्रत मळी. एनो उपयोग मुख्य प्रतना प्रास सुधारवामां कर्यो. अने जे पाठ मुख्य प्रतमां रही गयेला ते पण कोबानी प्रतमांथी मेळवी → ← आ चिह्न वच्चे मूकेल छे. जे पद्य-पाठ कोबानी प्रतमां न हता तेने वाचनामां 卐 卐 आ चिह्न वच्चे मूकेल छे. वाचना मुख्य प्रतना आधारे तैयार करी छे.

अपूर्ण प्रतने '**अ**' संज्ञा अने कोबानी प्रतनी '**क**' संज्ञा राखी छे.

प्रस्तुत रासमां खास करी नासिक्यना संयोगे अनुस्वारनुं खूब वलण छे, साथे ज अनुस्वारनी अराजकता छे, अनुस्वारनो यथेच्छ उपयोग कर्यो छे. जोडणीमां अने ह्रस्व-दीर्घमां एकरूपता जळवाई नथी.

अमे वाचनामां अमुक सुधारा कर्या छे. जेमके कडीना अंते आवता 'रे' - 'के' - 'हे' - 'ललना' व. क्यांक कविए अनुस्वार युक्त 'रें'-'कें'-'हें'-'ललनां' लखेल ते अमे अनुस्वार-मुक्त रे - के व. करी दीधेल छे. शब्दोमां पण 'विंनयचट्ट''चेंनरेखा' व. पण 'विनयचट्ट''चेनरेखा' करी दीधेल छे. सखि - शखि व.मां श अने स ना भेदने काढी सखि करेल छे. ढालमां आवतां आंकणीना पदनो आद्याक्षर कोईक स्थाने गाथा क्रमांक पछी तो क्यांक गाथा क्रमांक पूर्वे लखेल छे जेने अमे बधे ज गाथा क्रमांक पूर्वे लखेल छे. वच्चे आवता उद्धरणरूप उक्तं - कवित्त के पदना जे श्लोक अशुद्ध छे तेने यथामति सुधारी लख्या छे. अने ए ज श्लोक अन्थ सुभाषित संग्रहमां थोडा फेरफार साथे मले छे तेने नीचे टी.मां नोंधी उमेरेल छे.

ढाल पूरी थतां सर्वगाथा-क्रमांक नोंधेल छे जेमां शरूनी चार ढालमां उक्तं - कवित्तं - पदना श्लोकने गणत्रीमां नथी लीधा जे पछीथी गणत्रीमां लीधा छे ने क्यांक दूहानी गाथा गणत्रीमां लेवी रही जवा पामेल छे तेथी अमे दरेक ढालना अंते सर्वगाथा लखी नथी परंतु सळंग गाथा क्रमांक गाथानी शरूआतमां ( )मां नोंधेल छे. अने प्रतना जे गाथा क्रमांक छे ते यथातथ-ते ज रीते गाथा पाछळ राख्या छे. उल्लासना अंते सर्वगाथा क्रमांक लखेल छे.

रासना अंते जे सर्वगाथा क्रमांक १५३० लखेल छे तेनी साथे योग्य क्रमांक ने सुधारीने (१५६९) लखेल छे.

प्रस्तुत विनयचट्ट शेठना रास अंतर्गत 'भावनी कर्मरेखा' १०० गाथामां पथरायेली अवांतर कथा उल्लास-१ ढाल ९थी १३मां छे.

विशेष नोंध –

उल्लास-२ सळंग गाथा क्रमांक ४९६मां श्री ऋषभसागर भटनुं नाम **देवकृष्ण** लखे छे, अने पछी सळंग गाथाक्रमांक ५०१मां एने कवि 'देव **ऋषभ पंड्यो** अ छे' एम उल्लेखे छे.

(शुं कविने बधे ज 'ऋषभ' नाम ज इष्ट हशे ?)

एवुं ज अन्यत्र –

उल्लास-२ - ढाल-६ - कडी-२ - सळंग गाथा क्रमांक ५०२मां **'शीतलसेन नरेश'** लखेल छे जे उल्लास-३ - ढाल-१ - दूहा कडी नं.-४ - सळंग गाथा क्रमांक - ६२५मां लखे छे के **'विद्याविलास नृपनी सुता'** अहीं शीतलसेन एज विद्याविलास एम समजवानुं थशे. कर्ताए आगल-पाछल नाम अलग लख्युं छे जे सरतचूकथी लखायानी संभावना होय.

*

हस्तप्रतनी झेरोक्स आपवा बदल आ. श्रीविजयशीलचन्द्रसूरिजी म. तथा कैलाससागरसूरि ज्ञानमन्दिर - कोबानो कृतज्ञभावे उपकार स्वीकारुं छुं.

*

आ कथा बधा ज कविओए पोताना कल्पनाविहार प्रमाणे अल्पभेदे-समानपणे आलेखी छे एम कही शकाय. छतां कथा कहेनार बदलाय एनी साथे अहीं तहीं नानकडा फेरफारो तो थता आवे ज. अहीं कवि श्री ऋषभसागरे कथानुं नाम तो बदल्युं ज छे साथे साथे अंदर आवतां बधा ज पात्रना नाम पण इच्छित आप्या होय एम लागे. श्रीविनयचंद्रसूरि सिवाय बाकीना कविओए प्रायेः एमां समानता जाळवी छे. पात्रनां नामो-नगर-राजाना नाम लगभग बधी कृतिमां समान जोवा मळे छे.

दा.त. जगनीक राजा, उजेणीनगरी - धनावह शेठ-पत्नी पद्मश्री - पुत्र धनसार - सागरदत्त - गुणसागर - धनसागर वगेरे.

ज्यारे प्रस्तुत रासमां श्रीऋषभसागरे — ऋषभपुर नगर, ऋषभसेन राजा - ऋषभदत्त शेठ - ऋषभदत्ता पत्नी अने पुत्रो चार - भीमदत्त - धनदत्त - सागरदत्त अने विनयचट्ट नाम आपेल छे.

कथा लखनार दरेक कविए प्रायेः कथा प्रयोजन जाळव्युं छे. श्री ऋषभसागरे विनय ऊपर आ कथा आलेखी छे अने विनयचट्टना विनयना दर्शन ठेर ठेर कराव्या छे. ए ज रीते बधे ज अलग अलग कथा प्रयोजन ते पण एक नोंधपात्र बाबत छे.

प्रसंग निरूपणमां कथारसपोषक विस्तार छे तो बीजी बाजु अन्य कृतिओमां अध्धर प्रसंगकथन पण देखाय छे. कथाकथन दरेक कवि पोतानी प्रकृति-रुचि-रस अनुसार करे छे पण अहीं श्री ऋषभसागरे सविस्तर कथाकथन एवुं कर्युं छे के जे वाचकने जकडी राखे अने क्यांय रसक्षति न थाय.

कथा कहेवानो आशय प्रायः धर्मबोध - उपदेश होय परंतु अहीं कविए साथे साथे प्रसंगे प्रसंगे धर्मनीतिना तारण जरूर नोंध्या छे.

कीर्तिरत्नसूरिए तपधर्म उपर संस्कृत विद्याविलास कथानकमां जीवन उपयोगी उपदेशात्मक चिन्तनश्रेणीने विस्तारथी रजु करी छे. श्री राजसिंहे विद्याविलास चौपाईमां दाननो महिमा वर्णव्यो छे. श्रीजिनहर्षे विद्याविलास चौपाईमां पुण्यनो महिमा गायो छे. श्री यशोवर्धने विद्याविलास चौपाईमां पुण्यनी साथे दाननो अधिकार वर्णव्यो छे. अने अज्ञात कविए विद्याविलास चरित्रमां कर्मबंधनथी डरी चालवानी प्रेरणा करी प्रसंगे प्रसंगे कर्मना प्रभावने बताव्यो छे.

प्रस्तुत कृतिनी साथे साथे मारी सामे रहेली सात कृतिनी हस्तप्रत झेरोक्स छे.

१. श्रीविनयचंद्रसूरिकृत मल्लिनाथ चरित्र अंतर्गत सं. विद्याविलास कथानक.

२. श्रीकीर्तिरत्नसूरि कृत विद्याविलास चौपाई.

३. श्री आज्ञासुंदरकृत विद्याविलास रास.

४. श्री राजसिंह वा. कृत विद्याविलास रास.

५. श्री जिनहर्षगणि कृत विद्याविलास रास.

६. श्रीयशोवर्धनकृत वद्याविलास चौपाई.

७. अज्ञातकृत विद्याविलास चरित्र.

कथातुलनानी दृष्टिए दरेकमां जे-ज्यां मुख्य कथाविशेष छे तेनी नोंध दरेक उल्लासनी साथे लखी छे.

कथातुलना- विशेष नोंध – श्री ऋषभसागर आखी कथा सविस्तर वर्णवे छे.

दरेक कर्त्ता - श्रेष्ठिना चार पुत्रने श्रेष्ठि केवी रीते व्यवसाय करशो ए ज वात सीधी करे छे – ज्यारे ऋषभसागर ऋषभदत्त श्रेष्ठिना त्यां पुत्रोना जन्मोत्सव - वधामणांनी वात करे छे. ते पछी चारे पुत्रोने उत्सवपूर्वक पंडितने त्यां भणवा मूक्यानी वात अने त्यां एक पुत्रने विद्या चढती नथी ने तेथी ए विनयचट्टने नगरमां लोको मूरखचट्ट नामे ओळखावे छे. विनयचट्ट कर्मना भोगने मनमां विमासतो छतो दीन-हीन-गरीबने मदद करी संतोष अने आनंदथी जीवे छे. तेना आ शुभकार्यने नगरना उत्तमजनो प्रशंसे छे.

एवामां एकवार ज्ञानी श्रीधर्मघोषसूरिजी पधारे छे. श्रेष्ठि सपरिवार वंदनार्थे जाय छे अने उपदेशना अंते पूछे छे 'मारो एक पुत्र मूरख छे, ए ज्ञानहीन केम

थयो ?' अने गुरु कहे छे - 'एणे पूर्वभवमां ज्ञान-विराधना करी छे ते कर्मथी अहीं विद्यामां अन्तराय उपन्यो छे'. फरी श्रेष्ठी तेनो उपाय पूछे छे अने सूरिजी कहे छे -

"देव गुरु साधरमिनो विनय करे जे कोय,
मूढपणुं दूरें टलें विद्यासाधन सोय."

देव-गुरु अने साधर्मिकनो जे विनय करे तेनुं मूढपणुं दूर टले साथे ज एनुं भविष्य कहे छे : 'आ मूरखचट्ट भाग्यनो भंडार छे. ए राजाओनो राजा थशे. एना अंतराय तूटशे, घणी बुद्धि पामशे अने एना सघळां मनोरथ परदेशमां सिद्ध थशे', - आटली वात विशेष लखे छे.

ज्यारे श्रेष्ठि पोताना पुत्रोने व्यवसाय कइ रीते करशो ए पूछे छे त्यारे दरेक कर्ताए एकज वात समानपणें प्रायेः नोंधी छे के चोथो पुत्र कहे छे राजाने मारीने राज्य लईश. आ ज वातने विनयचंद्रसूरि जरा सारी रीते कहे छे के 'राजानी जेम हुं सुखो भोगवीश ने राज करीश.'

चोथा पुत्रनी वात सांभळी पिता कोप करी एने घरनी बहार काढी मूके छे. अहीं विनयचंद्रसूरि कहे छे 'तुं श्रेष्ठिपणाने छोडीश ? आवी असंबद्ध वात केम करे छे एम कही अपमान करे छे तो ते घर छोडी नीकळी जाय छे.'

ऋषभसागर लखे छे के विनयचट्ट पिताने कहे छे जे विधाताए छठ्ठी राते लख्युं हशे ते कर्म प्रमाणे पांमशुं, तो पण तमारा प्रसादथी उद्यम करी राजाने मारी राज्य ग्रहीशुं. अने पिता पुत्र वच्चे संवाद थाय छे पिता गमे तेवा वचन न बोलवा ए उपर दृष्टान्त कहे छे ने वळतुं उत्तरमां विनयचट्ट विधिना लेख प्रमाणे थाय ए ऊपर '**भावनी-कर्मरेखा**'नी कथा पिताने कहे छे. अने त्यारे पिता रोस करे छे - समझावे छे ने छेवटे मोढा पर लाफो मारी घर बहार काढे छे. अने ए समये पण विनयचट्ट रीस कर्या वगर पिताना वचनने हितकारी समजी हृदयमां धारण करे छे ने घर छोडे छे. अने प्रथम उल्लास अहीं पूर्ण थाय छे.

प्रस्तुत रासना कर्ता :-

'जैन गूर्जर कविओ'मां श्री ऋषभसागरनी बीजी कृति 'प्रेमचंद संघ वर्णन रास' अथवा 'सिद्धाचल रास' नोंधायेल छे. ते सिद्धाचल रासमां जे विगत कर्तानी मले छे ते ज विगत 'जैन परंपराना इतिहास'मां जिनेन्द्रसूरिना नामे मले छे.

धर्मसूरिनी परंपरामां जिनेन्द्रसूरि बताव्या छे. प्रस्तुत रासना कर्ता ऋषभसागर धर्मसूरिनी साथे चातुर्मास हता त्यारे आ रासनी रचना करी छे. धर्मसूरि १८४१मां

काळ पाम्या छे. अने आ रास ते पूर्वे रचायो छे. प्रस्तुत रासनी प्रतना लेखक पं. रूपविजय गणि जे जिनेन्द्रसूरिनी आज्ञामां हता एवुं जैन परंपराना इतिहासमां पाना नं. ४५६ पर उल्लेख छे.

जिनेन्द्रसूरि ए १८४१मां गच्छनायक पदे आव्या छे. तो आ रासनी रचना पछी एमने आचार्य पदवी-गच्छनायक पद प्राप्त थयुं हशे तो ते पूर्वे जैनेन्द्रसागर हशे एम सवाल थाय. इतिहासविद् ज आ अंगे प्रकाश पाडी शके. अस्तु.

*

प्रस्तुत कृतिना रचनाकाल संबंधे :-

जैनगूर्जर कविओ - भा.७मां - रचनाकाल - १८३० नोंधेल छे. अने जैन गूर्जर कविओ - ओगणीसमी सदी - पाना नं. १६५ पर - ५१३ ऋषभसागर (२)मां विनयचट रासनो रचना सं. १८४० नोंधेल छे. जोके १८३०नी संभावना वधु बेसे छे. कारण सं. १८४१मां मा.व. १०ना मारवाडना बुलंदनगरे पू. धर्मसूरि म. काळ पाम्या छे. (तो. सं. १८४०मां पोरबंदर चातुर्मास न पण होय.)

*

विद्याविलास कथा - साहित्यनी नोंध

वि.संवत	कर्ता	
१३३८	विनयचंद्रसूरि	तप ऊपर सं. विद्याविलास कथानक (मल्लिजिन चरित्र अंतर्गत उपकथा)
१४८५	हीराणंदसूरि	विद्याविलास पवाडो
१५१६	आज्ञासुंदर	विद्याविलास चौपाई
१५८१	कीर्तिरत्नसूरि	तप ऊपर विद्याविलास कथानक (अरजिन चरित्र अंतर्गत सं. उपकथा)
१६२६	धर्मरत्नसूरि	विद्याविलास चउपई
१६६०	अज्ञात	विद्याविलास चउपई
१६६२	जिनोदयसूरि (आणंदोदय)	विद्याविलास चौपाई
१६६३	पं. अमर	विद्याविलास चौपाई
१६६४	अज्ञात	विद्याविलास चौपाई
१६७९	राजसिंह वाचक	दान ऊपर विद्याविलास चौपाई
१७११	जिनहर्ष	पुण्य ऊपर विद्याविलास चौपाई

१७४५	अमरचंद	विद्याविलास रास
१७५८	यशोवर्धन	दान ऊपर विद्याविलास रास
१८मी सदी	जिनसमुद्रसूरि	सुकृत प्रभाव ऊपर विद्याविलास रास
१८३०	ऋषभसागर	विनय ऊपर विनयचट्ट शेठनो रास.
?	?	भोगान्तराय ज्ञानान्तराय विषये सं. विद्याविलास कथा
?	अज्ञात	पुण्यप्रभाव ऊपर विद्याविलास गद्य कथा
?	अज्ञात	सुकृत प्रभाव ऊपर विद्याविलास कथानक
१९८८	अज्ञात	कर्म ऊपर विद्याविलास रास
?	?	विविध कथासंग्रहमां गद्य-पद्य विद्याविलास कथानक
?	?	विद्याविलास-सौभाग्यसुन्दरी सं. गद्य कथानक
?	हरिवल्लभ भायाणी	पूर्वभव कर्मफला - सरस्वती कृपा फल - प्रारब्ध ऊपर विद्याविलास वणिकपुत्र
?	हरिवल्लभ भायाणी	सरस्वतीकृपा ऊपर विनयचंद्र कथा

श्री विनयचट शेठनो रास

॥ ए ६० ॥

॥ श्री शारदाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

[प्रथम उल्लास]

॥ दूहा ॥

१. पार्श्वनाथ जिनवर प्रणम्य, तेवीसमो जिन तास ।
अलीय उपद्रव उपसमें, वारे गर्भावास ॥१॥

२. पन्नग राख्यो परिजलंत, अदभूत कर्‌यो उपगार ।
सूरपदवी आपी सरस, धन्य विश्व आधार ॥२॥

३. हंसासन बेठी हसत, वशत ऋदय आवास ।
प्रगटपणें परमेश्वरी, उदयो ज्ञांन उजास ॥३॥

४. सानिधकारी सारदा, वरदाता सूविशाल ।
नमतां तुझ पद नित प्रतइं, मुझ होइं मंगलमाल ॥४॥

५. गुरु दाता शुभ ज्ञांननां, ध्यानह तास धरेय ।
उत्तम अक्षर द्यो उत्कठ, एह उपगार करेय ॥५॥

६. ज्ञांन दर्शन चारित्र गुण, चित धारे जे चूंप ।
अष्टकरम वेरी अठील, त्रोडत रे भवकूप ॥६॥

७. एहवो सास्त्रें आखियो, सुखदायक स्वयमेव ।
त्रिगडे भाख्यो त्रिजगगुरु, सब देवनको देव ॥७॥

८. त्रिविध मार्ग ए मोक्षनो, ज्ञांन-दर्शन-चारित्र ।
ज्ञांनतणा साधन कह्यां, होइं पून्य पवित्र ॥८॥

९. पिंण ते विनय किंयां थका, ज्ञान लहें भरपूर ।
फल प्राप्ति नवी पांमिइं, विना बीज अंकूर ॥९॥

१०. आराधन तूंमें आदरों, लायक भवियण लोक ।
मुरखचट्ट तणि परे, थिर लहो वंछित थोक ॥१०॥

११. किणिविध तेणे साधन कियो, जस थयो सकल संजोग ।
ऋद्धि राज्य पांम्यो रमणि, भला संपूर्ण भोग ॥११॥

१२. कर्ण रसायणनी परें, कौतिक कथा कहेश ।
रसिकजननें रीझवा, वर्णवुं अधिक विसेस ॥१२॥
१३. मन निश्चल करी मांनवी, सांभलज्यो चित लाय ।
उत्तमनां गुण गावतां, वंछित सघला थाय ॥१३॥

॥ ढाल १ली ॥

॥ चौपई ॥

१४. **जंबुद्विप** लख जोयण जांण, तेहमां **भरतखेत्र** सूह ठांण ।
पांचसे छवीस छ कला मांण, जोयण षटखंड कह्यो प्रमांण ॥१॥
१५. बत्रीस सहस देस दीपता, स्वर्गपुरीनें जे जीपता ।
साढा पचवीस आरज देस, जिहां लाभे जिनधर्म विसेस ॥२॥
१६. त्रेंसठिं सिंलाका पूरस ज जेण, उपजें देश कह्यो सुभ तेण ।
अन्य अनार्य जे जांणिइं, तिहां उपजेंवो मन नांणीइं ॥३॥
१७. तेहमांहे **अंगदेश** अनूप, इंद्र लोक सम जेहनें चूंप ।
नागर अनेक वसे तिहां जोर, **ऋषभपूर** समवड नही को ओर ॥४॥
१८. बार जोयण गाऊ अडयाल, लांबी पोहली सम चोसाल ।
मोटा मंदिर तिहां मालियां, गोख जोख जोवण जालियां ॥५॥
१९. देहरां दिपे अति उत्तंग, गगनमंडलसु करता जंग ।
डंड कलस ध्वज अतिहे सनूर, पुंन्यतणो जाणें उदयो सूर ॥६॥
२०. एकसो आठ जिननां उदांम, द्रव्य खरची नीपाया धांम ।
वय सुभ करवानो ए ठांम, जिंणथी रहे थिर जूगमें नांम ॥७॥
२१. पूजा करे जिहां नरनें नार, साचवे सदा कुल आचार ।
एहवूं धारें मनमें सदा, जिनपूजा नवी भूलें कदा ॥८॥
२२. देहरा अवर बहु देवकां, सुभ मनसां सेवत सेवकां ।
साचवे सघला निज निज धर्म, कुड कपट न करें कुकर्म ॥९॥
२३. चोरासी चोहटा सुविसाल, प्रौढ जिहां दिशें पोसाल ।
उत्तमजन करवां आरांम, धर्मतणां किधा छें ठांम ॥१०॥
२४. व्यापारि सुधो व्यवहार, हिन दिन तणों आधार ।
पर उपगार करवा आगला, दांन तणी सहि जांणे कला ॥११॥

२५. व्यवहारी कोटीध्वज जेह, पुंरण पुन्यतणां छे गेह ।
दुंदाला वारू दिदार, देवकुंमर सरिखा श्रीकार ॥१२॥
२६. पेहरे उत्तम वस्त्र सफार, सोभागि सकला पि सार ।
रूपवंत जांणे रांजीया, चतुराई अधिकी छाजीया ॥१३॥
२७. पोसह पडिकमणां नित करें, जिवदया हीयडें मन धरें ।
सुधा साधुनी करतां सेव, ध्यांन धरें एक अरिहंत देव ॥१४॥
२८. इणि परें बोली पेंहली ढाल, सुंणतां उपजें रंगरसाल ।
राजतणी सोभा हवे जेह, **ऋषभ** कहे सुंणज्यो कहुं तेह ॥१५॥

॥ दूहा ॥

२९. वरण वसें वारु भला, अवर जिहां अढार ।
सुखदायक सेवे सदा, कर जोडि किरतार ॥१॥
३०. खंजन नयणी खींण कटी, उरवसिनें अणुंहार ।
वेधक जिननें वेधवा, सोल सजे सिंणगार ॥२॥
३१. रूपे अधकि नागरी, वागुर कांमि बध(द्ध) ।
वक्र कटाक्षें जोवतां, वस करे साधक सि(स?)द्ध ॥३॥
३२. ख्याग त्याग खत्री खरो, भुजबल जेहो भिंम ।
तेज पराक्रम रवी तपें, सत्रू न लोपें सिंम ॥४॥
३३. **ऋषभसेन** राजा तिहां, रतिपति केरो रूप ।
षटदर्शन पालण खरी, भल्ले नमाड्या भूप ॥५॥

॥ ढाल - २जी ॥

कपूर होइं अति उजलू रे - ए देशी ॥

३४. नृप द्वारें गयवर घटा रे, गाजें घटा घन मेह ।
दांत ते दां[ड]मनी सारिखा रे, एरावण सम एह रे ॥
प्रांणी ! सूणज्यों अचरीज वात, मुंकज्यो सघला व्याघात रे ॥
प्रां० ए आंचली ॥१॥
३५. तेजी तूरकि काबली रे, कंबोजा खुरसांण,
एराकि घाटी भला रे, रवि अश्व जेहा जांण रे ॥ प्रां० ॥२॥
३६. हेसारव करें हिंसता रे, राजन केरे आगार ।
पायगा सोहें एहवी रे, अवर वाहन नहीं पार रे ॥ प्रां० ॥३॥

३७. सेवे राजकुली सही रे, नृप आगल करजोड ।
सूभट सामंत अति सूरमां रे, सारनि साकल त्रोड रे ॥ प्रां० ॥४॥
३८. रतिरूपा सम राजती रे, सोभति सियल सुं देह ।
चोसट्ठ कला अति चातूरी रे वास विद्यानो गेह रे ॥ प्रां० ॥५॥
३९. नांमे **रत्नवती** भली रे, नृप घरे पटनार ।
अवर अनेंक ते जांणिइं रे, इंद्राणि अणुंहार रे ॥ प्रां० ॥६॥
४०. च्यार बुद्धि अनें चातुरी रे, न्यायक पर मन वात,
वसुधानें माजां(जण) घर(णो) रे, मंत्री सूबूद्धि विख्यात रे ॥ प्रां० ॥७॥
४१. उक्तं श्लोकः-
सद्यं उत्पद्यते बुद्धिः, सा बुद्धिः फलदायीनि ।
भानूकर्णकरे दत्वा, रक्षये[त] सूपंथीके स्वयं ॥१॥
४२. राखें अधिको राजवि रे, प्रजा उपर प्रीत ।
न्यायमार्ग रांम राजीओ रे, राखे जेहवी रीत रे ॥ प्रां० ॥८॥
४३. काव्यं :
राजा वृक्षं सुप्रजा तस्य मूलं, भृत्या पर्णा मंत्रीणो यस्य शाखा ।
यस्मात् राज्ञं सुप्रजा रक्षणीयं, मूले गुप्ते नास्ति वृक्षस्य तास ॥१॥
४४. चोर चरड नवि संचरे रे, चाड-चूगल न सुहाय ।
बिहे डरतां बापडा रे, रणमें रह्या जाय रे ॥ प्रां० ॥९॥
४५. तिंण नगरीमांहें वसे रे, कोडिध्वज सुखकार ।
ऋषभदत्त छें रूअडो रे, सहु जिनमें सिरदार रे ॥ प्रां० ॥१०॥
४६. जस घर बहुलि ऋद्ध छे रे, किणहीं न पायो पार ।
खरचें तिंम खुटें नहि रे, जिंम कूपकनो वार रे ॥ प्रां० ॥११॥
४७. परिवारें बहु परिवर्‌यो रे, अहनीस रहे अनुकूल ।
उपगारी अति आतमा रे, जांणें धर्मनुं मुल रे ॥ प्रां० ॥१२॥
४८. सत्वगुणें करी सोहति रे, मोहति पतिनो मन्न ।
ऋषभदत्ता तस गेहनि रे, अवर वखांणें जन्न[रे] ॥ प्रां० ॥१३॥
४९. पतिव्रतापणुं पालती रे, लोपे न धर्मनी लि(ली)ह ।
चौद नियम नित सांचवे रे, मृषा न बोले जीह रे ॥ प्रां० ॥१४॥

५०. वैमानिक सुरनि परे रे, भोग भला भरपूर ।
पूर्वभवनां जांणज्यो रे, उग्यां पून्य अंकूर रे ॥ प्रां० ॥१५॥
५१. इणि परिं काल ज निगमे रे, जातां न जांणे कोय ।
प्रबल पून्याई जेहनि रे, सघला वंछित होय रे ॥ प्रां० ॥१६॥
५२. ढाल कही बीजी भली रे, श्रोताजन हितकार ।
ऋषभ कहे हवे सांभलो रे, वर्णवूं हवे विस्तार रे ॥ प्रां० ॥१७॥

॥ दूहा ॥

५३. परमेश्वर जिंणे पूजिया, फूलाछाब भरेय ।
पीलां सोनां पेहरणें, अपछर नारि घरेय ॥१॥
५४. परमेश्वर जिंणे पूजीया, कें(के)सर चंदन सत्थ ।
मोटा मंदिर मालीया, सोवन कडलां हत्थ ॥२॥
५५. इणि परें सुख विलसतां, दिद्धमांन फल जेण ।
अनुंक्रमें इणें अवसरे, च्यार पुत्र थया तेण ॥३॥
५६. देवसरूपि देखिइं, बालक अनोपम देह ।
प्रबल पूंन्याईइं पांमियें, धन सुत सुंदर देह ॥४॥
५७. आनंदरंग वधांमणां, बाध्या तोरण बार (त्रांट?) ।
जाचक जि(ज)न बोलें बिरूद, भोजक चारण भाट ॥५॥

॥ ढाल - ३जी ॥

सीयालो हे भले आवीयो – ए देशी ॥

५८. जन्ममहोत्सव रंगस्यूं, मंडावे हे सखी मोटें मंडाण के ॥
हरख हीइं मावे नही, सेठ सुखिओ हो घणुं चतुर सुजांण के ॥
वाज्या हे रंग वधामणां ॥ आंचली ॥१॥
५९. धवल मंगल गावें गोरडी, जनमनां हे महोत्सव करे जोर के ।
कोकिलकंठी कांमनी, सगां सोइ हे सखी आवे ओर के ॥ वा० ॥२॥
६०. दांनशालाइं दांन ज दीइं, जाचक जन हे आवे जे लोक के ।
मांन घणो मोटे मनें, देइ वंछीत हे करें झाझा थोक के ॥ वा० ॥३॥

यतः-

६१. ए दिन तीनूं त्यागके, कहां रंक कहां राव ।
रणजीपण कंकणबंधण, पूत्रवधाई त्रांव(?) ॥१॥

६२. ध(घ)रजाता धणलूंटतां, खोसिजना महीलाव(?) ।
ए दिन तीनुं ख्यागके, कहां रंक कहां राव ॥२॥
६३. दसोठण दशमें दिनें, सुभ सुखडि हे पोषें पकवान के ।
सुरहां घृत अति गायनां, सुखकारी हे रंधाव्या धांन के ॥ वा० ॥४॥
६४. सजन सकल संतोषीया, आरोग्यां हे वली फोफल पान के ।
वस्त्रादिक सहुनें तिहां, पहिरावें हे वधतें वांन के ॥ वा० ॥५॥
६५. नाम ठवें तव तेहनां, सहु साखे हे धरी हरख अपार के ।
भीमदत्त पेहलो परगडो, बिजानुं हे **धनदत्त** कूमार के ॥ वा० ॥६॥
६६. त्रीजो **सागरदत्त** जांणज्यो, तिम चोथो हे **विनयचट्ट** सूंजांण के ।
सजन सहुनें मन वस्या, भलें भलें हे कहे ए परमांण के ॥ वा० ॥६॥
६७. सुरतरू केरी साख जू, वाधें दिन दिन हे जिम दूजको चंद के ।
लाले पाले लाडस्यूं, तिंम वाध्यां हे सखी सेठनां नंद के ॥ वा० ॥७॥
६८. एक एकथी गुंण आगला, देखाइं हे ज्यू देवकूमार के ।
मात पिता मन मोजस्यूं, इंम जांणे हे धन्य अम जमवार के ॥ वा० ॥८॥
६९. अनुंक्रमें वय प्राप्ति थया, विद्यानो हे करवा अभ्यास के ।
सेठें मनमां चिंतव्यू, मोकलवा हे कोई पंडित पास के ॥ वा० ॥९॥
७०. वांणोतर छें जे वडो, तेडिनें हे पूछें तिणि वार के ।
पठण करावण पुत्रनें, जोवरावे हे मुरत श्रीकार के ॥ वा० ॥१०॥

उक्तं - श्लोकः –

७१. प्रथमे नार्जिता विद्या, द्वितीये नार्जितं धनम् ।
तृतीये नार्जितं धर्मं, चतुर्थे कि करिष्यति ? ॥१॥
७२. किं कुलेण विशालेन, विद्याहीनं च देहिनम् ।
अकुलेऽपि विद्वांसो, देवता सह पूज्यते ॥२॥

पुरवनी ढाल –

७३. विद्या पण शोभे नही, नर केरो हे वाधें नही वांन के ।
मुरखजन तेहनें कहें, महीपतिनो हे नवि पांमें मांन के ॥ वा० ॥१२॥
७४. इम जांणिनें आपणे, पढावो हे ए पुत्ररत्न के ।
पढ्याथी बहु प्रेमसु, धन ल्यावे हे बहु करीअ जत्न के ॥ वा० ॥१३॥

७५. दो दो लोचन पसु पंखीया, त्रीजो लोचन हे विद्यानो जांण के ।
लोचन सत्तधरमी कह्या, ज्ञांनी लोचन हे अनंत परमांण के ॥ वा० ॥१४॥
७६. त्रीजी ढाल इणि परें, सेठे भाखि हे वाणोतर काज के ।
ऋषभ कहे श्रोताजनो, विद्याथी हो ए लहस्ये राज के ॥ वा० ॥१५॥

दूहा : सोरठी

७७. जोसी तेड्या जोर, सखर मुहुरत्त सोधवा ।
आछो सुभ दिंन ओर, जोइ बतायो जोतषी ॥१॥
७८. समपें श्रीफल सार, संतोषें जोसी सरस ।
महत करे मनुंहार, घणां आडंबर निज घरे ॥२॥
७९. स्नांन करावि कुंमरनें, वस्त्र पेहरावि सार ।
अंगे आभूषण सोभतां, कंठे मोतिनो हार ॥३॥
८०. फूलमाला कंठे ठवे, मस्तक सेहरो मेल ।
तव माता निज पुत्रनें, तिलक करें रंगरेल ॥४॥
८१. विधिपूर्वक निशालनी, सामग्री सवि किध ।
जुगतो महोच्छव तिण घरें, जिंण घर बहुली रिद्ध(ध) ॥५॥
८२. पुंन्य विना नवि पांमिइं, त्रिण ममा जगसार ।
मांन महोच्छव निर्मली, मति उपजें श्रीकार ॥६॥
८३. सविसेषें तें पांमीया, सेठतणा सुत जेह ।
नरनारी सहु ईम कहें, वखतें बलिया एह ॥७॥
८४. वली विस्तारें लेईनें, पंडित जोग्य मनुंहार ।
वस्त्रादिक बहु भेटणुं, सेठ वडो दातार ॥८॥
८५. अश्वारुढ करी कूंमरनें, आपि पाटि हाथ ।
लेखण खडिया प्रमुख जें, तें पिण सघलां साथ ॥९॥
८६. इणि परें अति आडंबरें, सोहग सुंदरनार ।
गावे गीत वली जिहां, वाजित्रनो नही पार ॥१०॥
८७. **ऋषभदत्त** व्यवहारीयो, सवि परिवार समेत ।
आव्यो पंडित पास, तव **भीमदत्तनें** हेत ॥११॥

॥ ढाल - ४थी ॥

इणि परें कंबल कोई न लेशी – ए देशी ॥

८८. इणि परें पंडित गृहे आव्या, पंडित देख तत्खेव मनभाव्या ।
वारू वस्त्र पुफ फोफल पांन, पंडितनें आपें बहुमांन ॥१॥

८९. दोइ करजोडि पायें लागा, अनोपम वेस दिया तस वाधा(घा) ।
द्रव्यें कुण नर राजि न होवें, द्रव्यें मुनि पिण साहमुं जोवे ॥२॥

९०. विप्रे अति आदरें बोलाव्या, वडवखति मुझ मनडें भाव्या ।
इम कहीनें मंडावे पाटो, उद्यम भणवा केरो थाटो ॥३॥

९१. उद्यम किधां विद्या आवें, उद्यम सेति द्रव्य कमावें ।
उद्यमथी परदेशें जावें, वंछित वस्तू सकल उपावें ॥४॥

यतः–

९२. उद्यमेन विना राजन्, न सिध्यन्ति मनोरथाः ।
कायरा इति जल्पन्ति, यद्भाव्यं तद् भविष्यति ॥१॥

ढाल पूर्व –

९३. वसे दोय नर कोइक गांम, झगडो लागो अन्योअन्य तांम ।
एक कहे उद्यम अति वारू, बीजो कर्मतणो वस सारू ॥५॥

९४. उद्यम किधां कांइ न थाय, कर्म विनां सहु निफल जाय ।
रातदिवस मांहोमां[हें] कहीइं, न्याय करावण चालो जईइं ॥६॥

९५. **उज्जेणि**नो राजा **भोज**, न्यायतणो बहु जाणे चोज ।
तिहां आवि बोल्या निज वांण, राजा सघली वातनो जांण ॥७॥

९६. प्रात समें आवें जो दोय, झगडो चूकवसूं अवसर जोय ।
राजाइं एक ओरो जोय, तेहमें ताको न जांणे कोय ॥८॥

९७. तेहमें पांणि कुंभ भराव्यों, उपर एक मोदिक मुंकाव्यो ।
तेहनें जोपे समप्पो तांलो, अन्य न जांणे कोई आलो ॥९॥

९८. कुंची पण तेह पाशें मुंकि, कला एहवि करी अचूकि ।
झगडाउ नर तेह बें झाल्या, राजा हुकमें उरडें घाल्या ॥१०॥

९९. तिणें दोय जांण्यो मनमें एम, राजाइं कीधो इम केम ।
न्यायकरण जांण्यो तो सोहिलो, उलटो एह निवेडवो दोहिलो ॥११॥

१००. उद्यम किजें कोइ कएथ, कारज सिद्ध हुइं जिम तेथ ।
जाइं ओरडो जोवा आघो, आ(तां)लो देखी खोलवा लागो ॥१२॥
१०१. तेहमें कुंभ भर्‌यो जलपूर, मस्तक मोदिक सनूर ।
मनमें हरख अतिहे चाढ्यो, जलकुंभ मोदिक बाहिर काढ्यो ॥१३॥
१०२. रे रे उद्यमनां फल जोय, मनवंछित सिझें सहु कोय ।
उद्यमथी ए मोदिक लाधो, अरधो अरध वेचीनें खाधो ॥१४॥
१०३. पीधो पांणि कुंभज केरो, नांण्यो मनमें कांइ अनेरो ।
खाता सोवनमुंद्रा लाधी, कर्मवादिइं गांठें बाधी ॥१५॥
१०४. सांझ समें राजा तिहां जावें, वारु वचनें तेह बोलावें ।
क्यूं भूख्या मरो रे [रे] भुंडा, झगडा इंम म करो मत कुडा ॥१६॥
१०५. उद्यमवंत कहे महाराज, वंछित सिद्धां सघलां काज ।
मोदिक खाइं पांणि पीधो, उद्यमवंते जबाप ए दीधो ॥१७॥
१०६. कर्मवादी कहें सांभलो राजा, मुंद्रा पांमी गरीब नीवाजा ।
राजा बोल्यो सांभलो भाई, उद्यम अधिको कर्म सखाई ॥१८॥
१०७. इणि परें न्याय करीनें व(ब)तावें, ते पोतानां घरभणि जावे ।
पंडित विद्याइं इणि परें पूरो, उद्यम करावे सदा सनूरों ॥१९॥
१०८. उँ नमं(मः) सिद्धं प्रथम पढावें, पुनः कका लिखी ऋदय चढावें ।
बावन अक्षर सबही छि(बि)नी, बाराखडि बोहर लिखी दिनी ॥२०॥
१०९. चाणायक व्याकर्ण समेतां, सारस्वत संग्रहको हेता ।
अवर कोक पिंगल ग्रह गति, चोरासी आसन द्रढ छती ॥२१॥
११०. इत्यादिक विद्या गुंणगेह, थोडा दिंनमां शिख्या तेह ।
इणि परिं चोथी ढाल ए भाखि, सुंणज्यो **ऋषभ** कहे दिल राखि ॥२२॥

॥ दूहा ॥

१११. दिन केताइक वहि गया, भणतां एहि भांत
कर्म प्रमांणें पांमस्यो, कोड करो मन खांत ॥१॥
११२. पूरषांमंडण दोंइ छे, विद्या नें वलि धन ।
पिण निज कर्मनुसारथी, लहें न लहें जगजन्न ॥२॥
११३. चोथा पुत्रनें नवि चढे, जीहें अक्षर जेह ।
पंडित पिण हारी रह्यो, कर्मतणा फल एह ॥३॥

११४. पिता भणि ते पंडिते(त), जांइं जणावे वात ।
सकल शास्त्रमें सोभतां, पुत्र थया विख्यात ॥४॥
११५. तिन पुत्र पंडितप्रवर, चोथो मुर्ख ज सोय ।
नाण विराध्यो पुर्वभवे, विद्या नावें कोय ॥५॥
११६. एह वात श्रवणें सुणी, सेठ करे मन सोच ।
लघू पुत्र विद्या विहुणां, उंडो एह आलोच ॥६॥
११७. विद्याचारजनें वली, आपें द्रव्य अपार ।
सेठे निज घर तेडिया, क(का)मध्वज समा कुमार ॥७॥
११८. विद्या तो आवि नही, मनमां घणुं अकुलाय ।
उण नांमें ते नगरमां, मुरखचट्ट कहाय ॥८॥

॥ ढाल - ५मी ॥

झीणां मारूजीनी करहली - ए देशी ॥

११९. चिंते कुमर इम चित्त में,
वारु बालकवेशें विद्या मुझनें नावे हो राज ।
तो निरभाग्य हुं सही, **मुरखचट्ट** एह नांमे
नगरमांहि व(ब)तलावे हो राज ॥१॥

उक्तं –

१२०. बाले विद्या नवि पढि, योवन न सिंच्यो धन्न ।
वृद्धे धर्म ज ना कियो, गया ज तीन तन्न ॥१॥

ढाल पूर्वली –

१२१. दोस न दिजें कोइनें,
विद्या पुरव पुन्यें प्राप्त जो ही पांमें हो राज ।
तो हवे स्यो पछतावडो,
पंडित परनें देखीं झूरे कवणनि कांमें हो राज ॥२॥
१२२. खांओ पीओ खांतस्यूं,
विलसूं जे धन वारु लिखिओ भाल प्रमांणे हो राज ।
जोवन केरे अवसरे,
विलसेवानि वेला जगमें सहुको जांणे हो राज ॥३॥

१२३. इम जांणिनें अहनिसें,
रंगरसमें रहें भीनो सजन निज संतोषे हो राज ।
नाटिक कौतिक नव नवा,
जोवें मन उछांहे नित नित नवले वेसे हो राज ॥४॥
१२४. सुकृत जन्म संसारमां,
पायवो नही प्रांणी जगमां दुंजि वेला हो राज ।
मात-पिता कुटंबस्यूं,
परिवारे अतिपुरा अधीका अतिहें मेला हो राज ॥५॥
१२५. कबहीक जायें वाटिका,
साथें सजन सखाई लेई पुन्यना पुरा हो राज ।
कबहीक वनक्रीडा करें,
सजल सरोवर भरीया जोइं सहेंज सनूरा हो राज ॥६॥
१२६. अश्वादिक रथ वाहनें,
खेलावे अति खांते बेसि मनमें मोजे हो राज ।
नव नव विभूषण सोभतां,
वाघा अति तनुं लागा चतुराईस्यूं चोजे हो राज ॥७॥
१२७. हीन दिन देख(खि)नें,
वस्त्रादिक अन्नपान्न देइ करें तस राजी हो राज ।
निज घर वित्तनें विलसतां,
आडो पग कुंण आखें जे कोई दीसें प्याजी हो राज ॥८॥
१२८. वास(त) नगरमां विस्तरी,
सोभा इणि परें सारी जाचकजन तें भाखें हो राज ।
दांने मांने आगलो,
ते जननिं जग सघलें किरत कवियण दाखे हो राज ॥९॥
१२९. जूगमें जाते दीहडें,
गीर पथर जें चणिया ते तो हेठा पडस्ये हो राज ।
कीरतरूपी कोटडा,
सुभकारिज जेंणें कीधा ते तो वज्र जिम जडस्यें हो राज ॥१०॥

१३०. इम सहु कोइं सेहरमां,
उत्तमजन सहु आखें मुर्खचट्टनि वातो हो राज ।
रूप गुंणें करी उजलो,
सेहज स्वभावें रूडो रहे रंगमें रसरातो हो राज ॥११॥
१३१. इभ्यकमाई जेहनी,
पुरण अधीक पुन्याई एहवा पुत्र ज पाया हो राज ।
कुलकिरत अजूआलवा,
धन धन एहनी माता जेणें ए सुत जाया हो राज ॥१२॥
१३२. जेहनो जस इह जगतमां,
धन जीवित जग तेहनो सास्त्रें एहवो भाख्यो हो राज ।
अपजसकारी जे नरा,
ते जीवित मृतरूपी उत्तमजन इम दाख्यो हो राज ॥१३॥
उक्तं काव्यं –
१३३. चन्द्रे लाञ्छनता हिमं हिमगिरौ, क्षारं जलं सागरे ।
रुद्धाश्चन्दनपादपा विषधरैरम्भोरुहं कंटकैः ॥
स्त्रीरत्नेषु जरा कुचेषु पतनं, विद्वत्सु दारिद्रता ।
सर्वं रत्नमुपद्रवेण सहितं, दुर्वेधसा निर्मितम् ॥१॥
पूर्वली [ढाल]–
१३४. इणि परें मुरखचट्ट सदा,
केई कौतिक रातो रहे मनमें आणंदे हो राज ।
उदितभइं सूरज जदा,
प्रात समें पुरजनस्यूं जाइ जिनवर वंदे हो राज ॥१४॥
१३५. पूजादिक घणे प्रेमस्यूं;
करतो ऊलट आंणी मनमां हरखित होवे हो राज ।
पांचमी ढाल ए ढलकतिं,
ऋषभ कहें सहु स्यूंणज्यो अचरीज आगल होवे हो राज ॥१५॥

॥ दूहा ॥

१३६. आनंदे इम नित रहें, अभणकुंमर भली रित ।
एकदिन सुतो सेहजमां, चिंता उपनि चित्त ॥१॥

१३७. **मुरखचट्ट** मनथी करें, निज अवगुंणनें गोठ ।
सठऋदय छें माहरो, काठो फल जिम कोठ ॥२॥
१३८. भोजनादिक भली भांतनां, भोगवूं जेह विलास ।
ते सति तात पसाउलें, गोख जोख आवास ॥३॥
१३९. कंठ विहुणो गाववो, गुरु बिण जेहवो ग्यांन ।
विद्या विण तेहवो वपू, मन विण जेहवो मांन ॥४॥
१४०. श्रोता विण जिम सास्त्र रस, दंत विहुणो [जिम] मुख ।
नेन्न विहुणो निरखवो, गरथ विहुणो सुख ॥५॥
१४१. दिपक विण मंदिर जिस्यो, न लहें सोभा सोय ।
विद्या विण जगतीतलें, आदर न लहें कोय ॥६॥
१४२. गइ रयण उदयो तपन, जग लोचन सूविहांण ।
अंधकार सवी अपहर्‌यो, भल्ल उग्यो जगभांण ॥७॥
१४३. तेहवे वनपालक तिहां, सेठ **ऋषभदत्त** पास ।
आव्यो मन आणंदस्यूं, दोडयो एकण सास ॥८॥
१४४. वनपालक करे विनती, उभो जोडी हाथ ।
धर्म्मघोषसूरि आविया सत पांच मुंनि साथ ॥९॥
१४५. ते निसूणि मन हरखिओ, लक्ष दांन तस दीध ।
बहु परिवारे परिवर्‌यो, वंदण चाल्यो विध ॥१०॥
१४६. पांच अभीगम साचवि, त्रिण प्रदिक्षणां देइं ।
छीप स्वांतजल चाहनां, तिम गुरू वांणि सुनेंह ॥११॥
१४७. जोग्य तेह जांणि करी, धर्मतणो उपगार ।
उपदेसें सूरिसरू, अशरण सर्णाधार ॥१२॥

॥ ढाल - ६ठी ॥

विणजारा रे - ए देशी ॥

१४८. जीउ जागोरे, सुता प्रमादनी सेज, मोहनिंद्रामें मगन भया ।
जी० चोरासी लखमांहें, काल अनादि वहि गया, जी० ॥१॥
१४९. जी० जोवो उघाडि नेंण, वेंण सुणो वितरागनां ।
जी० पडिआ भवजल कूप, किम लेंहस्यो तस थागनां, जी० ॥२॥

१५०. जी० एह संसार मझार, दीसें ते सहु कारिमो ।
जी० धण कण कंचन जेह, सकल वस्तू ए भारिमो, जी० ॥३॥
१५१. जी० अथीर सहु परीवार, देह जिवित पिण जांणज्यो ।
जी० अभ्रछाया जिम आथ, सुकृत वय करी मांणज्यो, जी० ॥४॥
१५२. जी० गरव म करस्यो कोय, ऋद्ध राज्य रमणि तणो ।
जी० रावण सरीखा जेह, हुंतो बलवंतो घणो, जी० ॥५॥
१५३. जी० तें पिण खाधो काल, वार न लागि को तिहां ।
जी० राज्य रमणि दशकंध, खिणमांहे खोयो जिहां, जी० ॥६॥

कवित्त–

१५४. इश इंद रवि चंद, चक्रधर चउमुह चलीया ।
वासुदेव बलदेव, काल पिणसेइ कलीया ।
मांनधाता बली करणक, गयो रढ राणसेइ ।
सागर सरग गंगेव, गया सुसेन सजेइ ।
भुपति भोज विक्रम सरस, भल्लो पिण सेइ भंजीया ।
कवि कहे खेम अचरिज किस्यो, काले कवण न गंजीया ॥१॥

ढाल पूर्वली –

१५५. जी० एहवो जगत स्वरूप, जांणि चित्तमां धारज्यो ।
जी० क्रोध मांन मद लोभ, विकथा च्यांरे वारज्यो, जी० ॥७॥

उक्तं-काव्य –

१५६. द्युतं च मांसं च सुरा च वेश्या, पापर्द्धि चौर्ये परदारसेवा ।
एतानि सप्तव्यसनानि लोके, घोरातिघोरं नरकं प्रयान्ति (नयन्ति) ॥१॥

ढाल पूर्वनी – (इत्यर्थः)

१५७. जी० विसन निवारो सात, विसनथी सद्गति दोहिली ।
जी० पडिया व्यसनवसेंण, सही दुर्गत तस सोहिली, जी० ॥८॥
१५८. जी० प्रथम व्यसन जुआरवेल, पांडव हार्‌या जेहथी ।
जी० **दवदंती** निज हार **नल**, पिण नीसर्‌यां गेहथी, जी० ॥९॥
१५९. जी० **महासतकनि** नार, नांम हुंतो तस **रेवती** ।
जी० पांमी नरग दुआर, दुजो व्यसन सेवती, जी० ॥१०॥

१६०. जी० वरज्यो मदिरा पांन, जादव जें करता सही ।
जी० दुहव्यो ऋषिनें तेंण, **द्विपायन** द्वारा दही, जी० ॥११॥
१६१. जी० म करो वेस्या संग, जेहथी धन संपद हरें ।
जी० **कयवन्नां**दिक जेह, विदेशें भमता फिरें, जी० ॥१२॥
१६२. जी० आहेडो अनाचार, वरजो ते जिनवरे कह्यो ।
जी० मृगली मारी तेण, प्रथम नरक **श्रेणिक** गयो, जी० ॥१३॥
१६३. जी० चोरी म करो चाह, चोरीथी दुरगति सही ।
जी० **मंडक** चोरी वसेण, माहादुःख पांम्यो वही, जी० ॥१४॥
१६४. जी० परदारावस जेह, दुरगतिगांमि ते कह्यो ।
जी० **ललितांग कुंमर** षट्मास, अपवीत्र स्थानकें ते रह्यो, जी० ॥१५॥
१६५. जी० इणि परें व्यसन ए सात, द्वार नरगतणां कह्या ।
जी० नरगतणी गतमांहें, दुःख न जाइं ते सह्या, जी० ॥१६॥
१६६. [जी०] एहवी जिनवर वांण, प्रांणी दिलमां लावज्यो ।
जी० पांमि नर अवतार, धर्म्म ऋदयमां ध्यावजो, जी० ॥१७॥
१६७. जी० विनय वडो संसार, इहभव परभव जेहथी ।
जी० कोइ न लोपे कार, ज्ञांन आराधन तेहथी, जी० ॥१८॥
१६८. जी० ज्ञांन विना जगमांहें, मुरख पसूंआं सारिखो ।
जी० मूढपणाथी नाह, तत्त्वातत्त्वनों पारखो, जी० ॥१९॥
१६९. जी० ते माटे इंण मूल, जांणि विनय अंगीकरो ।
जी० छोडो कुगरु संग, जिनमारग सूधो धरो, जी० ॥२०॥
१७०. जी० पांम्यो मन उल्लास, सांभली वचन सूरितणां ।
जी० बिजा पिण भवी लोक, हेंजस्यूं हरख्या घणा, जी० ॥२१॥
१७१. जी० एहवी ढाल रसाल, शुभकारी छट्ठी कही ।
जी० **ऋषभ** कहे भवि लोक, गुरुमुखथी हारद लही, जी० ॥२२॥

॥ दूहा ॥

१७२. दीधी इणि परें देशनां, सकल मनोरथ सिद्ध ।
कर्णकचोले भविकजन, प्याला भरभर पीध ॥१॥
१७३. केताइक व्रत आदरें, केताइक बहुभक्ति ।
ग्यांनी गुरुनां मुख थकि, जेहवि निज निज शक्ति ॥२॥

१७४. विधसूं इणि परें विनवें, बे करजोडि हथ(त्थ) ।
शुभकारी मुझनें मिल्यों, साचो सिवपुर सत्थ ॥३॥
१७५. **ऋषभदत्त** सिठिं तिहां, द्वादश व्रत श्रीकार ।
लेइं गुरुनां मुख थकि, पालें निरतीचार ॥४॥
१७६. च्यार पुत्र छें माहरें, तेहमें मुरख एक ।
ज्ञांन हिण ए किम थयो, वारू कहो विवेक ॥५॥
१७७. निसुंणि वलतूं गुरु कहें, सांभल सेठ विचार ।
ज्ञांन विराध्यूं छे इंणे, पूर्वभव निरधार ॥६॥
१७८. ज्ञांन विराधन कर्मथी, उपनो ए अंतराय ।
अंतराय जोगें करी, विद्या किमही न आय ॥७॥
१७९. एहनो उत्तर कोइ कहो, कृपा करी मुंनीराय ।
विद्या पांमे विवीध परें, मूढपणुं मिट जाय ॥८॥
१८०. देव गुरु साधरमिनो, विनय करे जे कोय ।
मूढपणुं दूरें टलें, विद्यासाधन सोय ॥९॥
१८१. **मुरखचट्ट** महिंमा निलो, भाग्यतणों भंडार ।
राजवियां-सिरसेहरो, होसे ए निरधार ॥१०॥
१८२. अंतराय वली त्रूटस्ये, बहुली पांमस्ये बुध ।
कर्मोदयें परदेसमां, सकल मनोरथ सिद्ध ॥११॥

॥ ढाल - ७मी ॥

आज ध(धु)रावो धुधलो हो लाल – ए देशी ॥

१८३. सांभली मुंनिनी देशना हो लाल,
हरखीत हुंओ मन्न मनमोहनां ।
कृतारथ मुझनें कियो हो लाल,
धर्मकथा कही धन्न म० ॥
आज अनोंपम दीहडो हो लाल०, आंचली० ॥१॥
१८४. सामग्री जे साधुनी हो लाल, मलवी जें मुसकल्ल म० ।
वायनें जोगें जेहवी हो लाल, आवि कोकिल हल्ल म०, आ० ॥२॥
१८५. इम स्तवनां करी साधुनी हो लाल, वांदि गया निज गेह म० ।
मनमां सेठतणें घणो हो लाल, उपनो धर्मसु नेह म०, आ० ॥३॥

उक्तः–

१८६. साधु आवत देखने, हसी हमारी देह ।
माथा का ग्रह उतर्‌या, नयणें लगा नेह ॥१॥

१८७. साधु हमारे आतमां, हम साध(धु)नके देह ।
रोम रोम मै राम रहे, ज्यूं वादलमें मेह ॥२॥

ढाल पूर्वली –

१८८. सुंदरि वचनथी साचवें हो लाल, सात क्षेत्र कह्या जेह म० ।
पुन्यतणो पोतो भरें हो लाल, निज हीयडें धरी नेह म०, आ० ॥४॥

१८९. जिनभुवन बिंब पूस्तका हो लाल, साधु साधवि संग म० ।
वारु श्रावक श्राविका हो लाल, पोषें धरी उछरंग म०, आ० ॥५॥

१९०. दांन कह्या जे दीपता हो लाल, अभय सूपात्र अछेह म० ।
अनुंकंपा उचीत भलो हो लाल, किर्त्तादिक ससनेह म०, आ० ॥६॥

१९१. सुध मनें नित साचवें हो लाल, त्रिकाल जिननि सेव म० ।
मुरखचट्टनां मनमां हो लाल, तेहसु लागी टेव म०, आ० ॥७॥

१९२. विनय वहेतो सर्वनो हो लाल, मात पिता नें भ्रात म० ।
साधरमि सुगुरुतणो हो लाल, करें बहुमांन सुजात म०, आ० ॥८॥

१९३. इम करतां दिन केतले हो लाल, थयो तस कोमल चीत म० ।
एहवें आई उमही हो लाल, पोढि पावसरीत म०, आ० ॥९॥

१९४. चिहु दिशि बांधि कोरणी हो लाल, धोरणी घटा घन घोर म० ।
बापीयडो पीउ पीउ चवें हो लाल, मोर मचावें सोर म०, आ० ॥१०॥

१९५. दह दिसि चमकें दांमनि हो लाल, कांमनि विरह कराल म० ।
पति वीजोगी पदमणी हो लाल, जागें मदननी झाल म०, आ० ॥११॥

१९६. उडें बगपति अंबरे हो लाल, वादल नीकट वहंत म० ।
दंत देखाडें कंदर्पतणां हो लाल, विरहणी अतिहें बीहंत म०, आ० ॥१२॥

१९७. बरसें मेह महीतलें हो लाल, पांवस पांणी पूर म० ।
उमांहि आवे घरे हो लाल, जे परदेशे दूर म०, आ० ॥१३॥

१९८. व्यापारी मारग तज्या हो लाल, बग ऋषि बेठा ठांम ।
मेडि मंदिर मालिया हो लाल, सहु समरावे धांम म०, आ० ॥१४॥

१९९. उक्तं –

पिताम्बर पयं पात्रं, पादुका पूर्णमंदिरे ।
पुराण पद्मनी चैव, वर्षा सप्त सुखावहा ॥१॥

ढाल पूर्वली –

२००. एहवी रीतमें एकठा हो लाल, मिलीया मंदिरमांहि म० ।
पुत्र पिता परिवारस्यूं हो लाल, वात कहें उछाह म०, आ० ॥१५॥

२०१. सूपरे ढाल ए सातमी हो लाल, आखि अधिक उल्लास म० ।
ऋषभ कहे भवि सांभलो हो लाल, आगें वचन विलास म०[आ] ॥१६॥

॥ **दूहा** ॥

२०२. एहवे बेसी एकठा, पुत्र पिता ससनेह ।
वात करें विवसायनि, जूगतें नीज गृहे तेह ॥१॥

२०३. पिता कहे पुत्रो भणि, च्यारे छो तुंमे सूर ।
स्ये विवसायें जोडस्यो, द्रव्यादिक जे भूर ॥२॥

२०४. **भीमदत्त** भाखे भलुं, प्रवहणनो करी घोस ।
द्रव्यादिक बहु लावस्यूं, तुंमे म करस्यो सोस ॥३॥

२०५. **धनदत्त** मन धीरज धरीय, बोल्यो बीजो पुत्र ।
वस्तु सकल वांणिज्यनो, करी राखीस घरसूत्र ॥४॥

२०६. **सागरदत्त** [सीरोमणि*], बोल्यो बुद्धिनिधांन ।
क(का)कर पत्थर पारखि, महिपति पांमु मांन ॥५॥

२०७. सेठ वचन त्रिहुंनां सुणि, हरखित हुओ जेह ।
सकल पुत्र छें माहरे, गुंणमणि केरा गेह ॥६॥

२०८. हवें चोथानें हेजथी, पूछे पुरण प्रीत ।
द्रव्यागमन विवसायनो, करस्यो केही रीत ॥७॥

श्लोकः –

२०९. व्यापारे वर्धते लक्ष्मीः, किंचित् किंचित्[च]कर्षणे ।
अस्ति नास्ति सेवायां, भिक्षा नैव च नैव च ॥१॥

---

* -क ।

[ढाल पूर्वनी]–

२१०. वलतुं **विनयचट्ट** विनवे, सुंणो पिता मुझ वात ।
कर्म प्रमांणें पांमवूं, लिखिओ छट्ठिरात ॥८॥

२११. तो पिण तुंम परसादथी, करस्यूं उद्यम एह ।
राज ग्रहैसुं महिपति, मार थपाटां जेह ॥९॥

॥ ढाल - ८मी ॥

तुंमे पीता(तां)बर पेहर्‌यां जी मुखनें मरकलडे - ए देशी ॥

२१२. ते सुंणिने सेठ तव भाखे जी, पुत्र तुंमे सांभलो ।
भूंडा एम स्यूं भाखे जी, खोटो आमलो ॥१॥

२१३. जेहवो वायक भाखो जी, मुखमां नवि पेसे ।
खांडो म्यांनमां राखो जी, उखांणो जन केंहेस्ये ॥२॥

२१४. मंकोडो गोलनी गुणी जी, तांण वामन हिंसे ।
तव जननी इंम भाखी जी, लांक कटीनो दिसे ॥३॥

२१५. ए उखांणो साचो जी, कीधो ते सही ।
सुपन वसें कोइ राज जी, लीधो ते वही ॥४॥

२१६. वायक एहवूं बोलो जी, जीण चढें वडाई ।
वायकसे ती थाइं जी, दुश्मन फिरि भाई ॥५॥

२१७. वायकथी चडे घोडे जी, जगमां इम कहे ।
कुवयणथी पडें खोडें जी, दुःख बहुला लहे ॥६॥

उक्तं –

२१८. प्रियवाक्यप्रसादेन, सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः ।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता ॥१॥

ढाल पूर्वली –

२१९. सकल वस्तु जगमांहे जी, सीख्यो जे सही ।
वायक बोल वाहि जी, बोले ते वही ॥७॥

२२०. सकल शास्त्र पढाइं जी, बहु भयो सुरमां ।
वायक न लहे वडाई जी, तस गयो धुरमां ॥८॥

२२१. एक उक्तनी वात जी, सांभल तूं पुता ।
पछें बोलज्यो जोइ जी, वायकजी केंता ॥९॥

२२२. एक नर काष्टनी भारी जी, शिरपर जें ग्रही ।
वेचवा चाल्यो उमाही जी, नगरी दिश वही ॥१०॥
२२३. वेची काष्टनी भारी जी, छ[दो]कड्ड तस आयो ।
सखरी रसवती सारि जी, जिमवा उमाह्यो ॥११॥
२२४. उत्तम रसवती जेह जी, न मले एह जोग ।
चवलक रांधी खायू जी, कर्मना ए भोग ॥१२॥
२२५. एकज दोकडा केरा जी, चवला तिणें लिधा ।
भठीयारी घर पूछि जी, चाल्यो पंथ सिद्धा(धा) ॥१३॥
२२६. रांधण करें चूले जी, चवलक जइ रांधे ।
बाकि दोकडा जेह जी, गांठे तिहां बांधे ॥१४॥
२२७. आडूं अवलूं जोता जी, महिषी एक मोटी ।
ततखिण नयणें दिठी जी, जबर तिहां झोटी ॥१५॥
२२८. देखी मनस्यूं चिंते जी, अचरीज ए मोटुं ।
महिषी एह प्रचंड जी, द्वार तो अति छोटुं ॥१६॥
२२९. सुण तुं मोरी बाई जी, महिषी जो मरे ।
तो तुं एहने उछांहे जी, काढें किंणि परे ॥१७॥
२३०. ते सुणि डोसि कोपि जी, रे रे निरभागी ।
दुष्टमति आरोपि जी, अइ ओ अभागी ॥१८॥
२३१. लें तुं ताहरा चवला जी, द्वारे जई नाखू ।
बोल्यो वायक अवलो जी, तेहनुं फल दाखू ॥१९॥
२३२. पल्लो माडयो तेणें जी, खोलामां घाले ।
खाधा विंण ते लेइ जी, चोहटा दिसें चाले ॥२०॥
२३३. जन तिहां मारग जातां जी, साहमुं सहु जूइ ।
वस्त्र थाए छे रातां जी, एहमां स्यूं चूइं ॥२१॥
२३४. मुखरोग एहमां चूइ जी, देखो तुंमें भाया ।
मुखरोग बोलतो न जूइं जी, तेहनां फल पाया ॥२२॥
२३५. ते नर अपजस पांम्यो जी, तिहांथी निसर्‌यो ।
आदर कोइ न ठांमे जी, बोलतो विसर्‌यो ॥२३॥

२३६. एहवो उत्तर एह जी, बोलो मां बेटा ।
बल पराक्रम पूछ्यो जी, बेसो तुमे हेठा ॥२४॥
२३७. उलटो उत्तर एहवो जी, वछ तुमें मत बोलो ।
नयण उघाडि जूओ जी, हियडुं निज खोलो ॥२५॥
२३८. धन जोवनमां मातो जी, रहे छे तू पूत्र ।
रंगरसमां अति रातो जी, सुं जांणें घरसूत्र ॥२६॥
२३९. राजादिकनी चाह जी, मनमें मत धारो ।
निज कुल रीत निवाहे जी, सही तमें संभारो ॥२७॥
२४०. विणज करो कोई वारु जी, मन धीरज करो ।
सुख पांम्यो श्रीकारु जी, लछी बहु वरो ॥२८॥
२४१. इणि परें ढाल रसाल जी, उक्तथि आठमी ।
बोली मंगलमाल जी, बहु गुंण पाठमी ॥२९॥
२४२. **ऋषभ** कहें भवि लोको जी, उत्तम एहवो ।
विनयचट्ट जे बोल्यो जी, पालस्ये तेहवो ॥३०॥

॥ दूहा ॥

२४३. वचन सुणि निज तातनां, **विनयचट्टकुमार** ।
शीखामण तुमें शुभ कही, ए उत्तम आचार ॥१॥
२४४. भाग्य प्रमाणे पामवो, सुख दुःख कर्म विशेष ।
हइइं न करवो हरडको, ऋद्ध पराई देख ॥२॥
२४५. परदेशे जाईस प्रथम, मेलीस बहुंला माल ।
वड तेजी तुरकि वडंग, अश्वतणां करुं वाल ॥३॥
२४६. कर्मवंत उद्यम करें, तेहथी थाइं सिद्ध ।
देश तथा परदेशमा, पांमे बहोली ऋद्ध ॥४॥
२४७. तुंम परसादे तातजी, होस्यें सवि मुझ काज ।
जो परमेश्वर पाधरो, तो सही लेइस राज ॥५॥
२४८. कालें कर्म कपालमां, विधनां लिखी सो भाय ।
अणहुंनि होइं नही, होणी होय सो थाय ॥६॥
२४९. एहवें उत्तर वातनो, सांभलज्यो श्रवणेंह ।
पुत्र कहे छे तातनें, थयो जेणिपरे तेह ॥७॥

॥ ढाल - ९मी ॥

रसीया राचो हो दांनतणें गुणें – ए देशी ॥

२५०. भवियण सुणज्यो रे कौतिक वातडि, निज मन राखी रे छाय सुगुणनर।
जे नर वडवखती प्रथवी तलें, तेहनां चरित केहवाय सु० भ० ॥१॥

२५१. **भावनी कर्मरेखानां** जोगथी, जिणविध लीखिओ ते थाय पिताजी ।
तेहमां कोइ मिटावि नवि सके, जो करे कोड उपाय पि०, भ० ॥२॥

२५२. एक कथा सांभलज्यो अभिनवी, सुंणतां अचरीज थाय पि० ।
उठी आई जे परमार्थनी, जगमें वात कहाय पि०, भ० ॥३॥

२५३. नगरी अनोपम छें **अलिकापुरी, मदनभ्रम** तिहां राय पि० ।
तेज प्रतापें शत्रुखंडणो, कुसुमपरें जिम काय पि०, भ० ॥४॥

२५४. पटराणी तस **गुंणमाला** भली, रतिरूपा सम होय पि० ।
देवपरें नित सुख संसारनां, विलस्यें पूर्वदत्त जोय पि०, भ० ॥५॥

२५५. अनुंक्रमें सुख संसारनां, सेवतां प्रसव्या पुत्र ज सात पि० ।
संतती सात उपर एक पुत्रीका, तेहनी सुणज्यो रे वात पि०, भ० ॥६॥

२५६. नृप सुंणी मनमें अधिक आणंदीयो, माहरो पुरण भाग्य पि० ।
पुत्र वीचें नृप मनसु पुत्रीका, राखे अधीकेरो राग पि०, भ० ॥७॥

२५७. **भावनी** एहवो नांम ठव्यो, भलो सजन मन सुखदाय पि० ।
पंचधावें करी हुलरावतां, वरस ते आठनी थाय पि०, भ० ॥८॥

२५८. नृप देखिनें मनमें चिंतवे, कुंमरी भणावण काज पि० ।
पंडित पासें मुकुं मनोहरु, मेली विद्यानो रे साज पि०, भ० ॥९॥

२५९. शुभ दिन शुभ मुरत ने शुभ घडी, मुंकि पंडित पास पि० ।
साथें समप्यो सेवक सम वयें, **कर्मरेखीओ** नांम छें तास पि०, भ० ॥१०॥

२६०. रातदिवस भणे मनरंगस्यूं, चित्तमें धरी अति चूप पि० ।
विद्यागुरुनो गुरु ते जांणिइं, विद्यादेहिनो रूप पि०, भ० ॥११॥

२६१. शास्त्र सकलमें ते डाही थई, निपूणा विनय निप्पन्न पि० ।
तस संघातें चरणेस वि, भण्यो विद्या राखि रे मन्न पि०, भ० ॥१२॥

धर्मवंत बेटी भली, कहा अधरमी पुत ।
छालीके गलें दोय थण, तांमें दूध न मूत ॥१॥ - क

२६२. नृपपुत्री अति देखि विचिक्षणां, मनसुं करे गुरु सोस पि० ।
कवण नृपति वर थास्ये एहनो, जोउं निश्चल जोस पि०, भ० ॥१३॥
२६३. खोलि जोय पंडित पुस्तिका, जूयें लक्षण रेख पि० ।
अहो इण साथें चाकर एहनो, थास्ये वर सुविशेष पि०, भ० ॥१४॥
२६४. मस्तक धुंणी कहे किंम संभवें, स्यूं मुझ कुडो रे जोश पि० ।
वली विचारे विधिनां लेख लख्यो, होस्यें सही निरदोष पि०, भ० ॥१५॥
२६५. इणि परें ढाल ए नवमी अति भली, जुगतें जांणो रे भाय पि० ।
ऋषभ कहें श्रोताजन सांभलो, आगल किणविध थाय पि०, भ० ॥१६॥

॥ दूहा ॥

२६६. ते देखि नृपपुत्रिका, चिंते मनमां तांम ।
पूछ्यो गुरुने ततखिणें, सिस धुण्यों किण कांम ॥१॥
२६७. को अवगुण मुझ देखीयो, अथवा लोपी कार ।
तिण कारण तुमने प्रभु, पूछुं हुं नीरधार ॥२॥
२६८. एहनो उत्तर मुझ दीयो, कृपा करी गुरुराज ।
जिम हीयडो सांसो मिटें, सिझे वंछित काज ॥३॥
२६९. गुरु बोल्या रे वछ तुं, सांभल साचि वात ।
दिलमें राखें तो कहुं, सिर धुणण अवदात ॥४॥
२७०. सा कहे मुझने दाखवो, वात जथारथ तेह ।
किंणही आगल नही कहुं, धारीस मनथी नेह ॥५॥

॥ ढाल १०मी ॥

नणदल बेंदलि ले – ए देशी ॥

२७१. पंडित कहे तव वात, निसूंणि पुत्री अवदात हो, चित्त धरी सांभलो ।
तुझनें देखि गुंणगेह, वलि विद्या सहित ससनेह हो, चि० ॥१॥
२७२. हुं देखि मनमां सोच्यो, ज्योतिष ऊंडो आलोच्यो हो, चि० ।
मुझ हीयडे इम भासें, वर नृपति कूंण थास्ये हो, चि० ॥२॥
२७३. में जोयो ज्योतिस वारु, पति चाकर होस्यें नीरधारू हो, चि० ।
एह अचंभो ताहरो, देखि शिर धुंण्यो माहरो हो, चि० ॥३॥
२७४. त्रीज न तेरस क्यारें, किम भेली मले ए लारे हो, चि० ।
ते सुंणि नृपनी कन्या, पति चाकर तुझ सीर धन्या हो, चि० ॥४॥

२७५. पिंण इंम किम ए मिलस्ये, के मुझ विद्या खोटी पडस्यें हो चि० ।
एक तो माहरी माय, वली वांझणी केम कहाय हो, चि० ॥५॥
२७६. ए कह्यो तुझनें ने(नी)ठो, जेहवो में निमित्तमें दीठो हो, चि० ।
ते सुंणीने नृपनी कन्या, मन चिंते मुझ अधन्या हो, चि० ॥६॥
२७७. कुडो न थाइं गुरु जोस, किणस्यूं कीजें हवें रोस हो चि० ।
पिंण करीइं कोई उपाय, जिम सघली टले बलाय हो चि० ॥७॥
२७८. मरावुं जई नृपने पासें, माहरो पति केम करी थासें हो चि० ।
इम धारी मनमां वात, आलस न करुं खिणमात हो चि० ॥८॥
२७९. ततखिण तिहांथी उठी, गुरु पाय लागी मन झूठी हो चि० ।
चालती जमनी चिठी, जांणे क्रोधानल अंगीठी हो चि० ॥९॥
२८०. आवि नृप घर द्वार, जइ पेठी अंधारे आगार हो चि० ।
त्रुटो पर्यंक जोई, तिहां सुती हठीलि होई हो चि० ॥१०॥
२८१. तव नृप जमवा आवें, पुत्रीने हेजें बोलावे हो चि० ।
हुंकारो मुख नवी भाखे, वली मुखथी वयण न दाखे हो चि० ॥११॥
२८२. रे रे बेटी किण काज, निरर्थक रीसांणी आज हो चि० ।
कूंण एहवो तुझ लोपें, तुं विण गुंनहे किम करी कोपे हो चि० ॥१२॥
२८३. कूंण लोपें तुझ वयण, तुं माहरे वालनी नयण हो चि० ।
प्रांण समी तुं मुझनें, विरूओं किणें दाख्यो तुझनें हो चि० ॥१३॥
२८४. कहो पुत्री मुखथी तेह, मुझस्यूं थीर राखी नेह हो चि० ।
तेहनो उसड किजे, जिम ताहरो चित पतीजे हो चि० ॥१४॥
२८५. कूंण छे नगरमां एहवो, दुहवें नवि दिशे तेहवो हो चि० ।
जेहनें होये दोय सीस, ते तुझनें चडावे रीस हो चि० ॥१५॥
२८६. तुं मुझ आतम प्यारी, न रहे तुं नयणथी न्यारी हो चि० ।
तुं तो छे अमृतकारी, तुझ उपरें ऋद्धि नांखु वारी हो चि० ॥१६॥
२८७. एहवा नृपनां वयण सुंणी, पुत्री उघाडें नयण हो चि० ।
दशमी ढाल ए रूडी, कहे **ऋषभ** न जांणे कूडि हो चि० ॥१७॥

॥ दूहा ॥

२८८. पुत्री कहें सुणो तातजी, तुंम परसादे सोय ।
सजन सकल पावां तलें, हाथ धरे सहु कोय ॥१॥

२८९. तुंकारो मुझ कूण दीइं, कूण लोपे मुझ वेंण ।
जी जी करत सूके जीहा, सकल सगा तसेण ॥२॥
२९०. पिंण माहरा मनमें अछें, चिंता एक ज भुप ।
जो मुझ वायक चित धरो, दाखू तास स्वरूप ॥३॥
२९१. नृप कहें पुत्री तुं कहे, ते किम न करूं काज ।
कहे तो तुझ उपर दिउं, उवारी ए राज ॥४॥
२९२. तव **भावनी** कहें भूपनें, **क्रमीयो** चाकर तेह ।
मारो अनुचर एहनें, चाचर तणें जे खेत(ह?) ॥५॥
२९३. तव सुणि नृपति बोलियो, रे पुत्रि निरलज्ज ।
एहवो वायक किंम कहें, अकयारथ विण कज्ज ॥६॥
२९४. विण गुंनहें ए किम हणुं, सेवाकारी दास ।
खजमतिकारी ए खरो, रात दिवस रहें पास ॥७॥
२९५. तुझ सेवामें ए रह्यो, भण्यो ज ताहरें साथ ।
सखरो सेवक आपणो, तो किम हणें अनाथ ॥८॥
२९६. सो वाते एक वातडि, साची कहुं नरेश ।
जो एहनें हणस्यो नही, तो पावक करूं प्रवेश ॥९॥

॥ ढाल - ११मी ॥

इडर आंबा आंबली रे इडर दाडिम द्राख - ए देशी ॥

२९७. तात वयण मांने नही रे, समझावें करी सोर ।
बार वरस पांणि तले रे, मगसेल न भींजे कोर रे;
बेटी म करो एह अकाज, किंम रहस्यें जग लाज रे बे० ॥१॥
२९८. इण बालक को बापडो रे, विंणसाड्यो नही काज ।
ऋद्धि न ताहरी अपहरी रे, लीधो न पाडि राज रे, बे० ॥२॥
२९९. एक दिवसनी चाकरी रे, उत्तम न भुले कोय ।
बालकपणें बहुली करी रे, सेवा हीयडे जोय रे, बे० ॥३॥

उक्तं - श्लोकः

३००. गुणाः लक्षं परित्याज्याः दोषाः गृह्णन्ति दुर्जनाः
लक्षं दोषं परित्याज्यं गुणं गृह्णन्ति सज्जनाः

ढाल पूर्व –

३०१. तव पुत्री कहे तातने रे, राखो एहने गेह ।
आज थकि अन्न माहरे रे, जिंमवो दुजि देह;
पिताजी मुझ मन एहि वात, छोडो दुजि वात, पि० ॥४॥

३०२. समझावि समझे नही रे, जे हठ लीधो जोर ।
मुरख सठ वली स्त्रितणो रे, राजा बालक ओर, पि० ॥५॥

३०३. ए च्यारें हठ आपणो रे, लीधो न छोडें कोय ।
तिम ए माहरी पुत्रिका रे, कहुं तिम अधीकी होय रे, बे० ॥६॥

३०४. चित्त आवें जिंम ताहरे रे, रांजि होइं तुझ जीव ।
ते करो अम आज्ञा अछें रे, सुख पांमो सदीव रे, बे० ॥७॥

३०५. ते सुंणिनें ततखिणें रे, तेडाव्या चंडाल ।
सिर झालि सिल्ला ऊपरे रे, पछडायो ते बाल रे;
प्रांणि सांभलो एह संबंध, जेणेविध हुओ प्रबंध रे, प्रां० ॥८॥

३०६. नगर खाईमां नांखिओ रे, मृत कलेवर तेह ।
एहवें अर्द्ध रजनि समे रे, अचरीज हुओ जेह, प्रां० ॥९॥

३०७. बेसि विमानें एकठा रे, शिव पारवति जण दोय ।
प्रथवितलें जोतां थका रे, मृतक दिठो सोय रे, प्रां० ॥१०॥

३०८. ते देखिनें विनवे रे, उमया इसमें तांम ।
सचेतन एहनें करो रे, जिंम सिझें तस कांम रे,
प्रभुजी माहरो मांनो वेण, तुंमें जुओ उघाडि नेण रे, प्रां० ॥११॥

३०९. अमृतजल ते ऊपरे रे, छांट्यो ततखिण ईस ।
सजीवन ते मांनवी थयो, करजोडि नमांवें सीस;
प्रभुजी थें दियो जीवितदांन ॥१२॥

३१०. शिव कहे जाजें तुं सही रे, देशांतर जिहां दुर ।
कर्म पसाइं पांमसी रे, सुत तुं भोग सनुर रे, प्रां० ॥१३॥

३११. चाल्यो तिहांथी उतावलो रे, आव्यो उदधि पास ।
प्रवहण वेपारी तणां रे, देखि विंनवे तास रे, प्रां० ॥१४॥

३१२. राखो सेवक मुझ प्रते रे, तो आवुं तुम साथ ।
केहस्यो ते खजमति करू रे, नित प्रतें ताहरी नाथ रे, प्रां० ॥१५॥

३१३. व्यवहारी तेणें संग्रह्यो रे, चाल्यो तेहने संग ।
अनुंक्रमे वाहण चालतां रे, आव्यो नगर उत्तंग रे, प्रां० ॥१६॥
३१४. कांठे प्रवहण नांगर्यां रे, तंबू तांण्यां जेह ।
क्रमियानें तेडि कहे रे, शेठ धरी बहु नेह रे, प्रां० ॥१७॥
३१५. नगरीमां जा तू सही रे, सुखडि लेवा काज ।
मौल देई लेइ करी रे, वेहलो आवजे आज रे, प्रां० ॥१८॥
३१६. तिहांथी चाल्यो चडवडि रे, स्वांमी वचन प्रमांण ।
कंचनपुर नयरीतणो रे, जोवे दुर्ग मंडाण रे, प्रां० ॥१९॥
३१७. इहां जे कौतिक थायस्ये रे, सुंणज्यो एकण चित्त ।
ढाल इंग्यारमी ढलकती रे, कही **ऋषभें** इणि रीत रे, प्रां० ॥२०॥

॥ दूहा ॥

३१८. नयरि सुंदर निरखीनें, हरख्यो अति ससनेह ।
रोम रोम उलसित थयां, विंण ऋत वूठो मेह ॥१॥
३१९. आव्यो नगरीमां वही, पांम्यो परमाणंद ।
जोवा लागो जुगतस्युं, हियडे अधीक आणंद ॥२॥
३२०. करीयाणां देखे घणां, वस्तू तणो नही पार ।
व्यापारी दिशें नही, आव्यो मध्य बाजार ॥३॥
३२१. कोइक नर दिठो तिहां, पुछे तेहनें वात ।
नगरीजन सहु किहां गया, कहो मुझनें अवदात ॥४॥
३२२. वलतो उत्तर तव कहें, सांभल पुरष सनूर ।
नृपवाडिइं सघलां गया, भेला हुआ जई भूर ॥५॥
३२३. अम नगरीनो राजीओ, **महाकाल** तस नांम ।
न्यायवंत शोभे निलो, जांणीइं बीजो रांम ॥६॥
३२४. कोईक कर्मनां जोग्यथी, रोग थयो तस देह ।
तिंण रोगें व्याकुल पणें, मरण लह्यो छे जेह ॥७॥

॥ ढाल – १२मी ॥

हमीरीयानी – ए देशी ॥

३२५. नरपति मरण पांम्या पछी, चिंते पुरनां लोक सनेही ।

नृपनें पुत्र दीसे नही, अवर तो सघला थोक, स० ॥
सांभल साहसीक पुरस तुं, आंकणी ॥१॥
३२६. चिंतातुर सघली प्रजा, समरी तिहां कुलदेव स० ।
आवि कहे प्रधानने, हरख धरी ततखेव स० सां० ॥२॥
३२७. चिंता तुंमें कांइ करो, धरो मनमां अति धीर स० ।
वंछीत सघलो थायस्यें, जाओ वाटीकांई वीर स० सां० ॥३॥
३२८. गजमाला तिहां घालस्यें, जेहनां कंठ विचाल स० ।
ते तूंमे नगरनो जांणज्यो, भुजबल अधिक भुपाल स०, सां० ॥४॥
३२९. इम कहीनें देवी गई, मन आनंदित गेह स० ।
द्वादशमो दिन जांणज्यो, आज अनोंपम एह स०, सां० ॥५॥
३३०. नगरलोक सहु मेली करी, परवरीयो परधांन स० ।
वाजें वाजित्र अति घणां, गुहिरा गावत ग्यांन स०, सां० ॥६॥
३३१. तिंण कारण सहुको तिहां, मिलीया आ जोवा काज स० ।
पुरा पुन्यनो जे धणी, पांमस्यें नगरीनुं राज स०, सां० ॥७॥
३३२. ते सुणि चर हरखित थयो, पोहतो वाटिकां तांम स० ।
हुं पिण निरखूं ए किम होस्यें, मनमां चिंतवी आंम स०, सां० ॥८॥
३३३. आवंतो देखि तेहनें, अश्व करे शुभ हीश स० ।
कंठे गजमाला ठवें, छत्र धरायो सीस स०, सां० ॥९॥
३३४. चामर बिहु पासें थया, मन चिंते मुझ आज स० ।
भाग्य फल्यो सही माहरो, तिणथी लह्यो ए राज स०, सां०
आज सकल मंगल थयो आं० [॥१०॥]
३३५. आकाशें सुर वांणी थई, वडभागी नर रूप स०,
नाम जथार्थ मनोहरु, **कर्मरेखा** ए भूप स० आ० ॥११॥
३३६. गजवर खंधे बेसाडीनें, वाजंते विवीध वाजीत्र स० ।
प्रजा सहु प्रणिपत्य करें, आव्या नृप घरे जत्र स०, आ० ॥१२॥
३३७. दांने मांने संतोषीया, जाचकजन हुंता जेह स० ।
गाम गराश ने गज तूरी, आप्यां अधीक अछेह स०, आ० ॥१३॥
३३८. एहवें सेठें जाणीयो, हजीय न आव्यो दास स० ।
के नगरीमां भूलो पड्यो, जोवूं जइनें तास स०, आ० ॥१४॥

३३९. बहु परीवारें परिवर्‌यो, आव्यो चोहटा विचें सार स० ।
लोक सकल लेई भेटणुं, जायें नृपने दुआर स०, आ० ॥१५॥
३४०. ते साथे विवहारीयो, प्रणम्यों अवनीनाथ स० ।
ते देखिनें उलख्यो, मलीया घाली बाथ स०, आ० ॥१६॥
३४१. मनमांहें सेठ आणंदीयो, संपूरण थई आश स० ।
मंत्रीपद ते थापिनें, राख्यो महीपति पाश स०, आ० ॥१७॥
३४२. इणि परें राज्यसुख भोगवें, पांम्यो पुरवदत्त स० ।
ऋषभ कहें ढाल बारमी, सुंणज्यो आगल वत्त स०, आ० ॥१८॥

॥ दूहा ॥

३४३. **कर्मरेखा** नृपति हवें, चिंते चित्त मझार ।
धण कण कंचन गज तूरी, दत्त देइ वजाओ वार ॥१॥
३४४. दातारी तेहवो हुओ, जेहवो **कर्णनरेश** ।
परदुःख काटण परगडो, वारु बालक वेश ॥२॥

यतः–

३४५. दूरे दृश्यन्ति दातारो, दूरे दृश्यन्ति पर्वत(ताः) ।
अदातारो नैव दृश्यन्ते, अंधकूपजलो जथा ॥१॥

[ढाल पूर्व]

३४६. वावि किरत चिहुं दिशे, पसरी रवि ज्यूं तेज ।
जाचकजन सोभा वदें, दातव्यतणें ज हेज ॥३॥
३४७. किरत सुणि **मदनभ्रमें**, जाचक केरे मुख ।
वर धार्‌यो पुत्रीतणो, आनंद अधीकें सुख ॥४॥
३४८. निज मंत्री तेडि नृपति, भाखे ए[ह]वी वांण ।
कर्मरेखा राजा कनें, जाउ वचन प्रमांण ॥५॥
३४९. ते मंत्री ततखिण तिहां, जई सगाई कीध ।
पांणिग्रहण करावीओ, आपी बहुली रीद्ध ॥६॥
३५०. निज रांणीसुं परवर्‌यो, आयो **कर्म नरेश** ।
राज्य तिहां पोतातणो, विलस्यें सुख विशेष ॥७॥
३५१. इक दिन रांणि राजवी, उंचा चडि निज गोख ।
चोपड पासा खेलतां, हियडे धरी अति जोख ॥८॥

३५२. आयो पावशउ पडी, तिणही ज वेला मेह ।
सांहमां छांटा नृपति पर, पडता दिठा तेह ॥९॥

॥ ढाल - १३मी ॥

थांरा सेहर भलो जोधाणां राजाजी, अवर भलेरों थांरो मेडतोजी - ए देशी ॥

३५३. रांमत पिण वधते नेह रांजि(राजि)द जी, ते पिंण मुंकि न जइं शकेंजी ।
बहु उतावल तव किध रा०, सारी पाकि(डि?) नवि सकें जी ॥१॥

३५४. तव रांणी राखें चीर रा०, नृप आडो स्नेहनें वसें जी ।
ते देखि ततखिण भूप रा०, खड खड अति मुखथी हसें जी ॥२॥

३५५. ते रांणी पूछें तांम रा०, कुण कारण प्रभुजी हसो जी ।
के कोई अचरीज दीठ रा०, के कोई पत्नीमें मन वस्यो जी ॥३॥

३५६. तव नृपति भांखे इंम रांणीजी, सांभलो तुंम कहुं वातडि जी ।
गुरु ज्योतिक खोटो न होय रा०, वली लिख्या जें छठ्ठी रातडि जी ॥४॥

३५७. एक दिवस हुंतो जे मुझ रा०, तिंण दिन जीव रहीत कर्‌यो जी ।
आज दिवस वल्या सनूर रा०, छांटे चीर आडो धर्‌यो जी ॥५॥

३५८. ते दाख्यो पूर्व विरतंत रा०, सांभली चित्त अचरीज धरे[जी] ।
तुंम अम जे भेलो लेख रा०, ते कहों कुंण अलगो करे जी ॥६॥

राणी प्रोक्तं काव्यं –

३५९. उदयति यदि भानुः पश्चिमायां दिशायां
विकसति यदि पद्मं पर्वताग्रे शिलायाम् ।
प्रचलति यदि मेरुः शीततां याति वह्नि
स्तदपि न चलतीयं भाविनी कर्मरेखा ॥१॥

ढालपूर्व –

३६०. इणि परिं पांम्या सुख पिताजी, सुकृत पूर्वसंजोगथी जी ।
किहां नृपपुत्री किंहा दास पि०, निज निज कर्मनां भोगथी जी ॥७॥

३६१. तिम हुं पिंण राज्य लहेश पि०, निज पराक्रमें नृपतणुं जी ।
तिहां कांई न लागें वार पि०, अधिकूं तुंमनें कांई भणुं जी ॥८॥

३६२. तव रीस करी कहे शेठ बेटाजी, सांभल माहरी वातडि जी ।
अमे तो व्यापारी साह बे०, नही तुं घर जोग जातडि जी ॥९॥

३६३. नृपनो कोई सुंणें दास बे०, धण कण कंचन सवि हरे जी ।
जीवतणां संदेह बे०, नृप जांणें तो इंम करे जी ॥१०॥
३६४. इम कहि पुत्रनें तांम श्रोताजी, मुख उपर लापट हणी जी ।
काढ्यो निज गृह द्वार श्रो०, वात तो आवी इम बणी जी ॥११॥
३६५. चित्त चिंते विनयचट्ट श्रो०, पिता शिख हीतकारणि जी ।
गुरु पितानी जे रीश श्रो०, सुवनितनें हृदें धारणि जी ॥१२॥
उक्तं –
३६६. हयं च शिष्यं सुत वल्लभानां, त्रासं न मान्यं गुणमाश्रयन्ति ।
यथा मृदंगे करकष्टकर्मे, करेण हन्यं मधुरं वदन्ति ॥१॥
ढाल पूर्व –
३६७. एह वयणथी नांणू रीस श्रो०, तो पिंण विदेशें जायसूं जी ।
इम जांणि निसर्‌यो तेह श्रो०, मननी अधकि [क]डुंबसूं जी ॥१३॥
३६८. इणि परें प्रथम उल्लास श्रो०, भाख्यो मननी मोजस्यूं जी ।
श्रोताजननें एह काज श्रो०, चतूराइंनि चोजस्यूं जी ॥१४॥
३६९. आगें सरस रसाल श्रो०, चित्त देइनें सांभलो जी ।
रीझस्यो सुंणतां एह श्रो०, जो तजस्यो प्रमादनो आंमलो जी ॥१५॥
३७०. तपगच्छ तख(प)त दिणंद श्रो०, **श्रीविजयधर्म्मसूरिसरू** जी ।
सुख संपतिदायक एह श्रो०, तेह तणो राज्यें वरू जी ॥१६॥
३७१. इम भाखी ढाल रसाल श्रो०, त्रयोदशमी उलटपणें जी ।
बुध आगम सुगुरू पसाय श्रो०, **ऋषभसागर** आणंद घणें जी ॥१७॥

*इति श्री विनयोपरें **विनयचट्ट श्रेष्ठिपुत्र कथा***
प्राकृतबंधे प्रथम उल्ला[स] संपूर्णः
सर्वगाथा – ३६४ (३७१)

श्रीविनयचट्ट शेठना रासना कठिन शब्दोनां अर्थ

(उल्लास-१)

गाथा क्रमांक	सळंग उल्लास	ढाल	कडी	शब्द	अर्थ
६	१	१-दूहो	६	चूंप	उत्साह
६	१	१ "	६	अठील	बेडी
३०	१	२ "	२	अणुंहार	ना जेवी
३०	१	२ "	२	वेधक	चतुर
३०	१	२ "	२	जिन	दृढ निश्चयी माणस
३१	१	२ "	३	नागरी	चतुर स्त्री
३२	१	२ "	४	ख्याग	शूरवीरता (?)
३२	१	२ "	४	त्याग	दान
३५	१	२ -	२	तेजी	तीखा स्वभावनो घोडो
३५	१	२ -	२	तूरकि	तूर्की देशना
३५	१	२	२	कंबोजा	अफघानिस्तान देशना
३५	१	२	२	काबली	काबुल देशना
३५	१	२	२	खुरसांण	खोरासान देशना
३५	१	२	२	एराकि	ईराक देशना
३५	१	२	२	घाटी	आक्रमक
३७	१	२	४	सूरमां	शूरवीर
३७	१	२	४	सारनि	खजानानी
४०	१	२	७	माजण	सगो भाई
४४	१	२	९	चरड	लूंटारो
४५	१	२	१०	जिन	जैन श्रावक
४९	१	२	१४	लीह	मर्यादा
५७	१	३-दूहो	५	त्रांट	बारणा परनी वांसनी पटी (पडदा माटेनी)
६१	१	३- -	यतः-१	त्रांव	त्रण वखत ?
६२	१	३	यतः-२	खोसि	लूंटी ले ?
६३	१	३	४	दसोठण	जन्मना दसमा दिवसे थतो जन्मनो उत्सव
६५	१	३	६	परगडो	प्रगट थयेल – प्रसिद्ध

गाथा क्रमांक	सळंग उल्लास	ढाल	कडी	शब्द	अर्थ
६७	१	३	७	दुज	बीजनी तिथि
६८	१	३	९	जमवार	जन्मारो
७०	१	३	११	वांणोतर	चाकर
७७	१	४-दूहो	१	सखर	सरस-सुंदर
९०	१	४	३	थाटो	भपको - दबदबो
९५	१	४	७	चोज	तर्क, दलील, बुद्धिनी सूक्ष्मता
९६	१	४	८	ओरो	ओरडो
९७	१	४	९	जोपे	दरवाजे
९७	१	४	९	आलो	रहेठांण (?)
९९	१	४	११	निवेडवो	नभाववो – समजवो ?
१००	१	४	१२	कएथ	कहे छे
१००	१	४	१२	तेथ	ते माटे
१०१	१	४	१	चाढ्यो	चड्यो
१०८	१	४	२०	बोहर	फरीथी ?
१३१	१	५	१२	इभ्यकमाई	शाहुकारोमां – धनाढयोमां
१३५	१	५	१५	ढलकर्ति	नम्र थई ?
१३८	१	६	३	जोख	मोजशोख
१४९	१	६	२	थागनां (थाग)	अंतने – पारने (अंत)
१५१	१	६	४	आथ	दोलत – पूंजी – मूडी
१५१	१	६	४	वय	व्यय
१५८	१	६	९	जुआरवेल	जुगार ?
१७५	१	७-दूहा	४	सिठिं	श्रेष्ठि
१८४	१	७ -	२	हल्ल	?
१८८	१	७ -	४	पोतो	भंडार
१९३	१	७	९	पावसरीत	वर्षाऋतु
१९५	१	७	११	दांमनि	वीजली ?
२०१	१	७	१६	आखि	कही
२०६	१	८-दूहा	५	काकर	कांकरो
२११	१	८- "	९	थपाटां	पगथी प्रहार करी
२१४	१	८ -	३	लांक	वळांक (कमरनो)
२१९	१	८ -	७	वाहि	निरर्थक – विचारी ?

गाथा क्रमांक	सळंग	उल्लास	ढाल	कडी	शब्द	अर्थ
२२५		१	८	१३	चवला	चोला
२२५		१	८	१३	भठीयारी	?
२२७		१	८	१५	महिषी	भेंस
२२७		१	८	१५	झोटी	जुवान भेंस
२३०		१	८	१८	अइ	अत्यंत
२३२		१	८	२०	पल्लो	पालव – पहेरेला कपडानो छेडो
२३२		१	८	२०	चोहटा	बजार
२४४		१	९-दूहा	२	हरडको	कोई बाबतनो चसको, लगनी.
२४५		१	९- "	३	वाल	वहाल
२६९		१	१०-दूहा	४	अवदात	चोक्कस, वृत्तान्त
२७१		१	१० -	१	अवदात	गुण, पुण्यशाळी ?
२७४		१	१०	४	लारे	साथे
२७६		१	१०	६	नीठो	हेतु
२७९		१	१०	९	अंगीठी	चूलो-सगडी
२८४		१	१०	१४	पतीजे	विश्वास राखे
२९२		१	११-दूहा	५	चाचर	शिखर – शृंग ?
२९२		१	११ "	५	खेह	नाश
३०८		१	११ -	११	उमया	पार्वती
३१२		१	११	१५	रवजमति	सेवा ?
३१५		१	११	१८	मौल	मूल्य – किंमत
३१६		१	११	१९	चडवडि	झडपथी
३३३		१	१२	९	हीश	हेषारव-हणहणाटी
३३६		१	१२	१२	जत्र	ज्यां
३४३		१	१३-दूहा	१	वार	द्वार
३५१		१	१३-दूहा	८	चोपड-पासा	चोपाट–चोगठां बाजी
३५१		१	१३ "	८	जोख	आनंद
३५२		१	१३ "	९	पावशउ	वरसाद
३५३		१	१३	१	सारी	सोगठांबाजी खेलवानो पासो
३६४		१	१३	११	लापट	थप्पड – लाफो
३६७		१	१३ -	१३	अधकि	अधिक – वधारे
३६८		१	१३ -	१४	चोजस्यूं	चमत्कारपूर्ण उक्ति
					चोज	कौतुक.

राजस्थानी गूढा

– सं. उपा. भुवनचन्द्र

गूढा - पिरोली - हरियाली ए लोकसाहित्यनो एक प्रकार छे, तेथी प्रत्येक भाषामां एनुं सर्जन थयुं छे. अहीं राजस्थानी भाषाना गूढा (दूहा अने कविता) संकलित कर्या छे. जवाबो प्रायः हस्तप्रतोमांथी ज मळ्या छे.

जोधपुर – चोपासनीस्थित राजकीय शोधसंस्थानना हस्तलिखित संग्रहमांथी गूढा तथा हरियाली सारी संख्यामां प्राप्त थया छे. केटलीक हस्तप्रतो मात्र हरियाली-गूढाना संग्रहनी ज नीकळी.

हस्तप्रतोनी नकलो आपवा माटे संस्थाननो तथा खास करीने श्री विक्रमसिंह भाटीनो आभार.

*

दोय वामर (?) फरहर अधर नोवत भीजै,
अधर राग बोह जमे अधर दीपक ति सीजै,
संग साप निरजीवे आप निरजीव कहावे,
विभचार न सि नारी रहत पतिवरता दावै,
ओर हार चलै पर हुकमसुं करे असवारी पवन पर,
खेमचंद या कवित को [अरथ]सु को जानत चतुर नर. १

[गुडी, धजा, पतंग]

दस पुरखे इक पुरख मंत्री दोइ मेल समेला,
तिण में जो इक नार भोग सजोग भेला,
कचु भीतरि रहै कचु पिण न कहावै,
राजा-परजा हाथ सेज नरनार रमावै,
सा परी जात जाणै सूके --मत्र खीत्यो रहै,
कवि गद हीयाली पाठवे अरथ कोइ पंडत लहै. २

[पानबीडा]

पुरख एक पांगुलो जीभ विण कीरत जंपै,
नख-चख-श्रवण विहूणो तास बोल्या अरि कंपै,

रहे सूथर दरबार बंध गजबंध चलावे,
मया करै महीपति तास सु शोभा पावै,
अरि थाट अडण सूरीस सकज्ज परदलतणो ज पलणो,
कवि चंद कहे स कवण नर जीभ पखै जसजंपणो. ३

[नगारा]

पुरष एक परगटो चरण विण पुहवी चले,
मुख विण खाण ज खाय प्राण विण अरिदल पलै,
घुमो घण संसार रातदिन फिरै घर घर,
अग्नि थकी ऊपजै सीलबल हो सचराचर,
सील ... ...
सदा भजीयै स दीठो,
नित आवे नित जाय कदे न एकठा थाय,
सपतदीप संचरै जाय पिण कदे न जाय,
नही प्राण न पिंड न नयण चख चलण,
महीयल ऊपरि अछै अमर,
छत्रराव सुण विनती कवण सु नारी कवण नर. ६(४?)

[दिन-रात]

कमल बसै दोय पुरख पुरख नै पुरख कहीजै,
तो बोले मुख नही तियां विण सबद न रीझै,
यौवन समी-दो नार श्यामरोमा अणीयाली,
पुरखां ऊपरि रहे लीक यक दूआं विचाली,
राव राण सुभट सहू कर ग्रहे सु कवि वलपरस चवै,
अलु मलक असमान का तो प्रवीण सहू को कहै. ७ [मूछ]

तीनमुखो एक पुरुष पुरख लेई गजे चढायो,
गज चढ किया बहु खंड खंड लेइ बहुत जुडायो,
जुडत भई इक नारी, नारी सहू नयणे दीठी,
दीठी भुज जुग दंड सोइ सरबु इस मीठी,
जीभ नहीं पय-सीस विण कवि जन विचार विरलो लहे,

तास वास **उदैभाण** कहै खीरसमुद्र उपरि रहे. ८

[स्त्रीनो कापडो]

[कांचली]

वड कवि कियो विचार एक अचंभो दीठो,
नै पिण वहै सपूर नदी पिण नीर न दीठो,
होता सांवण गर सकज कर जीमण आहार जर,
जल भर्यो घट का जल पीवे कवण विचार सुजाण नर, ९ [होको]
नार एक नवखंड सुंदर सु पियारी,
घर घर दीसै ताइ स त्रिय सु नेह पियारी,
नीर न रुचै तास अन्न पिण किवै न ध्या(खा)वै,
नरनारी दोय-च्यार मिली सा नारि कहावे,
ब्रामण-वेस-खत्री वसै सूद्री जात राती रहे,
महीराज कहे ए जगि वसै बुधिवंत सो नित्तु लेहे. १०

[घरटी, घंटी]

एक नारी वनमें वसै मिलि आवै नर साथ,
तास भुजा दंड एक साई पुण घालै हाथ,
रुधिर करै आहार पेट विण रहै निरन्नी,
सुरही नंद देख पेम जिम धरै परणी,
सुगणां सुगणां परिहरै निगुणा सरसो नेह,
अवर हीयाली सह नवी कील(न) पुराणी एह. ११ [?]
लंक तणै अणुहार पुरुष एक जल उपनो,
जल उपनो तो कमल, कमल नही स्यामवरणो,
स्यामवरणो तो भमर, भमर नहीं कंटक होय,
कंटक होय तो मछ जाण पिण मछ न होय,
तस नाम सिंघ न सिंघ छे सुर धीर आरण सधर,
इम जाणे कवित कवि उचरै, स बूझो अरथ सुजाण नर. १२

[सिंघोडो]

किसनवरणो तो किसन, किसन नेत्र पियारो,
नेत्रपियारो तुरी, तुरी न, न, सयर सिंघारो,

सयरसिंघारो वसत्त, वसत्त न, न, नारै सो है,
नारै सोहे नाह, नाहनै न दूर तै दोहै,
पर सो पुरख महीमंडले कमल मझ दीठो इसो,
महीराज कहै हो कवीयण, पुरख नाम कहो सो किसो. १३

[काजल]

चरण सूसा का वरण मुसा का मुख उंदर का लाया है,
आंख चिडीकी नाक बिल्ली का ऐसा मरद निपाया है;
यांका टोप सुरंगा वल पहिरे वनमें फिरे इकेला,
इस पहेली का अरथ कहै तो ता गुरु का हम चेला. १४

[काछबो]

एक पुरुष दो नयण चयन मुख सोहइ दाढी,
उच्छव मंगल हर्ष क्रियासुं प्रीति ज गाढी,
दर दीवाणां मान जाज काजां सलहीजे,
ता विणु न रहे माम तास गुण केता कहीजे,
सुभ लक्षण सुंदर सुघट धर्म्म कर्म मंगलकरण,
त्रिया हीयाली पाठवे बूझो अर्थ सुजाण नर. १ [नालियेर]
अइ अइ जगदीश जिणै देवल नीपाया,
विण पाषा (?) नीपनो मूल नहु टंची लगाया,
कृष्ण वरण तिण मांहि पढिया पंडित पै दीसे,
तीन चलण जसु तणै षट्क नासिका सु लीसै,
एक नारी मांहि संचरै इंडो परहो उतारिये,
कवि दास हीयाली परठवै **केसव** किसुं विचारिये. २

[मनीसणो(?)]

त्रिया एक संसार हाथ तिनके अढाई,
पर चरणे जग भमे कल मांहि रिपु उपाइ,
करि चढी करे संहार अंगविचि सार रखावे,
मुख वसंदर (?) देत इंद्र जिम गरजि सुणावे,
हाथ चंचल के रहि रावल देवल मैं रहे,
कवि गद्द कहे गुणीयणां सुरता ह्वै सु बूझि लहे. ३ [बंदूक]

नारी एक निरजित मे – जगि सगले मांहि,
ऊंच नीच घरि अधिक साइ तो फिरे सभांहि,
मूल नही तिणु माय जिका गिरि परबत जाइ,
–न्न घणो आचरै धृत करि कदे वधाई,
जिका बोलंती इन्द्र ज्यों आरिखे सुणी जैसी,
कवि कवित ए करनौं कहे कहा ताइ नारी किसी. ४ [?]

[क्र. ८२५० चोपा. जो.]

वदन अठ कर दोय जीभ पनरा वखाणुं,
षोडश नेत्रह जुगत चरणां का अंत न जाणुं,
केइ चरण अलि गुपति केइ में परगट दीठा,
केई जीभें विष वसे केइ रस चवै समीठा,
तस देह दोय एक पूंछडी सकवि वलह एह रस चवे,
सुप्रसन्न देव हम तुमह सदा अरथ बूझि पंडित लहे. १

[पारसनाथजीरी मूरति]

एक तरवर में दीठ तेणि तरवर परि नगर,
तेथ वसे पाइक हाथ तिहां फरि न करमर;
फरी करमरें पखें सदा नर सच्चा सूरा,
नर नही पिण नार पात्र धन दिखें पूरा,
त्यां मांही को ठाकुर नहीं वली तेथ अमृत रहे,
जाण होसी सो जाणज्यो कवित एम **पिंगल** कहे. २

[माखीरो छातो]

सोहे जस सिर छत्र चित्र वंन सदा विराजे,
चंगी जिण मुख वाण जाण हरहार सु खाजे,
जोगीसर जटधार लार तस बहुली नारी,
डूंगर सहर रमंत रंमत रंग सु विचारी,
सु तियाग खाग अविचल चल बिमल सुजस जस गंग जल,
पूछियो नार प्रीतम प्रते अरथ कहो सामी अटल. ३ [मोर]

वांसइ सबली भिंत चीतवरंभी तन छोडै,
घण संझा है भार, एक पग अलग न मंडै,

घोडारे आकार, नाम पिण तेह भणीजै,
राव रंक घर हूवै ग्यान पिण किणही न गणीजै,
भल काम साम संसारहि लहुं नाम सहि उचरे,
हर लंक संक छंडी करी अर्थ कहो आदर करे. ४

[बारणारो घोडो]

नर-नारी बहु नेह अधिक एकठा घर वासो,
एक सीस दस पांव पाव दस सीस प्रकासो,
आरोगै एकठा अने एकठा ओगालै,
क्युंहीक आघो ऊतरै क्युंहीक पाछो हालै,
खवास पास बेठा खरा, भरे भरे ज्युं चरे,
सुजाण नर थें समज ल्यौ जिण दीठे कुंजर डरै.

[सांठापीलणरी चरखी]

जल विना बहु वेल वेल चिहुं कानां पसरी,
नहीं पान नहीं फूल हाथली दीसै कसरी,
च्यार नाल फल च्यार वेल फल इतरा लागा,
सो भांत भांत का फल सो जूआ जूआ फल भागा,
केइ डाल फल नील राता फुनि एकण थाणै,
तीन सेत कुंजर डसण ते उण ऊपर सही,
कहोने कविराज किसी वेल ए में कही. [चोपड, चोपाट]
उडै अभे दहदिस थित थाहर न छंडै
गयणा परि होइ रहै अन-पाणी न हु भखै,
... ...
कूकडा-मोर पंखण नही, इंडो सेवे ता सघन,
कुंभ देरीण(?) मोकल हरा, कहो पंखी ए कवण. [ध्वजा]
सांवलडी सुपियार के सुंदर सर वसै
सर वसै सु आड, आड़ नही खांची चलै,
खांची चलै तो नाव, नाव नही तो परदल पीलै,
पर दल पीलै तो हस्ती, हस्ती नही, हस्ती उतारै,
सांवलडी सुविचार के सुंदर सर वसै. [तीररी भाल, फणुं]

विण थाई ऊगमे विण पाइ हुवे झलहल,
विण फूलां डहडहै हुवै विण पानां डंबर,
विण डालां विस्तरै फल विण बहोत फूलीजै,
विण खेती नीपजै तिका विण हाथां लीजै,
विण रूप दीपै संसार विच, विण ओपत थाए प्रघल,
विण सुणी नाम विण सांभली विण दीठी जागै सकल.
[वणीयी (?)]

एक नार में दीठ दीठ में गगन उडंती,
सिंग-पूछ मैं दीठ हंस विण देह दीपंती,
च्यार रंग परसिध नाम जग मांहि चावो,
बालकसुं बहु प्रीत पवनसुं चित्त मिलावो,
गुणहीन चाहै नही गुण छूटै हरखित चलै,
अमरा सुतन आदर करी अर्थ कहो ज्युं रिपु गलै. [गुडी, पतंग]
एक अंग बहु रंग रंग रंगै बहु भंत्ती,
अंग कंठ घडी हथ हथ बाधी नर रती,
वरत चढै ऊतरै खेल खेलै खेलावै,
अंग इसीउ, कलीण हाथ आवै के नावै,
अरबरै बरै खिण ऊचरै मोटिआरां मन वसी,
सरब जाण सुगुण बूझो नरा कहो ते कन्या किसी. [चकरडी]
तरवर एक उतंग तास दो गूढ वखाणुं,
बीस वडी तिहां साख सखर सोवनमें थाणो,
दाहोतर लघु साख साख साखें एक पलव,
दस फल लागा तेण करै दस कोइल कलरव,
सै तीन कुली वीस आगली तिण फल माहे स्यो गिणी,
पुछो पढियां पंडितां एक गयंद ऊखणी. [रावण]
आंगण वेल आकास फल, अणजाई रो दूध;
ससासींग गीधण हडी, खेलै बांझरो पूत. [नाकरी वाली, मोती]
गले जनोई पूंठि जनोई हीया ऊपर दंत,
इण हरियाली रो अर्थ कहे नैं कवो उपाडै कंत. [चरखो (?)]

सोलै सिंग बतीस खुर नव तन तेरै कान,
माघ ज दीठी बकरी सिखर चरंती पान. [ ]
माथै मेणी तारसी, निलाडी दोइ दंत,
इण गूढारो अर्थ कहिनै कवो उपाडै कंत. [ ]
प्रथम अक्षर विण नरपति राजै,
मझ अक्षर विण मस्तक छाजै,
अंत अक्षर विण मूरख मीठो,
एह अचंभो अंबर दीठो. [ ]
प्रथम अक्षर विण दूरें कीजै,
मझ अक्षर विण वस्त भणीजै,
अंत अक्षर विण खाधो मारै,
सोई सेण ते ओही ज सारै. [गरज]
प्रथम अक्षर विण जगनै भावै,
मझ अक्षर विण जग डसण कहावै,
अंत अक्षर विण पंखी मेलो,
सो साजन मोकलज्यौ वहेलौ. [कागल]
प्रथम अक्षर विण हीये वास,
मझ अक्षर विण नारी उल्लास,
अंत अक्षर विण लीजै माम
पूरै अक्षर बाल[नै] काम. [रामति/रमत]
प्रथम अक्षर विण जग आधारै,
मझ अक्षर विण जग संहारै,
अंत अक्षर विण सगलै मीठो,
एह अचंभो नयणे दीठो. [ ]
प्रथम अक्षर विण पालक प्यारी,
मझ अक्षर विज पैहरि नारी,
अंत अक्षर विण सैणा दीजै,
पूरे अक्षर सैहर सुणीजै. [सैहर, सादडी]

[क्र. ३२७१, चोपा. जो.]

एक धातुप्रतिमा–लेख

– मुनि शीलचन्द्रविजयगणि
(डहेलावाळा)

संवेगी मुनि–परम्पराना मुख्य पुरुष पं. सत्यविजयजीगणिनी पाटपरम्परामां पं. श्रीरूपविजयजीगणि एक संयमवंत अने प्रभावक साधुपुरुष हता. तेओनो उपाश्रय 'रूपविजयजीना डहेलानो उपाश्रय' एवा नामे अमदावाद–दोशीवाडानी पोळमां विद्यमान छे.

वि.सं. १९०३मां राजनगरमां ज तेओना हस्ते प्रतिष्ठित श्रीशान्तिनाथ जिनप्रतिमाना परिकरनी छबी तथा ते परनो लेख अत्रे आपेल छे. धातुमय पञ्चतीर्थी–प्रतिमानुं आ परिकर छे. प्रतिमा हाल उपलब्ध नथी.

पं. श्रीरूपविजयजी महाराजना जीवन–सम्बन्धित विगतो अप्राप्य ज छे. छतां खांखांखोळा करवाने परिणामे केटलीक विगतो मळी शकी छे, ते प्रस्तुत करुं छुं.

*

आ विगतो अमने त्यारे प्राप्त थई ज्यारे वि.सं. २०६७मां विहार करतां करतां केशरीयाजी तीर्थमां जवानुं थयेलुं. त्यारे स्थानिक लोकोए कह्युं के अहिं 'पं. रूपविजयमहाराजनी छत्री छे.' त्यां दर्शन करवा जतां पगलांनी चारे बाजु उत्कीर्ण प्रशस्तिलेख तेमज त्यां रहेली तक्तीनुं लखाण वांचतां, प्रतिष्ठा तेओना शिष्य पं. श्रीअमीविजय म.ना हस्ते वि.सं. १९०५मां थई छे अने आ छत्रीनो जीर्णोद्धार पं. श्रीधर्मविजयजी म.ना हस्ते थयो छे. त्यारपछी वि.सं. २०७६मां चेन्नई जतां वच्चे हैदराबाद जवानुं थयेल. त्यांना एक संघना जिनालयमां पालीताणा शत्रुंजयनी साकरवसही टूंकथी लावेला एक आरसना आदिनाथ प्रभु मूलनायक स्वरूपे प्रतिष्ठित छे जेनी पलांठीमां प्रशस्ति वांचतां ख्याल आवेल के आ प्रभुप्रतिमा पण पं. श्री रूपविजय महाराजना वरद हस्ते प्रतिष्ठित थयेली छे, जेनो उल्लेख ते जिनालयनी प्रतिष्ठा प्रशस्तिनी तक्तीमां पण करवामां आव्यो छे.

आ महापुरुष द्वारा अनेक कृतिओनी रचना थई छे, जेमांनी केटलीक तो एकदम प्रख्यात छे : ४५ आगमनी पूजा, मौन एकादशीनां देववंदन वगेरे.

आ सिवाय बीजी अनेक रचनाओ अप्रकाशित छे. ते रचनाओने शोधवानुं-मेलववानुं कार्य छेल्ला थोडा समयथी हाथ धर्युं छे. अनेक कृतिओ मली छे अने मली रही छे, जेने हवे पछी यथाशीघ्र प्रकाशित करवानी भावना छे.

पञ्चतीर्थी-परिकर परनो लेख

संवत् १९०३ना वर्षे माहमासे कृष्णपक्षे पंचमी शुक्रवासरे राधनपुर वास्तव्य श्रीमाली ज्ञातिय वृद्ध शाखायां पारेख ठाकरसी तत्पुत्र झवेरचंद तत्पुत्र धारसी तत्भार्या बाई मूली तत्पुत्र उग्रचंद स्वश्रेयार्थं शांतिनाथ पंचतिर्थी कारापितं तपागच्छे पं. रूपविजयगणिभिः प्रतिष्ठितं च राजनगरे मध्ये संवेगी ॥

(जुओ आवरण चित्र)

—x—

विहंगावलोकन

– उपा. भुवनचन्द्र

'अनुसन्धान'-८८ना सम्पादकीयमां संशोधनक्षेत्र साथे संकळायेल एक महत्त्वना मुद्दानी-एक अनिवार्य जवाबदारीनी-चर्चा सम्पादकश्रीए करी छे. विद्वान संशोधक कोइक प्राचीन कृतिनुं संशोधन-सम्पादन करे अने मुद्रण माटे मोकले त्यारे ए कृति आ विषयथी बिलकुल अपरिचित हाथोमां जई पडे छे. कंपोजिटरो के ओपरेटरो पोतानां कार्यमां गमे तेटला कुशळ होय पण संस्कृत-प्राकृत-अपभ्रंश अथवा मारुगूर्जर जेवी जूनी भाषाना जाणकार तो न ज होय. अगाउ हस्तप्रतोमां लहियाओना हाथे भूलो थती, तो आजे प्रेसमां भूलो प्रवेशी जाय छे. आथी, छपाता ग्रन्थनां प्रूफ विद्वाने जाते तपासवानुं कष्ट लेवुं जोईए. पाछळथी प्रेसदोष–"मुद्रा राक्षस" ऊपर भूलनी जवाबदारी ढोळवानो सहेलो रस्तो अपनाववा जेवो नथी. लांबा लांबा शुद्धिपत्रको ग्रन्थनी शोभा नथी, किन्तु सम्पादकनी प्रूफवाचननी निष्ठानी खामीनी निशानी गणाय.

हस्तलेखनना युगमां लिखित प्रतने कर्ता पोते अथवा अन्य विद्वान वांचीने जरूरी सुधारा नोंधता. आवी संशोधित पाण्डुलिपिनुं मूल्य वधी जतुं होय छे. आजे हस्तलेखननी कामगीरी थाय छे एमां पण पुनर्वाचननी जरूर रहेशे; लेखन माटे जे पुस्तक अपाय तेने पण शुद्ध करी लेवानुं रहे.

आ अङ्कनी प्रथम रचना जरा जुदी जातनी छे : शतरंजनी रमतनुं, संस्कृतमां लखायेलुं शास्त्र छे. आ परदेशी रमतने संस्कृतमां रजू करवा जतां कर्ताए केटलाक उर्दू-अरेबिक शब्दोने संस्कृत रूप आप्युं छे, जे अनिवार्य हतुं. 'माहति' = मात होई शके. कूकरीने 'गांडी' करवामां आवती होय छे. 'गांडी' माटे कर्ताए संस्कृत शब्द 'उन्मत्त' वापर्यो छे. पण दरेक अरेबिक शब्द माटे संस्कृत पर्याय शोधी शक्या नथी. शतरंजना नियमो अने चालोने संस्कृतमां श्लोकबद्ध करवानुं साहस बतावनार कर्तानी प्रतिभा खरेखर दाद मागे छे.

'एकादिशत पर्यन्त शब्द साधनिका' संस्कृत व्याकरणनी उत्तम कृति छे. संख्यावाचक शब्दोनी व्युत्पत्ति अने विभक्तिओनां रूपो व्याकरणनां सूत्रो

द्वारा सिद्ध करीने दर्शाव्यां छे. कृतिमांनां सूत्रो क्या व्याकरणनां छे ते कृतिमां लख्युं नथी अने सम्पादकजीए पण तेनो उल्लेख नथी कर्यो.

'त्रण अप्रगट संघयात्रा स्तवनो'मांनी रचनाओ ऐतिहासिक अने रसिक माहितीथी पूर्ण छे. सम्पादकोए दरेक रचनामांथी रसप्रद विगतो तारवी आपी छे. गुजरातना धार्मिक-सामाजिक जीवननी विगतो आमांथी मळे छे.

गिरनार संघना स्तवननी क. १४मां "बोलावुं आपुं" छे त्यां 'वोलावुं आपुं छुं' एम वांचवुं जोईए, वोलावुं एटले वळावीया. रखोपुं करवा माटे वळावीया रहेता. सम्पादकनी नोंधमां आ कृतिनी रचना संघ नीकळ्याना दिवसे थई हती एवुं लख्युं छे ए सरतचूक जणाय छे. अन्तभागे माळ पहेर्यानी तिथि आपी छे अने कृतिनी रचना पण ते ज दिवसे थई छे. संघना प्रयाणनो मार्ग ध्यानार्ह छे. वडोदराथी मातर, लींबडी, ध्रांगध्रा, मोरबी थईने संघ गयो छे. ध्रांगध्रा वचमां आव्युं एम कवि लखे छे परन्तु गिरनार जवा माटे ध्रांगध्रा के मोरबी जवानी जरूर न होय, लिंबडीथी गिरनार तरफ नीकळी जवाय. कृतिमां ह्रस्व-दीर्घना लेखनमां अव्यवस्था छे, ते लिपिकारने हाथे थई होय ने कदाच कविए पोते ज एवी जोडणी राखी होय एम बने. कृति बोलचालनी भाषामां रचाई छे अने ए समये जोडणीमां अव्यवस्था चालती हती. आवी कृतिओमां गिरी(रि) जेवा सुधारा सूचववाने बदले, कृतिनी जोडणी ह.प्र. मुजब यथावत् राखी छे एवी नोंध सम्पादक करी शके. आ गाळामां लेखनमां दीर्घ 'ई'नी प्रचुरता जोवा मळशे. लेखनमां कलमनी गतिमां दीर्घ ईनुं चिह्न अल्पप्रयत्नने कारणे अनुकूल होवाथी कलममांथी वी, री जेवा अक्षरो जाणे सहेजे टपकता. क. १९मां दी(दि)न आवो नमूनो छे. गोडी पार्श्वनाथना स्तवनमां पण आवुं घणी जग्याए थयुं छे. ढा. १, क. १८ मागसीर, क. २१ मुनीसुव्रत, ढा.२, कडी ३ दरीसण, दीलडां वगेरे. ढा.३, क. ११मां 'खूशालविजय'मां दीर्घ ऊ आ ज कारणे आव्यो छे.

सूईगामथी पाछां फरतां संघ वरखडी आव्यो. आ वरखडी राधनपुर पासे छे. मसाली गाम पण बाजूमां छे. (मसालिया कुटुम्बो राधनपुरमां हतां.) भरडूया गाम वागड (कच्छ)मां रणनी नजीक आवेलुं छे, सूईगामथी रण ओळंगीने जवुं पडे. संघ ए रीते गयो होय तो स्तवनमां एनो उल्लेख थयो

होत. जोके वरखडी राधनपुरनी पासे छे – परुं ज गणाय, पण संघ राधनपुर गयानो उल्लेख नथी. ढा. ५, क. ३मां 'रु(रू)पणो' छे त्यां 'रूप तणो' पाठ होवानी शक्यता छे. स्त. ३, ढा. १, क. १२मां 'पांभरी' छे, ते पामरी - पीळुं वस्त्र छे.

सम्यक्त्वस्तोत्र बाला. शुद्ध रूपे सम्पादित थयुं छे. बाला.नुं गद्य नोंधपात्र छे. कर्ता ओछओ, थोडओ एम अन्त्य ओ छूटो लखे छे, तेथी आनो रचनासमय १६मी शताब्दीथी नीचेनो तो न ज गणाय.

'जैन दर्शननो अछडतो परिचय' लेख जैनदर्शनथी परिचित-अपरिचित सहुने जैन दर्शननो परिचय करावे छे. दरेक बिन्दुने बौद्धिक रीते (तार्किक रीते नहि) स्पष्ट करवानो प्रयास अहीं थयो छे.

आगमप्रभाकर परमपूज्य श्रीपुण्यविजयजी म.ना जीवननी झांखी करावतो लेख प्रत्यक्षदर्शी द्वारा लखायो होवाथी हृदयस्पर्शी बन्यो छे. लेखकश्री महाराजसाहेबना सम्पर्कमां आवेला छे-नजीकथी जाण्या छे अने पिछाण्या छे, आथी एमना व्यक्तित्वनी झीणी झीणी रेखाओने आबाद ऊपसावी शक्या छे. आ लखनारनी दीक्षाविधि, म.सा.ना हस्ते थई हती. बचपणमां स्मृतिमां अंकित छबी आ लेख थकी जाणे जीवंत बनी !

सम्पादकश्रीने विनंति के अनु.मां आवा विद्यापुरुषोना जीवन-आलेख आपता रहो.

—x—

SHRI PARVAT (SHRISHAIL) JAIN TIRTH

C.A. Rushabh R. Bhandari

The study of History of Jainism in the South India occupies an important place in the study of history of South India as a whole. The existence of Jainism in Andhra Pradesh as a prominent religion during the Mauryan period is confirmed from the most important commentaries on Ched Sutras[1] of Jaina canonical literature and archaeological excavations in the Krishna valley[2]. With this background I have traced references of an important Jain holy place in Andhra Pradesh - Shri Parvat (modern Shrishailam) located in the Kurnool district. The literary references range from 1st century A.D till 14th century A.D. till 14th century A.D., covering a period of 1400 years. These are presented here to showcase the significance this place had for Jains since an early period. At the end I have discussed an inscription of 17th century A.D relating to the followers of Swetambar Sect of Jainism , found in the Mallikarjuna Temple at Shrishailam.

1. Paum Chariyam

Paum Chariyam (Padma Charitra) is the earliest literary work on life Padma (Rama) written by Acharya Vimalsuri of Nailavamsha.

In the story of Anjanasundari it is said that when Hanuman was a child, he fell down on the hill from a Vimana faring in the sky and the peak of the hill was crushed to pieces, so he was named Shrishaila. Thus the reference is to the Shrishaila or Shri Parvat because it is further said of Siripura was situated on Shri Parvat (85.26) which was under the rule of Hanumat.[3] Also there is reference in the text that people of Shri Parvat hills became allies of Rama (Padma) and fought with Ravana. This is one of the earliest literary work in Jain literature referring to Shri Parvat.

2. Vasudevahindi

This prakrit was written by Acharya Sanghadasgani in 4th-

5th Cent.A.D. In this work we have two different references to Shri Parvat both associated with Jain monks. A poor woman named Shridatta once visited Shri Parvat and paid homage to Sarwayash Muni who in turn gave her sermons on Dharma. Inspired by her sermons she performed the Dharmchakrawal Tapashya which involved fasting for 40 days. In another instance, two sisters named Kanakashri and Dhanashri visited Shri Parvat where they saw Muni Nandangiri and paid their respects to him. Muni gave them sermons on true form of Dhrama and both the sisters accepted to follow the same[4].

In this way we see that Shri Parvat was a place regularly visited by Monks for practicing their authorities and general public visted to pay their repects to them.

3. Varang Charit

Varang Charit has the honour of being the first Sanskrit Mahakavya of Jain literature. It was written by Acharya Jatasimhanandi of Kranur Gana and Yapaniya sanghas in the 7th century A.D.

In this work, we are told that on the Sri Parvat , Sri Muni performed rigorous penance for 1000 years.

श्रीपर्वते श्रीः किल संचकार तपो महद् वर्षसहस्रमुग्रम् ।

(Varang Charit 25.57)

4. Chauppannamahapurisachariam

This prakrit work on 54 illustrious personalities of Jainism was composed by Acharya Silanka of Nivrutikula of Swetambar sangha in 9th century A.D.[6] in the biography of Sagar Chakravarti, we have reference of Shri Parvata . The sons of Sagar during their excursion meet a Jain monk on Shri Parvata, who on their request narrate the reason of his renunciation which includes narrations of his past births too[7]. At the end of the narrative we are told that Muni Rushabhasen had attained Kevalajnana and Sidhagati[8] on Shri Parvat and because of this, Shri Parvat is also

known as Siddhawada. Through this narrative Shri Parvat is portrayed as a Sidhakshetra where Shramana Monks practiced their religious austerities.

5. Harivansha Puran

It is authored by Acharya Jinasena of Punnata sangha in 8th Cent. A.D. in Sanskrit language. At the end of his work , the author has compared his Harivansa Puran with Shri Parvat[9].

व्युत्सृष्टापरसंघसंततिबृहत्पुन्नाटसंघान्वये
व्याप्तः श्रीजिनसेनसूरिकविना लाभाय बोधेः पुनः ।
दृष्टोऽयं हरिवंशपुण्यचरितश्रीपर्वतः सर्वतो
व्याप्ताशामुखमण्डलः स्थिरतरः स्थेयात् पृथिव्यां चिरम् ॥५४॥

This comparison is very significant. This indicates the importance of Shri Parvat as a holy place for Jains during Acharya Jinasen's period.

6. Trisastisalaka Purushacharitra

This work in Sanskrit language on the lives of 63 illustrious personalities of Jaina faith was written by Kalikal Sarvajna Acharya Hemachandrasuri of Shwetambar Sangh in 12th cent. A.D. In order to glorify the holy Shri Parvata it is said that this mountain resembled the mountain of gods (Meru) in beauty[10]. In this narrative Sridatta meets a great muni named Satyayasas on Shri Parvat.

7. Akhyanakamanikosa

This work in prakrit language is devoted to Dharmakathas and was composed by Acharya Nemichandrasuri (1073-1083 A.D) and commentary was written by Acharya Amradevsuri in 1134 A.D. In the story of Naravikram we have reference to Shri Parvat. Ghorashiva, a Mahavratika says that he came from Shri Parvata and was going to Jalandhara in Uttarapatha[11].

8. Kaharayanakosa (Katharatnakosh)

Written in 1101 A.D by Acharya Devabhadrasuri, this work has twice mention of Shri Parvat. Firstly in

Dhansadhukathanak (story no. 8) where in it is said that a Jogi named Diwakara got the knowledge of 'Khanyavidya' from a monk who had attained the deep state of meditation. Second in the Bharatnrup Kathanak it is said that a Gutikasidha purusha named Anantketu used to reside on Shri Parvat[12].

9. Kalpapradeep (Vividhatirth Kalp)

Written in parts by the celebrated Acharya Jinaprabhasuri of Khartargacha order of Shwetambar Sangh in 14th century A.D. This work is devoted to description of various Jain tirths spread across India most of which the author had personally visited during his life time. Apart from detailed description and history of major Jain centres, Acharyashri has recorded the names of 84 Jain maha tirths of his time through a separate list. This list records the existence of Shri Parvata as a Jain centre with Lord Mallinath as the presiding deity and the temple of guardian deity Ghantakarna[13].

10. Dharmamrita

This important Kannada champu work was written in 1112 A.D by Nayasena. In this text we are told how the mountain got its name in place of its existing name of Rishinivasa by way of a narrative.

Shri Parvat or Shrishaila which was originally known as Rishinivasa is said to have acquired the name on account of its association with Sridhara. When Sridhara was engaged in austerities under an Arjuna tree on the mountain, the heavenly angels paid homage to him with an offering of Mallika flowers; hence the place also came to be known as Mallikarjuna. In like manner Sridhara attained Siddhi under a Vata or banyan tree in another place and for this reason it was styled Siddhavata. The descendents of Sridhara were nicknamed Mundiya-Vamsa. Testimony of more than one epigraph is at our disposal to show that a part of the present day Nellore district was known as Munda Rashtra or Munda Nadu in the early centuries of the Christian era. Shri Parvata and Mallikarjuna represent the well known Srisaila Mountain in the Kurnool District.[14]

11. Other Literary references

In Mahavirchariam by Acharya Gunabhadrasuri we have similar reference to Shri Parvat as contained Akhyanakamani Kosh. In Vajjalaggam by Muni Jayavallabh reference to medicinal plants of Shri Parvat is made.[15]

12. Shrishailam Epigraph

Now we reach the end of our literary references and notice with sorrow the tragic doom that extinguished the last remnants of the Jaina faith in the Andhra region. While recounting the pious achievements of a Virashaiva chief named Linga, son of Saanta, an inscription from Srisaila, dated A. D. 1512, tells us that he took pride in cutting off the heads of Shwetambar Jainas. No further details are forthcoming regarding the activities of this Linga against his opponents of the Jaina creed. Though this piece of information is meagre, it is full of significance when read in the context of the entire history of Jainism in the Andhra country. Firstly, it proves that Jainism had lingered on in the Andhra country, particularly in the region of Srisaila, in spite of overwhelming odds, till the period of the 16th century. Secondly, it testifies to the prevalence of the Shwetambar sect in that land. Thirdly, it shows the ruthless persecution by the followers of hostile creeds was prominent among the causes that led to the extinction of the Jaina faith in the Andhra Desha.[16]

In Velugotivarivamsavali , we have some further information about this Veerashaiva Chief Saanta Linga. Gani Timma was a subordinate of Krishnadevarayya of Vijayanagar Dynasty and an elaborate account of his deeds is given in this Vamsavali. The earliest of Timma's deeds is his victory over Saanta Linga, as it had taken place during the days of Krishnadevarayya (1509A.D. -1529 A.D). Saanta was the pontiff of his separate matha in Shrishailam and exercised some temporal power as the manager of some of the properties of Mallikarjuna temple at Shrishailam. The exact cause of Gani Timma's conflict with this pontiff are not known but his aggressive methods which he adopted in propagating

his creed might have excited the anger of the enlightened emperor[17]. Especially the violence against the Jains on Shrishailam might have led Krishnadevarayya to initiate action against this pontiff and Timma who was commissioned to curb his activities loyally executed the royal command.

13. Analysis and conclusion

The above reference in the Jain literature indicates that Shri Parvat was acknowledged as a Siddha Kshetra (these are places where monks or nuns who have attained Kevalajnana attain liberation, these are treated as holy pilgrimage centres. Shatrunjay, Girnar, Sammet Shikar, Abu, Mangitungi etc are some of the famous Siddha Kshetras in Jainism.) This fact is clear with specific reference being made in Varang Charitra, Chauppannamaha-purisachariam, Trisastitisalaka Purusacharitra and Dharmamrita. Further Ach. Jinaprabhasuri also confirms existence of Jain temples on this hill. The references of Acharya Devabhadrasuri indicates that this place was famous for attaining various kinds of Vidya Siddhis by different types of Sadhakas. I need not comment much on the epigraph of Shrishailam after which no reference is found in Jain literature. Currently no Jain temple exists on the hill. Today this hill is famous for the Mallikarjunaswamy Hindu temple which is counted amongst the twelve Jyotrilngas.

To conclude I strongly express the need for systematic archaeological excavations in this place which can through further light on the connection of Jainism and Srisailam in particular and Andhra Pradesh in general. Another important unanswered question remains before us regarding the people who were persecuted on this hill in 16th cent. Currently we don't have any proper source to trace the same but I would bring attention towards a possible source for studying the religious violence against the Jain community which is Kaifiyats compiled by Colin Mackenzie in 18th -19th cent. together with non - Jain literature to arrive at better conclusions. In the Warangal Kaifiyats Mackenzie has recorded various instances of violence against the Jains based on the oral

tradition of masses.

References:

1. In the Bruhat Kalpa Bhasya it is said that Samprati initiated activites to spread the Jain faith in the region of Andhra and Dravida Desha (Gatha 3289). Reference of Jainism in Mauryan period is also contained in the commentaries of Nishith, Bruhatkalp, Vyavahara and Panchakalp.
2. Archaeological excavation at Vaddamanu village has revealed the existence of Jain stupa of Mauryan period. One of the label inscription in Brahmi script reads Samprati Vihara. For further studies see Vaddamanu Excavations, Dr. TVG Shastri, Hyderabad, 1992.
3. K.R. Chandra , A critical Study of Paumachariyam, Vaishali, 1970, P.516-517

   Note: Also see following reference to Shri Parvata in Paumachariyam.

   संचुण्णिओ य सेलो, सहसा बालेण पडियमत्तेणं ।
   तेणं चिय सिरिसेलो, नामं से कयं कुमारस्स ॥१८.४९॥
   जे तस्स गया पणइं, सुहडी कइदीववासिणो बहवे ।
   माहिन्द्र मलय तीरा, सिरिपव्वय हणुरुहाईया ॥५५.१६॥
   सिरिपव्वयसिहरत्थं च सिरिपुरं मारुइस्स उद्दिट्ठं ।
   पडिसूरस्स हणुरुहं, दिन्नं नीलस्स रिक्खपुरं ॥८५.२६॥
4. Vasudevhindi Of Acharya Sanghadasagani, Hindi Tr. Dr. Ranjan Suridev, Beawar, 1986, P. 1018 and 1023
5. For further studies on Acharya Jatasimhanandi and his Varang Charit see article of Rushabh R Bhandari in Anusandhan-82, Ahmedabad, 2020 p.57-65
6. For introduction of this text, refer Introduction to Silankla's Chauppannamahapurisachariam by Klaus Bruhn in the text edited by Pt. A.M.Bhojak, Prakrit Text Society, Ahmedabad, 2006, P.1-31.
7. Chauppannamahapurisachariam, hindi translation by Sadhvi Surekhashriji, Jaipur, 2020 P.112-129
8. Siddhigati is the condition of liberation. It is that in which there are no births, old age, death or fear, no miseries arising from undesirable accompaniments and from deprivation of desirable

objects, no animate feelings and diseases etc.
9. Harivanshpurana of Acharya Jinasena , edited & translated by Dr Pannalal Jain, New Delhi, 66.54, p.811
10. Trisastitisalaka Purusacharitra of Acharya Hemachandrasuri Vol III, Eng.TR. Helen M Johnson, Baroda, 1949, P 248-249
11. Akhyanakamanikosa of Acharya Nemichandrasuri, commentary by ach. Amradevsuri edited – Munishri Punyavijayji Maharaj, intr. Dr. U.P.Shah P. 9, Ahmedabad 2005
12. Kaharayanakosa of Acharya Devabhadrasuri edited. Munishri Punyavijayji Mahraj, 1944, Bhavnagar.
13. Kalpapradeep (Vividhatirth Kalp) of Acharya Jinprabhsuri ed. Muni Jinvijay, Hindi Tr. Ranjan Suridev,P.320-321 Vaishali, 2012
4. P.B Desai, Jainism in South India & Some Epigraphs, p.3-6, Solapur (reprint) 2001
15. Dr. J.C.Jain , Prakrit Sahitya ka Itihas , P. 469 & 492, Varanasi, 2014
16. P.B Desai, Jainism in South India & Some Epigraphs, p.23-24, Solapur (reprint) 2001
Also see Annual Report of the Govt. Epigraphist , Madras, 1914-15, P.58
17. Ed with intro. N Venkata Ramanayya, Velugotivarivamsavali, P.46, Madras, 1939

Bibliography:

1. Acharya Vimalsuri's Paumacariyam I & II, with hindi tr., ed. Munishri Punyavijayji, Tr. Prof. Shantilal M Vora, Prakrit Text Society, Ahmedabad, 2005
2. K.R Chandra, A Critical Study of Paumacariyam, Research Institute of Prakrit, Jainology & Ahimsa, Vaishali, 1970
3. Acharya Jatasimhanandi's Varang Charit with Hindi Tr., ed. A.N.Upadhye tr. Kushalchand Gorawala, Bhartvarshiya Anekant Vidwat Parishad, 1996
4. Silankla's Chauppannamahapurisachariam, ed. Pt. A.M.Bhojak, Prakrit Text Society, Ahmedabad, 2006
5. Silankla's Chauppannamahapurisachariam, Hindi Tr. Sadhvi Surekhashriji, Prakrit Bharti Academy, Jaipur, 2020
6. Acharya Jinasen's Harivamspuran, ed. Dr Pannalal Jain, Bharatiya Jnanpith, New Delhi, 2003

7. Trisastitisalaka Purusacharitra of Acharya Hemachandrasuri Vol III, Eng.TR. Helen M Johnson, Oriental Institute, Baroda, 1949
8. Akhyanakamanikosa of Acharya Nemichandrasuri, commentary by Acharya Amradevsuri edited - Munishri Punyavijayji Maharaj,, Prakrit Text Society, Ahmedabad, 2005
9. Kaharayanakosa of Acharya Devabhadrasuri edited. Munishri Punyavijayji Mahraj, Atmanand Jain Sabha, Bhavnagar, 1944
10. Kalpapradeep (Vividhatirth Kalp) of Acharya Jinprabhsuri edited Muni Jinvijay, Hindi Tr. Ranjan Suridev, Research Institute of Prakrit, Jainology & Ahimsa, Vaishali, 2012
11. Jainism in South India & Some Epigraphs, Dr P.B.Desai, Jain Sanskruti Sanrakshak Sangh, Solapur, 2001
12. Prakrit Sahitya ka Itihas, Dr J.C.Jain, Chaukhamba Vidyabhawan, Varanasi, reprint, 2014
13. Vaddamanu Excavations, Dr. TVG Shastri, Birla Archaeological and Cultural Research Institute, Hyderabad, 1992
14. Vasudevahindi of Sanghadasgani, Tr. Dr.Ranjan Suridev, Pandit Rampratap Shastri Charitable Trust, Beawar, 1986
15. Velugotivarivamsavali, Ed. With Intro. N. Venkata Ramanayya, University of Madras, 1939

– C. A. Rushabh R. Bhandari
Ranibennur, Karnataka
Ph. 9741958339